राजेन्द्र-स्मृति ग्रन्थ-माला—८

सर्वोदय यात्रा

विनोबा

★

सर्वापदामन्तकरं निरन्तं सर्वोदय-तीर्थमिदं तवैव।

—आचार्य समन्तभद्र

भारत जैन महामण्डल, वर्धा

१९५१

प्रकाशक :
रिषभदास रांका
कार्याध्यक्ष,
भारत जैन महामण्डल, वर्धा

पहला संस्करण ५५००

मूल्य : सवा रुपया

मुद्रक :
जमनालाल जैन
व्यवस्थापक
श्रीकृष्ण प्रि० वर्क्स, वर्धा

प्रकाशक की ओर से

तीसरे सर्वोदय सम्मेलन शिवरामपल्ली (हैदराबाद) में सम्मिलित होने के लिए जाते हुए पू० विनोबाजी ने रास्ते के मुकामों पर जो प्रार्थना-प्रवचन दिए हैं वे सब क्रमशः इस संकलन में दिए गए हैं।

सर्वोदय का आदर्श बहुत प्राचीन है। दो हजार वर्ष पूर्व जैनाचार्य समन्तभद्र ने 'सर्वोदय-तीर्थ' की भावना व्यक्त की थी। उन्होंने कहा था, 'सर्वोदय-तीर्थ सब की समस्त आपदाओं को दूर करनेवाला है।' आज के युग में बापू ने इसे व्यवहार में लाया और विनोबा तो अब उस के यात्री ही बन गए हैं।

महामण्डल की ओर से इन प्रवचनों को प्रकाशित करते हुए हमें विशेष आनन्द हो रहा है। हम पू० विनोबाजी और ग्राम सेवा-मण्डल, नालवाडी के विशेष कृतज्ञ हैं, जिनकी कृपासे हमें यह सद्भाग्य प्राप्त हुआ। और जिन मित्रों की मेहनत और तत्परतासे यह संकलन शीघ्र निकाला जा सका, उन्हें भी नहीं भुलाया जा सकता। उनके हम आभारी हैं।

हमें आशा है यह पुस्तक नैतिक विकास, चरित्र निर्माण तथा देश में सेवा भावना और समभाव बढ़ाने में मददगार साबित होगी।

राजेंद्र-स्मृति ग्रंथमाला का यह आठवा पुष्प है।

वर्धा, ६-६-५१

रिषभदास रांका
कार्याध्यक्ष, भारत जैन महामण्डल

अनुक्रमणिका

प्रास्ताविक

शिवरामपल्ली (हैदराबाद द.) मे ता. ८ से ११ अप्रैल '५१ को होने वाले सर्वोदय-सम्मेलन में भाग लेने के लिए विनोबाजी परंधाम (पवनार) से ८ मार्च को सुबह पैदल निकले हैं। सारे देश में इससे आनंद की लहर फैल गयी है और साथ ही प्रेरणा की भी, क्योंकि जिस चीज की आज देश को जरूरत है, और जिसकी साधना के लिये कुछ काल के लिये ही क्यो न हो, परंधाम पर ही स्थिर रहने का तय करके विनोबाजी साम्ययोग के प्रयोग मे जुटे हुये थे, वह साधना है—अर्थ की अनर्थकारी, परावलंबी और सुखाभासी बेड़ियों मे से आम जनता को छुड़ा कर श्रम की श्रेयस्कारी, स्वावलंबी, सात्विक और सुखदायी जीवन-क्रम की प्रतिष्ठापना। उसको इस यात्रा मे खूब चालना मिली है, मिल रही है, मिलने वाली है।

देश की पुकार प्रतिध्वनित हुई

देश के अन्य लोगो के समान ही विनोबाजी के निकट परिचितों के लिए भी यह यात्रा-निर्णय आनंददायी और अनपेक्षित है। खुद विनोबाजी के लिये भी यह अनपेक्षित है और इसीलिए उन्होने इस निर्णय का वर्णन 'ईश्वर-प्रेरित' ऐसे शब्दो मे किया है। ता० ६ मार्च को सर्व-सेवा-संघ की बैठक थी। आशादेवी और आर्यनायकम्‌जी की विनती से सातवें नयी-तालीम-संमेलन के निमित्त से ता० २७ फरवरी से ७ मार्च तक सेवाग्राम में रहना विनोबाजी ने तय किया और इसीलिए-सर्व-सेवा-संघ की ता० ६ मार्च की बैठक भी वहीं रखी गयी। बैठक के सामने शिवरामपल्ली-संमेलन का कार्यक्रम और विषय-सूची वगैरह तय करने का मुख्य कार्य था।

इसी सिलसिले में सर्वोदय-समाज और सर्व-सेवा-सघ में परस्पर सबध क्या हैं, क्या हों, आदि चर्चा भी छिड़ी, क्योंकि इस बारे मे बहुतेरो के खयाल साफ नहीं हैं–यद्यपि अगुल संमेलन के बाद 'सर्वोदय' मासिक में विनोबाजी की लिखी हुई 'सर्वोदय-समाज और सर्व-सेवा-सघ' नाम की एक टिप्पणी को देखते हुए कोई गलतफहमी, दुविधा या असमंजसता का कारण नही रहना चाहिए। चर्चा के दौरान में एक भाई ने विनोबाजी से पूछा कि आप संमेलन में आने वाले हैं या नहीं? विनोबाजी ने कहा, "आने का विचार नहीं है।" निकट परिचितों के लिए यह उत्तर अनपेक्षित नहीं था, क्योंकि इस बारे में पहले भी बाते हो चुकी थीं। लेकिन प्रश्नकर्त्ता भाई के लिऐ यह उत्तर शायद अनपेक्षित और आज के कुल हालात को देखते हुए अप्रस्तुत भी था। उन्होंने बड़े दर्द के साथ, लेकिन उतनी ही दृढ़ता से और 'एक घाव-दो टूक' शब्दो में कहा कि "सर्वोदय-समाज और संमेलन आपकी ही प्रेरणा का फल है, अभी वह बाल्यावस्था में है। दूर-दूर से सेवक सत्संग के लिए आते हैं एव खास नेतृत्व न मिलने से निराश-से लौटते है। ऐसी हालत मे आप न आवें तो कैसे चलेगा? इसके बजाय तो संमेलन बद कर देना बेहतर होगा।" विनोबाजी के न आने में क्या जिम्मेवारियाँ और दिक्कतें हैं, उनका भी फिर थोड़ा-सा जिक्र हुआ। फिर भी विनोबाजी जानते थे कि उस भाई की कही हुई बात ही हम सबके भी मन में है। क्षण-भर के लिए विनोबाजी स्तब्ध रहे। न मालूम उन्होंने उस क्षण में क्या-क्या विचार किया! किसे मालूम कि जिस "भूत मात्र मे हरि भावना" का इन दिनों वे चिंतन, उच्चारण और आचरण तीव्रता से कर रहे हैं, करने को कह रहे हैं, उसी भावना से उन्होंने हम सबकी इच्छा की ओर देखा हो। नहीं आने की बात जितने शब्दो मे और जिस तटस्थता से कही थी,

उतने ही शब्दों में और उतनी ही तटस्थता से उन्होंने कहा, "अच्छा, मैं आता हूँ।" जवाब का उच्चारण करने के पहले उन्होंने पूछ लिया कि समेलन-स्थान यहाँसे कितनी दूर है। जवाब मिला—तीन सौ मील समझ लीजिये। विनोबाजी के आने की बात सुन कर सबको आनंद हुआ, लेकिन शायद ही किसी के ख्याल में आया हो कि विनोबाजी समेलन में पैदल आवेंगे।

अपवाद भी नहीं

बैठक के बाद तुरंत ही आश्रम की प्रार्थना थी। प्रार्थना के अंत मे विनोबाजी ने समेलन मे जाने की बात का जिक्र किया और कहा कि "कल सुबह यहाँ से परधाम जाने का पहले से तय ही है, वहासे परसों याने ८ तारीख को समेलन के लिए पैदल निकलूंगा। वाहन का उपयोग न करने का मैने कोई व्रत नहीं लिया है और अर्थोच्छेद की मेरी कल्पना में, जो कि आज सुबह की प्रार्थना मे मैंने कही है, रेल्वे आदि का परित्याग अनिवार्य है ऐसी भी बात नहीं है, फिर भी मैंने पैदल जाने का ही तय किया है। क्योंकि जो विचार पूरा विकसित नहीं हुआ है, जिसका सागोपाग दर्शन हमे अबतक नहीं हुआ है, उस अविकसित दशा में अपवाद करने की मेरी मनोवृत्ति नहीं है। इसलिए पैदल के बजाय वाहन से जाने के लिए मुझे कायल करने में मित्र लोग अपनी बुद्धि-शक्ति न चला कर, पैदल यात्रा कैसे सुखकर-शुभकर होगी इसका खयाल करें।"

सेवाग्राम-आश्रम का श्रम-जीवन-संकल्प

प्रार्थना के बाद निकटवर्ती लोगों का यही काम रहा कि नक्शे देख कर किस रास्ते से, किन मुकामो से जाना आदि विनोबाजी से तय करे। दूसरे लोग मिलने और एक तरह से विदा लेने-देने के लिए आते-जाते थे। ता० ७ की सुबह की प्रार्थना मे महादेवी ताई ने "जेथे जातो

तेथें तूं माझा सांगाती।'–'जहाँ जाता हूँ वहाँ तू मेरा साथी है।' यह तुकाराम का अभंग गा कर मानों प्रस्थान का आरभ कर दिया। प्रार्थना के अत में बोलते हुए विनोबाजी ने एक तरह से आश्रमवासियों से विदा ली। कहा कि 'आश्रमवासी और अन्य संबंधितों की परसों की बैठक में यह तय हुआ है कि १ जनवरी, १९५२ से आश्रम पैसे में से मुक्त हो जायगा। आश्रमवासियों द्वारा खेती आदि में किये हुए परिश्रम और लोगों से मिलने वाले श्रमदानपर ही आश्रम चलेगा। यह एक शुभ निर्णय है और यही शोभा देता है, क्योंकि बापू के बाद आश्रम यहाँ चलता है, तो वह आखिरी आदर्श के अनुरूप चलाने की कोशिश हो, वरना वह बंद रहे, यह अच्छा है। आश्रम यहाँ न चलता हो तो भी लोगों को इस स्थान से स्फूर्ति तो मिलती ही रहेगी। पैसे के दान पर आश्रम चला कर भी एक तरह की सेवा होगी। लेकिन वैसे देखें तो कौन सेवा नहीं कर रहा है? एक किसान भी सेवा करता है, लेकिन आज जरूरत है लोगो के दिलो में क्राति करने की। वह बिना परिश्रम के, बिना प्रचलित अर्थ-व्यवस्था को तोडे नहीं होगी।"

सुनि रे मैंने निर्बल के बल राम'

निकलने के नियत समय के कुछ पहले तालीमी संघ का सारा कुटुंब सुबह की प्रार्थना के लिए विनोबा के निवासस्थान के पास आ पहुंचा। विनोबा के साथ सबने खड़े खड़े प्रार्थना की, 'सुने री मैंने निर्बल के बल राम' यह भजन गाया गया। आखिर मे विनोबाजी ने दो शब्द कहे : "आप नयी तालीम का महान् काम कर रहे हैं। आशादेवी और आर्यनायकम्‌जी ने अपने को इसमें खपा दिया है। उन दोनों का प्रेम मुझे हमेशा मिलता रहा है। आपने यहाँ आ कर प्रार्थना कर के मेरी पैदल यात्रा के लिए खूब बल दिया है। अभी तक के सब संतों का अनु-

भव है–'निर्बल के बल राम।' मेरे जीवन का भी यही अनुभव है। हा, मै लिखने बैठू तो "सुने री" के बदले लिखूंगा कि 'देखि रे मैंने निर्बल के बल राम।"

आत्मानुभूति का साक्षात्कार

सेवाग्राम से सीधे पवनार जायेंगे ऐसा अंदाज था, लेकिन विनोबा जी ने कहा, मै बजाज-वाडी में किशोरलाल भाई से मिल कर वहा से पवनार आऊंगा। किसीने हिसाब किया, कुल ९ मील चलना पड़ेगा। विनोबाजी ने कहा, हररोज १०-१२ मील चलना ही है न ? आज ९ मील मे शुरू कर दे। फिर वे महिलाश्रम मे लड़कियों से विदा लेते हुए बजाजवाडी पहुचे। किशोरलालभाई आदि से मिल कर गोपुरी हो कर पवनार करीब ११ बजे पहुंचे होंगे। पवनार के ग्रामवासी विशेष सख्या में शाम की प्रार्थना में हाजिर थे। वे विनोबाजी के दो शब्द सुनने को आये थे। आज भी हमेशा के मुताबिक विनोबाजी ने ही प्रार्थना चलायी। प्रार्थना मे स्वतः गाये हुए भजनो के द्वारा मानों वे विदा ले रहे थे। ज्ञानदेव, नामदेव, एकनाथ आदि के भजनों में से प्यारे भजनों के सिवा "हसता रमता प्रगट हरि देखु रे, मारु जीव्युं सफळ तंव लेखुं रे, नित्यानदनो नाथ विहारी रे, ओधा जीवनदोरी अमारी रे," ये चरण खास रूप से उन्होंने गाये। कृष्ण के मथुरा-गमन के बाद गोपी-जन को सात्वना देने के लिये उद्धव गये थे, उस प्रसंग का यह वचन है। प्रार्थना के बाद जो प्रवचन हुआ वह आगे प्रवचनों मे दिया है।

'भरत राम' से बिदाई

सुबह की प्रार्थना के बाद यथा-समय यात्रा आरंभ हुई। वैसे, सबसे तो पहले दिन ही बिदाई ले ली गयी थी, लेकिन 'भरत-राम' से बिदा लिये बिना विनोबाजी परंधाम से कैसे जा सकते थे ? और वह बिदाई पेशगी में थोड़े ही ली जा सकती है ! विनोबाजी अपने कमरे

से निकल कर ' भरत-राम-मंदिर ' में गये। 'भरत-राम-मंदिर' परधाम में प्रवेश करते ही सामने दिखाई देता है। उसका बाहरी आकार प्रचलित मंदिर का-सा नहीं है। एक सादी-सी झोपड़ी है और उसमे वनवास से आने के बाद रामचंद्रजी की भरत से जो भेंट हुई, उस प्रसंग को अंकित करने वाली मूर्ति रखी हुई है, जो परंधाम के खेत में मिली है और जिसके लिये विनोबाजी को विशेष भाव है। विनोबाजी ने अपने हाथों उसकी प्राण-प्रतिष्ठा की है। वहाँ जा कर वे भजनादि भी यथा-समय करते है। लोगों को इसका आश्चर्य होता है और वे विनोबाजी को पूछते हैं कि "आपके आश्रम में भी मूर्ति है और आप भी मूर्ति-पूजा करते है ?" तब विनोबाजी कहते कि "मूर्ति-पूजा का मै आग्रही नहीं हूँ, लेकिन भगवान खुद होकर मेरे यहाँ आ जाय तो उसे निकाल दूँ, ऐसा अभक्त भी नहीं हूँ।" इस मूर्ति के बारे मे ' भगवान् खुद होकर आ जाय, यह अक्षरशः सत्य है। इतना ही नहीं, यहाँ तो भक्त की एक पावन कल्पना पूरी करने के लिये ही वह आया है, ऐसा मुझे लगता है। करीब उन्नीस साल पहले, ८-५-३२ को धूलिया जेल में गीता के बारहवें अध्याय पर प्रवचन देते हुए सगुण और निर्गुण भक्ति समझाने के लिये अनुक्रम से लक्ष्मण और भरत का उदाहरण दे कर आखिर में विनोबाजी ने कहा है कि " ऐसा चित्र यदि कोई निकाले, जिसमें दोनों की मुखाकृति समान हो, किंचित उम्र का फरक, चेहरे पर तपस्या वही और राम कौनसा व भरत कौनसा यह पहचाना नहीं जा सकता, तो वह चित्र बडा पावन होगा।" भक्त की यह अभिलाषा पूरी करने के लिये ही मानों १९३७ के बाद जब विनोबाजी परधाम पर रहने गये और शरीर श्रम के तौर पर कुछ-न-कुछ खोदते थे, तब १९४०-'४१ में एक दिन उनकी कुदाली किसी पत्थर पर टकरायी। यहाँ मूर्तियाँ निकलती हैं, यह खयाल होने से उस पत्थर को हिफाजत से निकाला गया तो पाया गया कि औंधी रखी हुई

'भरत-राम-भेंट' की वह मूर्ति थी ! "धर्म जागो निवृत्तीचा" ('निवृत्ति' का धर्म जागृत रहे) इस ज्ञानदेव के अभंग के द्वारा भरत-राम की बिदा माँग कर वे निकले। रास्ते में दादा धर्माधिकारी से नयी तालीम को लेकर काफी बातें होती रहीं।

लक्ष्मीनारायण-देवस्थान (वर्धा) में वर्धावासियों से विदा लेने को ठहरना था। यह देवस्थान हिन्दुस्थान का शायद सबसे पहला भव्य मंदिर है, जो हरिजनों के लिये खोला गया था। बजाज-कुल की देशभक्ति का वह बाह्य चिह्न है। वर्धा का वह एक दर्शनीय स्थान है। योगिराज भनसाली को १९४२-४३ की चिमूर-पद-यात्रा में यहीं से विदा दी गयी थी। वह सारा प्रसंग नजर के सामने आ रहा था। महिलाश्रम की बहनों ने 'वैष्णव जन' और 'प्रेम मुदित मन से कहो राम-राम-राम' ये मधुर भजन गाये। माता जानकीदेवी बजाज़ ने वर्धा-वासियों की ओर से दो शब्द कहे। यहा पर विनोबाजी ने भी वर्धा-वासियों से विदा लेते समय कुछ शब्द कहे थे। उनका यह भाषण आगे प्रवचनों में दिया गया है।

और बाद मे वे वायगाव के लिये रवाना हुए।

इस तरह पदयात्रा का आरंभ हुई है। पदयात्रा की पावन-शक्ति से हिंदुस्तान सदियों से परिचित है। जीवन-काल के आखिरी हिस्से में हिंदू-सस्कृति ने मनुष्य से अपेक्षा रखी है 'परिव्राजकता' की। परिव्राजक याने चारों ओर घूमने वाला। गीता के 'सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज, सब धर्मों को छोड़ कर मुझको ही शरण आ,' इस आदेश को पालन करने वाला आदेश देते हुए गीता ने मानों उसका मर्म भी बता दिया। भगवान बुद्ध और महावीर के विहार से सारे प्रात को ही 'बिहार' नाम मिला। साधु-संतों के परिभ्रमण ने खंड-प्राय हिंदुस्तान को "अखण्ड" बनाया। बापू की दाडी-यात्रा और नोआखाली-यात्रा का चमत्कार तो हमारी आखों के सामने ही हुआ है।

सर्वोदयी ' पद-यात्रा

आखिर मे ज्ञानदेव के अद्रोह के विवरण के शब्दो में कहूँगा कि क्या अद्रोह का ही भावरूप शब्द सर्वोदय नहीं है ? जिस तरह गगा दुनिया के पाप-ताप दूर करती हुई और किनारे के वृक्षो को पोषण देती हुई समुद्र तक पहुँचती है, या दुनिया का अधापा दूर करता हुआ और शोभा के मदिरों को प्रकट करता हुआ सूर्य जैसे प्रदक्षिणा को निकलता है, वैसे बद्धों को छुड़ाती हुई, डूबे हुओ को और दबे हुओं को ऊपर उठाती हुई एव आर्त्तों के दुःख दूर करती हुई यह सर्वोदय-पद-यात्रा संपन्न हो।

—वल्लभस्वामी

: १ :

संकल्प

आज यह तय हुआ है कि आगामी सर्वोदय संमेलन के लिये मुझे हैद्राबाद जाना है। बहुत लोग मुझे अब तक आग्रह पूर्वक कहते रहे हैं कि मुझे संमेलन मे जाना ही चाहिये। लेकिन मैंने न जाने का तय कर रखा था। न जाने के मेरे जो कारण थे वे भी बहुत महत्त्व के थे। अुनको देखते हुए मै जाना नहीं चाहता था। लेकिन आज मित्रों ने आग्रह किया और आग्रहवश मुझे जाने का निश्चय करना ही पड़ा।

कल सेवेरे यहाँ से पवनार जाऊंगा। परसो पवनार से हैद्राबाद के लिये पैदल निकलूंगा। रोज करीब पन्द्रह मील चलने की कल्पना है।

यह सब मै जब प्रार्थना में जाहिर कर रहा हूं तो अपनी जिम्मेवारी महसूस करता हूं। वाहन में न बैठने का व्रत मैने नहीं लिया है। क्योंकि व्रत तो सत्य-अहिंसा आदि का लिया जाता है। वित्त-विच्छेद की बात मैं कर रहा हूं तो उसका यह अर्थ भी नहीं है कि मुझे प्रवास छोड़ देना है। पैसे के छेद के कई पहलू मुझे दीख पडते हैं। उन पहलुओं के अनुकूल समाज हमें बनाना है। परमेश्वर चाहेगा तो इस काम में हमें जरूर यश देगा।

मित्रों से मेरी प्रार्थना है कि मेरे इस संकल्प को तोड़ने की बात वे न सोचें। संकल्प में शुरू से कुछ अपवाद भी नहीं रखना चाहिये। उससे मनुष्य की न संकल्पशक्ति बढ़ती है और न प्रतिभा। पैदल यात्रा की योजना बनाने में जो मदद देना चाहें वे जरूर दे सकते हैं।

सेवाग्राम आश्रम
६-३-५१

: २ :

परंधाम आश्रम से बिदा

आप लोगों को अब पता चल ही गया है कि कल से मैं पैदल चलकर हैद्राबाद के सर्वोदय संमेलन के लिये जा रहा हूं। वहाँ जाने का पहले विचार नहीं था। लेकिन लोगों का आग्रह रहा और जाना तय भी हो गया। अचानक ही यह तय हुआ, और अब केवल तीस दिन ही बचे है। ज्यादा दिन ठहरने की अब गुजाअिश नहीं रही है, अिसलिये मै कल ही कूच कर रहा हूं।

चित्त-शुद्धि का कार्य

अपने यहाँ जो काम चल रहा है उस संबंध में मै कअी बार आपके सामने बोल चुका हूं। यह काम यदि ठीक ढंग से रूप पकड लेगा तो उससे हम सबकी चित्त-शुद्धि होगी और समाज को भी कुछ शुद्धि प्राप्त होगी। अिस तरह दोनो का काम बनेगा। अिसलिये अिच्छा थी कि अिस काम का कुछ रूप आने तक यहीं रहें। वैसे मेरी तबियत भी बहुत अच्छी हुअी है अैसा नहीं कह सकते। लेकिन वह चीज गौण है। मुख्यतया यहां के काम का कुछ आकार आनेके बाद ही जरूरत पड़ी तो बाहर जा सकते हैं हो सकता है शायद बाद में बाहर जाने की जरूरत भी न पड़े— अैसी कल्पना थी। लेकिन बीच में जाने का तय हुआ है तो वह

भी परमेश्वर की इच्छा से ही प्रेरित हुआ है, अैसा मै देख रहा हूं। क्योंकि यह सारा अनपेक्षित-सा हो गया और अिस खबर से सब को आनंद भी हुआ है।

पैदल-यात्रा क्यों ?

सर्वोदय संमेलन में सब लोग जिस तरीके से जा सकते हैं उस तरीके से जाना ही अच्छा है। जो अिस तरह नहीं जा सकते हैं वे रेल्गाड़ी से आयेंगे तो भी उसमें दोष नहीं है। लेकिन हो सके तो पैदल ही जाना अच्छा है। उससे देश का दर्शन होता है। जनता के साथ संपर्क आता है और उसे सर्वोदय का संदेश पहुंचा सकते हैं। वह संदेश सुनने और उसमें से सांत्वना प्राप्त करने के लिये लोग बहुत उत्सुक हैं। लोगों को इस समय सात्वना की सख्त जरूरत है। किसी का मन अगर त्रस्त हुआ है और उसमें से मुक्त होने का कुछ रास्ता उसे मिल जाता है तो उसको शांति मिलती है। यही हाल आज जनता का हुआ है। इसमे किसी एक का दोष है ऐसी बात नहीं है। सबका मिलकर दोष है। लेकिन दोषों की चर्चा भी किस काम की है? जरूरत है दोष-निवारण की। और उसका मार्ग सीधा सादा, सब को करने योग्य और असरकारक भी है जो हमने यहा परंधाम में प्रयोग किया है। यद्यपि अभी तक जैसा हम चाहते हैं वैसा रूप नहीं मिला है, फिर भी शुभ भावना से तपस्या हो रही है। और अुतनी भी व्यथित मन को संतोष दे सकती है।

यात्रा का ढांचा नहीं बनाया है

अिस प्रवास में अपनी कुछ भी कल्पना ले कर नहीं जा रहा हूं। सहजता से जो होगा वह होने दूंगा। फलाने ढंगसे

सफर करनी है, फलाना काम करवा लेना है, ऐसा कुछ भी मेरे मन में नहीं है। जगह जगह जो भी भले लोग मिलेंगे उनसे मिलना और लोगों की जो कठिनाइयाँ होंगी उनको हल करने का कुछ रास्ता बना सकूं तो बनाऊँ इतना ही मन में है। अब समय कम रहा है। इसलिए निश्चित रास्ते से ही जाना पड़ेगा। इधर उधर हो आने की गुंजाइश नहीं है। वापिस आते समय ऐसी कोई पाबंदी न होने के कारण अपनी इच्छा के मुताबिक घूम सकेंगे। लेकिन आगे का विचार अभी नहीं किया है। वह हैद्राबाद पहुंचने के बाद तय होगा।

मेरा मन यहीं है

जो लोग यहां अिस काम में लगे हुए हैं उनके साथ मेरा शरीर यद्यपि नहीं दिखाई देगा तो भी मेरा मन यहीं है ऐसा अनुभव आपको आएगा। शरीर से यहां रहते हुए जितनी तीव्रता से मेरा मन यहाँ था उससे कम तीव्रता से वह नहीं रहेगा। शायद अधिक तीव्रता से ही रहेगा। मुझे उम्मीद है कि जिन नवयुवकों ने यह काम पूरा करने की शपथ ली है वे यदि यह काम ईश्वर का है अिस भावना से उसे निरहंकार पूर्वक करते रहेंगे तो उन्हें यहां की मेरी गैरहाजरी उत्साह देनेवाली ही साबित होगी।

परंधाम, पवनार

७-३-'५१

: ३ :

वर्धावासियों से बिदा

बापू के प्रयाण के बाद मुझे हिंदुस्तान भर घूमना पड़ा। थोडा व्यापक रूप से देखने का मौका भी मिला। अनुभव से मेरे ध्यान में आया कि प्रवास का यह ढंग अुस काम के लिये अनुकूल नहीं है जो हमे करना है। आज कल राज-काजवाले तो हवा मे घूमते हैं। समाज-सेवक भी अुसी ढंग से घूमने लग जायं तो वे भी राज-काजवालों के समान हो जायेंगे। यह हमारे लिये ठीक नहीं होगा।

स्वास्थ्य के कारण जब मुझे घूमना बंद करना पड़ा तब यह सब सोचने का मौका मुझे मिला। अिसी बीच परधाम मे वित्त-छेदन का प्रयोग शुरू हुआ। अुस काम के कुछ स्वरूप आने पर, जरूरत पड़ी तो फिर घूमने की मेरी कल्पना थी। लेकिन अितने में यह यात्रा का कार्यक्रम बन गया और बहुत ही सहज मे बना। जो वस्तु सहज उपलब्ध होती है अुसे अीश्वर की अिच्छा समझ कर स्वीकारना चाहिये। अिसी खयाल से मैं निकल पडा हू। संभव है, हैद्राबाद पहुंचने के बाद आगे भी बढ़ूं। अुस हालत मे वापिस कब आअूंगा कह नहीं सकता। अिसलिये आज आपसे बिदा ले रहा हूं।

वर्धावासियों की जिम्मेवारी :

वर्धावालों से मेरा अिकतीस वर्षों से संबंध रहा है। हम लोगों ने तालीम की अेक पद्धति बनाअी और अुसे हमने 'सेवाग्राम-

पद्धति' कहा। लेकिन लोगोंने वह नाम नहीं अुठाया। 'वर्धा-शिक्षण-पद्धति' नाम चला। बापू के अनन्यभक्त जमनालालजी का नाम भी वर्धा से जुड़ा हुआ है। अितने पावन नामों का बल जब हमारे पास है, तो मेरा विश्वास है, वर्धा में बहुत कुछ काम हो सकता है। लेकिन यहां पर हमारी अितनी संस्थाअें होने पर भी वर्धा शहर में हम खास काम नहीं कर पाए हैं यह कबूल करना चाहिये। मैं अुसके कारणों में अभी नहीं जाऊंगा। संभव है अपने-अपने कामों में सभी अितने मशगूल रहे हों कि समय न निकाल सके हों।

बीच में हमने वर्धा शहर का सर्वे किया था। सैकड़ों लोगों ने अपने दस्तखत दिये और कुछ न कुछ सार्वजनिक काम करने की अिच्छा प्रकट की। यह छोटी बात नहीं है। लेकिन अुन लोगों से काम नहीं लिया गया। वैसे यहां काफी कार्यकर्ता हैं और रचनात्मक काम के लिये वातावरण भी अनुकूल है।

अनिंदावृत्ति की आवश्यकता

लेकिन जहां कार्यकर्ता अधिक होते हैं वहां अेक बात खास ध्यान में रखनी चाहिये। आज अभी वैष्णवगीत गाया गया जिसमें नरसी मेहता ने आदर्श भक्त के गुण बताए हैं। उनमें से अेक गुण की तरफ मेरा ध्यान इन दिनों विशेष रूप से जा रहा है। वह गुण है 'अनिंदा'। अेक जमाना था जब मैं कहता था कि अपने तो दोष देखने चाहिये और दूसरों के गुण। लेकिन अेक दिन सूझा कि हमें अपने भी गुण ही देखने चाहिये। क्योंकि आखिर

हम कौन हैं ? वही शुद्ध चेतन आत्मस्वरूप हम हैं। तो फिर दोष किसके देखें ? दोषों का भान हम जरूर रखें। लेकिन चिंतन तो गुणों का ही करना चाहिये। दोष तो सिर्फ गुणों की छायारूप होते हैं। बिना छाया के तसवीर नहीं खींची जा सकती। वैसे बिना दोषों के गुण भी अव्यक्त ही रह जाते है। दोषो को हम जानेंगे जरूर, लेकिन उनको दूर करने के लिये। और गुणों को बाहर आने का मौका देते रहेंगे। अिस तरह अगर हम हर जगह गुण-दर्शन ही करते जाएंगे तो तेजी से आगे बढ़ेंगे

महिलाश्रमवालों से

यहां महिलाश्रम की अितनी लड़कियां आई है। आरंभ से ही उस संस्था से मेरा संबंध रहा है। आज ऊपर से ऐसा दीखता है मानों मेरा महिलाश्रम से कोई संबंध नहीं है। लेकिन दर-असल मैं अपने को महिलाश्रम के काम से अलग नहीं समझता हू। अिस वक्त सेवाग्राम में तालिमी संघ के संमेलन में मैंने महिलाश्रम का जिक्र बुनियादी तालीम का प्रयोग करनेवाली संस्था के तौर पर किया। आपको अपना अलग अभ्यासक्रम बनाने का अधिकार है। लेकिन यह बात ध्यान में रखें कि हिंदुस्तानभर की लड़कियों को यहां जो संस्कार मिलेंगे उनके द्वारा उनमें तेज तथा वैराग्य प्रकट होना चाहिये।

लक्ष्मीनारायण मंदिर, वर्धा
प्रातःकाल ८-३-५१

पहला दिन—

: ४ :

देहात के मजदूरों का प्रश्न

परंधाम का हमारा काम

आपके गांव में पहले मै कब आया था मुझे याद नहीं है। लेकिन आपके पडोस में ही मै रहता हूं। यहां से तेरह मील पर पवनार में परंधाम आश्रम है। वहां मै रहता हू और आप सब की चिंता करता हू। किसान कैसे बचेगा, देहात कैसे सुधरेंगे, लोगो को सुख कैसे मिलेगा, दैन्य, दारिद्रय और दुःख कैसे मिटेगा, प्रेम कैसे रहेगा अिस विषय में मै सोचता हूं। परंधाम में मै और मेरे साथ पढ़े-लिखे लोग भी कुदाली से खोदते हैं, रहट हाथ से चलाकर कुएँ से पानी निकालते हैं, सूत कातते हैं, कपड़ा बुनते हैं, बढ़ई का काम करते हैं। ये सारे उद्योग कैसे पनपेंगे इसका विचार करते हैं।

मेरी पैदल यात्रा

आज मैं आपके गांव मे आया हू और यहां से घूमते घूमते तीन सौ मीलपर हैद्राबाद है, वहां जाऊंगा। वहां सज्जन लोगों का एक संमेलन है। वहां मैं पैदल जा रहा हूं। आप कहेंगे यह क्या पागलपन अिसको सूझा ? अिन दिनों तो लोग हवाई जहाज में जाते हैं। कल ही अेक बालक कह रहा था कि रेलगाड़ी से सफ़र

करने में बहुत समय लगता है। अब तेजीसे पहुंचाने वाले हवाई जहाज निकले है तो असे जमाने मे पैदल सफर करने का यह पागलपन कैसे ? लेकिन यह पागलपन आपसे मिलने के लिये है। आप देहात की जनता नारायण स्वरूप है। आपसे संपर्क बढ़े, अिस खयाल से मैं आया हूं। कल मैं रालेगांव जाऊंगा। सुबह पांच बजे चल देंगे। दोपहर को ग्यारह बजे वहां पहुचेंगे। फिर भोजन आदि होगा। कुछ लिखने का काम चलता है वह करेंगे, फिर शाम को पांच बजे लोगो से बातचीत करेंगे। रात को प्रार्थना करेंगे, सब मिलकर भगवान का नाम लेंगें और सब को सिखायेंगे। फिर रात को भगवान की गोद मे सो जाएंगे। परसो सुबह उठ कर फिर से कूच करेंगे। ऐसा हमारा कार्यक्रम है।

देहात की चिंता देहात ही करे

आज भी यहां के लोगों से पांच बजे काफी चर्चा हुई। उन्होंने किसानों की दिक्कतो का जिक्र किया। गांव के मजदूरों को आगे शायद खाने के लिये ज्वार न मिले ऐसी हालत पैदा होने की आशंका उन्होंने प्रकट की। मैंने उनसे कहा, तुकाराम महाराज ने हमे सिखाया है कि

"तुझे आहे तुजपाशीं परि तूं जागा चुकलासी"

—तेरा तेरे पास ही है, लेकिन तू जगह भूल गया है और इधर उधर भटक रहा है। तुझे लगता है कि सरकार, डी. सी. या मंत्री मेरे लिये कुछ करेंगे। लेकिन तेरे लिये तू ही करेगा। तुझे थकान आयेगी तो तू ही सोयेगा, दूसरा तेरे लिये नहीं सोयेगा। तुझे भूख लगेगी तो तू ही खायेगा, दूसरा तेरे लिये नहीं खायेगा। तू आया

था तब अकेला ही आया था, और जायेगा तब अकेला ही जायगा। इसलिये तेरी जिम्मेवारी तुझे ही उठानी है, और वह तू ही उठा सकता है। भगवान ने कैसी योजना बनाई है यह तू नहीं देखता है? उसने हरेक को दो कान, दो आंख, दो हाथ, दो पाव दिये हैं और बुद्धि भी दी है। ऐसा क्यों दिया है? इसलिये कि हरएक अपने पाव पर खडा रहे और फिर एक दूसरे की मदद करे। वैसे देहातों को भी अपने सवाल खुद ही हल करने होंगे। और वे हो भी सकते है। हिन्दुस्तान में पाच लाख देहात हैं। उनके सवाल दिल्ली की सरकार, चाहे वह कितनी भी कुशल क्यों न हो, अकेली हल नहीं कर सकती। सवाल हल करने का इलाज आपके हाथ मे है। वह कौनसा? पैसे के दर नीचे ऊपर होते हैं। एक रुपये मे कभी चार पायली ज्वार तो कभी दो पायली। वह भी कभी मिलती है कभी नहीं। मैंने सुझाया कि सालदारों की तरह आप मजदूरों को भी कुछ निश्चित प्रमाण में ज्वार क्यों नहीं देते? यह प्रमाण मैने रोज की पचास तोला ज्वार सुझाया। स्त्री हो, चाहे पुरुष, ज्वार में फरक न किया जाय। मजदूरी मे जो भी फरक करना है, वह पैसे मे किया जाय। ५० तोला ज्वार दे देने के बाद ऊपर से जो भी पैसे देने है उसमें चाहें तो फरक कर सकते है। जिस तरह मजदूरों को उनकी रोजी में कम से कम ५० तोला ज्वार और बाकी के पैसे देगे तो आपके मजदूर भूखे नहीं रह सकेंगे। इस पर काफी चर्चा हुई। आखिर यह सुझाव उन लोगों को जंच गया। फिर मैंने कहा कि मेरे सामने आपने तय किया है तो वैसा प्रस्ताव अभी मेरी हाजिरी में ही कर लीजिये। न मालूम फिर

मैं कब आपके गाव में आऊंगा। बातचीत में गांव के बड़े बड़े लोग हाजिर थे। उन्होंने प्रस्ताव किया। वह आपको बाद में सुनाया जायगा। अिस प्रस्ताव के अनुसार अगर आप लोग चलेंगे तो गांव में कोई भी भूखा नहीं रहेगा। फिर आपके गांव का उदाहरण देखकर दूसरे लोग भी अुसका अनुकरण करेंगे और अिस तरह देहात का यह जटिल प्रश्न हल हो सकेगा।

पांच अंगुलियों की तरह रहो

और अेक बात। हम सब हाथ की पांच अंगुलियों की तरह रहें। हमारे हाथ की एक अंगुली छोटी है तो दूसरी बड़ी है। सब अंगुलियां समान नहीं हैं। फिर भी जो काम करना होता है वह सब मिल कर ही करती है। लोटा उठाना हो तो अंगूठा और अंगुलियां मिलकर उठाती हैं। वे अगर आपस में झगड़ा करने लगेंगी और परस्पर सहकार नहीं करेंगी तो कुछ भी काम नहीं हो पाएगा। तो हमें भी उनकी तरह प्रेम के साथ रहना चाहिये। कोई छोटा और कोई बड़ा यह तो दुनिया में रहेगा ही। लेकिन सबके दिल एक होने चाहिये। अपनी अगुलियो से यह सबक हम सीखेगे तो हमारा भला होगा।

भगवान का स्मरण कीजिये

एक आखिर की बात और है। मुझे आपका अधिक समय नहीं लेना है। लेकिन मैं जो कहता हूं उसपर अमल कीजिये। रामदास स्वामी ने कहा है—"समजले आणि वर्तले तेचि भाग्यपुरुष

झाले, येर ते बोल्त चि राहिले करंटे जन"। जो भाग्यहीन होते हैं वे केवल बोलते ही रहते हैं और सुनते ही रहते हैं। लेकिन भाग्यवान वे ही होते है जो किसी विचार को समझने के बाद उसपर अमल करते है। इसलिये आप मेरी बात पर सोचें और वह जंच जाय तो उसपर अमल करें। मैं यह कहना चाहता हूं कि आप लोग सब अेक साथ बैठकर हर रोज नियमित रूपसे भगवान की प्रार्थना करें। मैंने सुना है कि यहां रोज प्रार्थना होती है। लेकिन उसमें हाजिरी पन्द्रह बीस लोगों की ही होती है और उसमें ज्यादातर छोटे लड़के ही होते हैं। ऐसा न करें। आप सब प्रार्थना में हिस्सा लीजिये। आखिर इस मनुष्य देह मे आकर क्या करना है? मानव-देह में अिसलिये आते हैं कि हम एक दूसरे की मदद करें, एक दूसरे पर प्रेम करें और सब मिल कर परमेश्वर का ध्यान करें। उसीने हमें वाणी दी है। अिसलिए मेरी आपसे प्रार्थना है कि जितने अधिक लोग जमा हो सकते ह उतने जमा होकर परमेश्वर का स्मरण कीजिये।

वायगाव (वर्धा)

सायकाल

८-३-५१

दूसरा दिन—

: ५ :

जन-सेवा ही परमेश्वर की पूजा

प्रार्थना में निम्न पंक्तियाँ लोगों को गा कर समझायी गई :

" नारायण असे विश्वी, त्याची पूजा करीत जावी
या कारणें तोषवावी, कोणी तरी काया"

—सारे विश्व मे नारायण भरा है, असकी पूजा हर रोज करे। असके लिये किसी न किसी की सेवा करके असे संतोष देना चाहिये।

मेरी माँ ने बचपन में हमें अेक पहेली सुनाअी थी " भाऊ भाऊ शेजारी भेट नाहीं संसारीं।" भाअी भाअी पडोस मे रहते है लेकिन जिंदगी-भर मे अेक दूसरे की मुलाकात ही नहीं होती। कौन हैं ये दो भाअी? असका जवाब है आँखे। दोनो आँखे बिलकुल अड़ोस-पड़ोस में है। लेकिन अेक आँख दूसरी को नहीं देख सकती। अैसा ही हाल आप का और मेरा हुआ है। मैं आप-के गाव से पचीस-तीस मील की दूरी पर ही रहता हूं। और वहां तीस साल से रहता हू। लेकिन आज तक आपकी मुलाकात नहीं हो पाई थी। भगवान ने आज वह दिन ला दिया है।

सर्वोदय संमेलन का पूर्वेतिहास

अभी सर्वोदय संमेलन हैद्राबाद में है। गांधीजी के जाने के बाद सब लोगों ने मिल कर तय किया कि सर्वोदय-समाज कायम करें। सर्वोदय-समाज याने क्या? जिस समाज में न कोई ऊंचा है न कोअी नीचा है। जिस समाज में सब अेक दूसरे पर प्रेम करते हैं उसका नाम है सर्वोदय-समाज। फिर हर साल जगह जगह मेले लगाये जायं। उन मेलों में सब लोग इकट्ठे हो कर भगवान का भजन करें, एक दूसरे से परिचय कर ले, और गांधीजी का स्मरण कर के देश के लिये अपने हाथ की कती सूत की अेक गुंडी समर्पण करें। तो अिसके अनुसार १२ फरवरी को हर प्रांत में मेले लगे। आप के प्रांत में पवनार में मेला लगा था। आप में से कुछ लोग शायद वहां पर आये होंगे लेकिन सब को आना चाहिये। और अपने साथ अेक अेक गुंडी ला कर भगवान के चरणो मे समर्पण करनी चाहिये। यह अगले साल कीजिये। अिसके अलावा यह भी तय हुआ कि हिंदुस्तान भर के कार्यकर्ता सालभर में अेक दफा अिकट्ठे हो कर अगले साल के काम के बारे मे सोचें।

नारायण के दर्शन के हेतु पैदल यात्रा

अिस साल सर्वोदय-समाज के सेवकों का संमेलन हैद्राबाद में होनेवाला है। वहां अगर मुझे जाना चाहिये तो मैं पैदल चलते चलते ही क्यों न जाऊं, अैसा मैने सोचा है। अुससे आप जो लोग नारायण स्वरूप हैं अुनके दर्शन मै कर सकूंगा। नदी समुद्र में

मिलने के लिये निकलती है। लेकिन जाते जाते रास्ते में कहीं अिस गांव को पानी दिया, कहीं अुस खेत को पानी दिया। अैसा करते करते और सबकी सेवा करते करते समुद्र तक पहुंचती है। अुसी तरह मैंने भी सोचा कि हैद्राबाद जाना है तो रास्ते में लोगों से मिलते मिलते और लोगोंकी कुछ सेवा करते करते जाअूं। तो आज आप के गांव में आया हूं।

दुखियों की सेवा ही परमेश्वरकी पूजा है :

आप और हम सब यहां प्रार्थना में अिकट्ठे हुअे हैं। अिससे मुझे बहुत आनंद हुआ है। आज प्रार्थना में हमने अेक बात सीखी। सारी दुनिया में जो परमेश्वर भरा है अुसकी कुछ सेवा हमारे हाथ से होनी चाहिये। और परमेश्वर की पूजा याने दुखियों की सेवा। तो आप लोग हर रोज सोने के पहले अपने दिल से पूछें कि अपनी देहके लिये तो मैंने सब कुछ किया लेकिन दूसरे के लिये क्या किया? गांव के लिये क्या किया? कोअी बीमार था तो उसको दवा दी है? कहीं गंदगी पड़ी थी अुसको साफ किया है? मेरा देह और मेरा घर छोड़ कर गांव के लिये मैंने अगर कुछ नहीं किया है तो समझना चाहिये कि मेरा आज का दिन बरबाद हुआ। मैं व्यर्थ जिया। अिस तरह तो पशु, पक्षी सभी जीते हैं। भगवान ने हरेक को प्राण दिया है तो सब खाते हैं और जीते हैं। लेकिन दूसरे के लिये जीना, दूसरे की कुछ सेवा करना अिसमें जो समाधान मानव को प्रतीत होता है वह दूसरी किसी चीजमें नहीं होता। यह कल्पना की बात नहीं है। कोअी भी अिसका अनुभव ले सकता है।

दूसरे को खिलाने का आनंद चखो

बचपन की बात है। हमारे गांव में हमारा खुदका अेक कटहल का पेड़ था। जब फल निकलता था तब अुसे काट कर दो दो बीज हरेक घर में दे आने के लिये माँ हम से कहती थी। हमारा गांव पचास-साठ घरों का था। सब घरों में मैं बीज पहुंचा आता था। मै उस समय सात साल का बच्चा था। बच्चों को तो खाने में बड़ा मजा आता है। लेकिन हमको उस फलके बीज पहले नहीं मिलते थे। मुझे अब भी याद आता है कि वे बीज दूसरो को बाँटने में मुझे कितना आनंद होता था। वह एक अजीब प्रकार का आनद था। खुद खाने में जो आनंद आता है अुसका अनुभव तो हरेक को है। जानवरों को भी वह अनुभव आता है। लेकिन दूसरे को खिलाने मे कैसा आनंद आता है यह अनुभव करके ही देखना चाहिये। जैसे शक्कर मुंह में डालते ही उसकी मधुरता का हरेक को अनुभव होता है, वैसे दूसरे को मदद देने में मधुरता है या नहीं, यह अनुभव करके ही देखना चाहिये। अगर वैसा अनुभव न आये तो आप आ कर मुझे जरूर कहें। इतनी अनुभव सिद्ध यह बात है।

दूसरे को सुख देने में ही मनुष्य-जन्म कृतार्थ होता है

आज की प्रार्थना में हम यह सबक सीखे हैं कि नारायण की कुछ सेवा अपने हाथ से हो। वह पूजा तुलसी, बेल या फूल से नहीं होगी। कुछ सेवा ही होनी चाहिये। किसी-न-किसी तरह भगवान को संतोष पहुंचाना ही होगा। रामदासस्वामी समझाते हैं कि

इस तरह संतोष पहुंचायेंगे तो ही नारायण की पूजा होगी। वही सिखावन आज मैंने प्रार्थना में आपके सामने रखी। आज पहले ही मैं आप के गांव मे आया हूं। हम सब ने मिल कर प्रार्थना की, बहुत आनंद आया। फिर कब मिलेंगे कह नहीं सकते। इसलिये इतनी बात याद रखिये कि एक फकीर आया था और सुनाकर चला गया कि मनुष्य देह की कृतार्थता भोग भोगने में नहीं है बल्कि दूसरे को थोड़ा भी क्यों न हो, सुख देने में है।

मजदूरों को मजदूरी में कुछ ज्वार दीजिये

आज आप के गांववालों से चर्चा चल रही थी। मैंने सुझाया कि मजदूरों को हर रोज की मजदूरी में कुछ ज्वार देते जाइये। आधी पायली ज्वार (५० तोला) और फिर ऊपर से जो भी कम ज्यादह पैसा देना हो वह दें। अगर यह बात आप को जंचे तो दस्तखत करके प्रतिज्ञा कर लो। मुझे तीन दस्तखत मिले है। मुझे खुशी हुई। तीन कुछ कम नहीं है। अरे भाई, एक के हृदय मे भी अगर भगवान जग गया तो सारी दुनिया बदल सकती है। अैसे लोग हमने देखे हैं। बड़े लोग बड़े कैसे बनते है? गांधीजी हमारे सामने हो गये। वे किस कारण बड़े हुए? उनको क्या भगवान ने हमसे अधिक इन्द्रियां दी थीं? उनके पास क्या अधिक था? उनके हृदय में भगवान जग गया था और दूसरो की सेवा करने की लगन उन्हे थी। इसके सिवाय उनके पास क्या था? वैसी अगर हममें से एक को भी लगन लगी तो वह छोटी बात नहीं है।

तीन लोगों ने दस्तखत दिये, मुझे प्रसन्नता हुई। मुझे उम्मीद है कि वे उसके अनुसार व्यवहार करेंगे।

मनुष्य के हृदय पर भरोसा रखो

लेकिन एक भाई ने मुझे सावधान किया। उसने कहा "आप दस्तखत लेनेकी झंझट मे न पड़ें। उसमे कोई सार नहीं है। हमारा गांव इतना लोभी है कि वचन भले ही दे देंगे लेकिन उसको निभायेंगे नहीं।" मैने कहा "भाई, भरोसा करना मेरा धर्म है। मेरे हाथ मे दंड-शक्ति नहीं है और न मै चाहता हूं। यहां आकर एक बात मैने कही और जिनको वह जंची उन्होने उसके अनुसार चलने का वादा किया, तो मै उनपर विश्वास ही रखुगा। मनुष्य के हृदय पर भरोसा रखना ही चाहिये। अगर न रखें तो हम मनुष्यता गंवायेंगे। आपने मुझे सावधान किया, अच्छा हुआ। उससे वे लोग भी चेत जायेंगे। वचन अगर दिया है तो "प्राण जाइ बरु वचन न जाई।" लेकिन याद रखो कि मनुष्य के हृदय में परमेश्वर जागता है। कब जागेगा उसकी कल्पना नहीं कर सकते। किस निमित्त से जागेगा यह कह नहीं सकते। मै एक फटा-टूटा आदमी आप के पास आया और ऐसा कहने की भगवान ने मुझे हिम्मत दी कि "अपने लिये तो हम जीते ही हैं, लेकिन दूसरे के लिये जीना सीखो" तुकाराम महाराज ने यही सिखाया। "तुका म्हणे फार थोडा करी परउपकार" —थोडा भी क्यों न हो परोपकार करो। यह देह दूसरो के लिये घिसने दो। अगर देह वैसी घिसेगी तो चंदन घिसने पर

जैसी सुगंध फैलती है वैसी देह घिसने पर सुगंध फैलेगी। वैसी सुगंध फैलने दो यह सिखावन हमारे सब संतों ने हमें दी और वही मैंने आज आप के सामने रखी।

मेरे मित्रो, मेरा भाषण समाप्त होता है। आपको मेरे प्रणाम हैं।

राळेगाव, (जि. यवतमाळ)
९-३-५१

तीसरा दिन—

: ६ :

हाथ-चक्की और हरि-नाम

यह एक छोटासा गांव है। छोटे गांव में सब के हृदय एक होते हैं। एक दूसरे की अच्छी पहचान होती है। किसी को कुछ तकलीफ हो तो उसका जल्दी पता चलता है और आप मदद के लिये दौड़ जाते हैं। यह सब अच्छा है। फिर आप का गांव रेलगाड़ी से और मोटर से बहुत दूर है जिस से आप बड़े सुख में हैं। लेकिन आगे-पीछे मोटर यहां तक पहुंच जायगी। तब भी आप अपना सादा जीवन और प्रेम न छोड़ें।

हाथ-चक्की का महत्त्व

आपके गांव में अभी हाथ-चक्की पर पीसा जाता है। यह अच्छा है। लेकिन मोटर नजदीक आ जायगी तो आटे की चक्की निकलेगी और आप अपना आटा वहां से पिसवा लेंगे। अगर ऐसा हुआ तो आप की बड़ी हानि होगी।

मैं बचपन में कोंकण में रहता था। आप के जैसा ही वह छोटा गांव था। सुबह चार बजे घर की स्त्रियां उठती थीं और सब से पहले जो कुछ पीसने का होता था, पीस लेती थीं। बाद में झाड़ू आदि लगा कर आंगन में पानी छिड़कती थीं। और फिर

प्रेम से भगवान का नाम लेती थीं। हर गांव में इस तरह चक्की चलती थी।

देश आधा घंटा देरी से उठने लगा

लेकिन तीस साल के बाद.अब देहातों मे से चक्की लुप्त होती जा रही है। मैं तो देख रहा हूं कि पहले से लोग देरी से उठने लगे हैं।· यानी सारे देश का प्रातःकाल का अमूल्य आधा घंटा बरबाद हो रहा है। सुबह के दो-तीन प्रहर बहुत मूल्यवान होते हैं। उस समय नामस्मरण कर सकते है और गहरा अभ्यास आदि कर सकते हैं। इसलिये सुबह के प्रहर मे आधा घटा देरी से अठने के कारण सारे देश का उतना नुकसान हो रहा है। तो आप लोग सुबह जल्दी उठते जाइये और रात मे जल्दी सोते जाइये।

पुरुष भी चक्की चलायें

और पसिने का काम केवल स्त्रियां ही क्यो करे ? बहुत सारा तो वे पीसती हैं। लेकिन आप को भी थोड़ा पीसना चाहिये। हम जेल में पीसते थे। जेल में पुरुष पीसते है, यह तो सब जानते है। लेकिन हम परंधाम के हमारे आश्रम मे हर रो पीसते है। पुरुष और स्त्रियां दोनों पीसती हैं। हर रोज ताजा आटा मिलता है। हाथ के ताजे आटे में जो ताकत है वह मिल के आटे में नहीं है। आपके गांव में अभी तक तो चक्की चल रही है। लेकिन मोटर आने पर भी आप यह नियम न छोड़ें। आलस्य को छोड़ दें। और परमेश्वर का नाम लेते लेते चक्की चलाते जाइये। कबीर

एक कविता में लिखते है कि लोग मंदिरों में पत्थर रखकर उसकी पूजा करते हैं; लेकिन "घर की चक्की कोई न पूजे, जा पर पीसा खाय।" जिस चक्की पर हम अपना आटा पीसते हैं और हमारी रोज की रोटी खाते हैं अुस चक्की की पूजा क्यों नहीं करते ? वह भी परमेश्वर ही है। चक्की की पूजा बेल-फूल चढ़ाकर नहीं होती। उसको हर रोज साफ कर के उसमे तेल दे करके आटा पीसना यही उस चक्की की पूजा है।

व्यसन छोड़िये

इस तरह अगर हम आलस्य छोड़ेंगे, उद्योग करेंगे, तो छोटा गाँव होने पर भी हम सुखी रह सकते है। गांव में किसी प्रकार का व्यसन नहीं होना चाहिये। किसी को चिलम का व्यसन, किसी को बीड़ी का व्यसन, किसी को गांजा-अफीम का व्यसन, और आज कल तो चोरी से शराब का व्यसन भी शुरू हो गया है। आप ही सोचिये कि इन चीजों का न देह को उपयोग है न आत्मा को। इन व्यसनों के कारण तो मनुष्य गुलाम बन जाता है। मनुष्य देह में हम आये हैं तो गुलाम बनने के लिये थोड़े ही आये है ? हम तो इस देह में मुक्ति का अभ्यास करने के लिये आये हैं। इसलिये गांव में किसी प्रकार के भी व्यसन न रहने दो।

हरि-नाम मत बिसारो

यह छोटा गांव होते हुए भी करीब आधे गांव के लोग आये हैं। मैं जो बात अब कहूंगा वह ध्यान में रखो। हर रोज गांव के १५-२० लोग अेक जगह जमा हो कर प्रेम से प्रभु का भजन

करते जाइये। १५-१६ साल पहले मै मेरे बचपन के देहात में गया था। उस गांव में स्कूल नहीं है। न कोई खास लिखना पढ़ना भी जानता है। दो दिन ही मैं वहां रहा। लेकिन एक दिन रात को दो बजे मेरी नींद खुली तो मुझे भजन की आवाज सुनाई दी। बुधवार का रोज था। मै बिस्तर से उठा और जहां भजन चल रहा था वहां जाकर बैठ गया। घंटा-आधा घंटा उन लोगों ने भजन गाया। मुझे बहुत आनंद हुआ। मै सोचने लगा जिस गांव मे स्कूल नहीं है और लिखना-पढ़ना भी कोई नहीं जानता वहां इतना ज्ञान भी इन लोगो को किसने दिया? तुकाराम के चार अभंग ये लोग भक्तिपूर्वक गाते है तो उतनी अकल गांव में बची है; वरना कब स्कूलें निकलती और कब इनको ज्ञान मिलता? लेकिन भजन करने की आदत देहातों को रही तो चार अच्छे शब्द इनको कंठ हो गये है। इसलिये मै आपसे कहना चाहता हूं कि आप एकत्र हो कर प्रार्थना करते जाइये। जिनको पढ़ना आता है वे कुछ अच्छी किताब पढ़ कर सुनायें। जो गाना जानते है वे भजन सुनाये। आज मैने जिस तरह आपको भजन करना और ताल पर ताली बजाना सिखाया वैसे आप छोटे बड़े एक साथ भजन कीजिये। पीठ सीधी रख कर बैठना चाहिये। और थोड़ी देर मौन रह कर ईश्वर का ध्यान करना चाहिये। ऐसा आप करेंगे तो स्कूलों से बढ़ कर शिक्षण आप को इस प्रार्थना में से मिलेगा। स्कूल तो देहात में होने

ही चाहिये और आगे चल कर होंगे भी। लेकिन भक्तिपूर्वक की गई प्रार्थना से जो संस्कार और तालीम आपको मिलेगी वह तालीम स्कूल की तालीम से बढ़ कर होगी।

सखी–कृष्णपुर
१०-३-५१

खास स्त्रियों के लिए—

: ७ :

स्त्रियों की जिम्मेवारी

स्त्रियों को भी भजन करना चाहिये

अपने लोगों में आम तौर से केवल पुरुष लोग ही भजन करते दिखाई देते हैं। लेकिन क्या स्त्रियों के लिये कोई भगवान ही नहीं है? गांव की स्त्रियों को एक जगह जमा होकर प्रेम के साथ थोड़ी देर तो भजन करना चाहिये। गृहस्थी की गाडी के दो पहिये हैं। एक स्त्री और दूसरा पुरुष। जैसे पुरुषों को धर्म होता है वैसे स्त्रियों को भी होता है। पुरुष को आत्मा होती है वैसे स्त्री को भी होती है। भगवान के सामने स्त्री और पुरुष समान हैं।

धर्म की रक्षा स्त्रियों ने ही की है

आप देखेंगी कि हिंदुस्तान में स्त्रियों ने ही धर्म की रक्षा अधिक की है। पुरुषों में जितने व्यक्ति व्यसनी मिलते हैं उससे बहुत कम स्त्रियों में मिलेंगे। स्त्रियों ने दुनिया में सदाचार जिंदा रखा है। इसीलिये उनके बालकों की जिम्मेवारी होती है। बच्चों में अच्छी आदतें डालना और उनको साफ-सुथरा रखना स्त्रियों के हाथ मे है। आप अपने बच्चों को सच्चरित्र बनायेंगीं तो देश को अच्छे नागरिक मिलेंगे। बच्चे तो आप की बड़ी इस्टेट हैं। इनसे बढ़ कर कौन

सा धन है? कौसल्या की कोख में से भगवान रामचंद्रजी निकले और देवकी की कोख से भगवान श्रीकृष्ण। जितने भी सत्पुरुष हुए हैं उनकी मातायें धर्मपरायण थीं। जिस घर की स्त्रियां भगवान का स्मरण करती है, सत्य का पालन करती है, प्रेमभाव से रहती हैं उस घर में अच्छे पुरुष पैदा होते है यह बात दुनियाभर में प्रसिद्ध है। अिसलिये आपके हाथ में बड़ी शक्ति है यह बात ध्यान मे रखिये।

पुरुष को सन्मार्ग पर लाना भी स्त्रियों का काम है

पुरुष झगड़ा करते है, शराब पीते है, लेकिन उनकी स्त्रियाँ चुपचाप सहन कर लेती है। उनका काम है कि वे अपने पतिसे इन आदतो को छोड़ देने को कहे। और अगर उनका कहना पुरुष न माने तो कहना चाहिये कि जब तक ऐसी आदत आप नहीं छोड़ेगे तब तक हम भोजन नहीं करेगी। यह सारा काम स्त्रियों का है।

आप सब बहने प्रेम से यहां आयीं मुझे बहुत अच्छा लगा। आप अपने पुरुषों को अच्छे रास्तेपर रखिये, बच्चो को सदाचारी बनाइये और एक दूसरे के साथ प्रेम का व्यवहार कीजिये। यह सब आप करेंगी तो आपके गांव मे स्वर्ग उतरेगा। *

सखी–कृष्णपुर
१०-३-'५१

* प्रार्थना के बाद गाव की बहुत-सी स्त्रियाँ विनोबाजी का प्रवचन सुनने को आई। उनके लिए उन्होने जो चार शब्द कहे थे, उसका साराश यहा दिया गया है।

चौथा दिन—

: ८ :

श्रम और प्रेम से स्वराज्य का उदय

भगवान की देन

हम जो देहात के लोग हैं उनके पास धन संपत्ति नहीं है, लेकिन कुछ और चीज है या नहीं ? क्या भगवान ने हम को बिलकुल खाली ही रख छोड़ा है ? पटाके मे बारूद भरी होती है इसलिये उसको बत्ती लगाते ही धमाका होना है। लेकिन बारूद न होती तो कैसे आवाज आ सकती थी ? तो देहात के लोगों में भगवान ने कुछ मसाला भरा है या नहीं ? मेरा कहना है कि भगवान ने हमें दो अहम चीजें दी है : काम करने के लिये दो हाथ, और हृदय मे प्रेम।

हिम्मत रखनी चाहिए

अपने हाथ की ताकत से हम गंदगी साफ कर सकते है। आप देखते है कि घर घर मे देवियां है इसलिये घरो के आंगन साफ रहते हैं। तो भगवान ने दो हाथो से काम करने की शक्ति हमे दी। और दूसरी चीज दी है प्रेम। तो देहात के लोगों के पास कुछ नहीं है, वे दीन हैं, दरिद्र है, दुबले है, लाचार हैं ऐसी अभद्र वाणी मुह से मत निकालो। बल्कि यूं कहो कि हम भगवान के बडे लाड़ले हैं। उसने हमें प्रेम दिया और काम करने के लिये हाथ दिये। कोई भी बाप अपने लड़के को कुछ न कुछ दिये बिना नहीं रहता। परमेश्वर हमारा पिता है, उसकी हम पर प्रीति है और उसने हमे बहुत बड़ी देन दी है। हम श्रीमान् हैं। दुनिया के सामने भीख मांगने की हमें क्या जरूरत है। इस तरह हिम्मत रखनी चाहिये।

बिना श्रम के खाना पाप समझें

वैसे देहात के लोग काम तो करते हैं। वे खेती करते हैं। लेकिन प्रेम और अभिमान के साथ नहीं करते। लाचारी से करते हैं। लगना यू चाहिये कि बिना श्रम किये खाना पाप है इसलिये मैं श्रम करके ही जीऊंगा। अब देखिये आप सब लोगों के बदन पर कपड़ा है। लेकिन यह सारा आप खरीद कर लाते है। कपास आप के खेत मे पैदा होती है वह आप बेच डालेंगे और बिनौले मोल लेते है, कपड़ा मोल लेते हैं। तिलहन आप के खेत में होती है, उसको आप बेचेंगे और खल्ली और तेल मोल लेंगे। यह क्या चल रहा है? अगर देहात इस तरह आलसी बने तो वे कभी सुखी नहीं बन सकते। हमें भगवान ने पैसा नहीं दिया है लेकिन हाथों की ताकत दी है उसका उपयोग करना चाहिये।

आपसी अनबन

दूसरी बात प्रेम की। देहात छोटे से छोटा भी क्यों न हो लेकिन वहां पर तीन गुट, चार पार्टियां, और पांच पक्ष होते हैं। इसका उसके साथ बनता नहीं और उसका इसके साथ बनता नहीं। मै एक देहात मे गया था। रात के करीब नौ बजे मैने आग लगी हुई देखी। मैंने पूछा "यह आग कैसे लगी?" तो लोगों ने कहा, "लगी नहीं, बल्कि लगाई गई है।" उस गांव में धनिये का बडा व्यापार चलता था। दो आदमियों का झगड़ा था तो एक ने दूसरे के धनिये को आग लगा दी। मुझे यह भी कहा गया कि यह बात आज की नहीं, बल्कि हमेशा चलती है।

स्वराज्य का उदय काम से ही होगा

इस तरह हम न हाथो से काम करते हैं और न एक दूसरे से प्रेम करते हैं। तो फिर स्वराज्य की गरमी कैसे महसूस

होगी। आप किसी भी देहात मे चले जाइये। आप को पाँच पचास आदमी बेकार बैठे हुए दिखाई देंगे। अगर आपको सभा करनी है तो किसी भी समय पचास लोग सभा के लिये आप को मिल ही जायगे। स्वराज्य आया कहते हैं। लेकिन वह है कहां? कपड़ा बाहर से खरीदते है, तेल, खल्ली, गुड बाहर से खरीदते हैं। इतना ही नहीं रस्सियाँ भी आप बाहर मे मोल लेते है। तो फिर स्वराज्य काहेका? एक आदमी को प्यास लगी थी। अब पानी कहां से मिलेगा? उस से कहा गया कि पानी चालीस मील की दूरी पर पैनगंगा नदी मे है। वह दुखी हुआ। एक दूसरा आदमी था जो पैनगंगा नदी से एक मील के फासले पर था। वह भी प्यासा था। चालीस मील दूर रहने वाले आदमी ने उससे कहा "अरे तू क्यो दुखी होता है। पानी तो तेरे नजदीक पडा है।" उसने जवाब दिया, "अरे भाई नजदीक हुआ तो क्या हुआ। पानी गले मे उतरेगा तभी न प्यास बुझेगी।" इसी तरह स्वराज्य लंदन से दिल्ली आ गया, और दिल्ली से नागपुर या यवतमाल भी आ गया। लेकिन वह तुम्हारे क्या काम का। सूर्य जब तक आप के गाँव मे नहीं ऊगेगा, तब तक आप सूर्योदय हुआ ऐसा माननेको तैयार नहीं होंगे। स्वराज्य हमारे हाथ मे है। हम और आप काम करने लग जायेंगे तभी स्वराज्य का उदय होगा।

रुंझा, जि० यवतमाल

ता० ११-३-५१

पाँचवाँ दिन—

: ९ :

स्वराज्य-लक्ष्मी का आवाहन

स्वराज्य-सूर्य की गरमी महसूस नहीं होती

हमारे देश को स्वराज्य मिले अब तीन साल हो चुके; लेकिन स्वराज्य का असली दर्शन इस देश मे अब तक नहीं हो रहा है। सब जगह स्वराज्य का उदय सूर्योदय के समान माना जाता है। सूर्योदय के बाद अंधकार नहीं रहता। स्वराज्य आने पर भी सारी जनता उत्साह से काम करने लगती है, जिम्मेवार बनती है, परस्पर सहयोग बढता है, और हमारे देश की लक्ष्मी कैसे बढेगी, हमारे देश का सौभाग्य कैसे प्रकट होगा इसकी चिंता सब लोग करते है। वैसा अनुभव इस देश मे अब तक नहीं आ रहा है, यह बड़े दुःख की बात है!

देश का उत्पादन कैसे बढ़ेगा

आज कल जो भी उठता है, कहता है कि देश की पैदावार बढनी चाहिये, उद्योग बढ़ने चाहिये। लेकिन पैदावार और उद्योग सिर्फ बोलने से नहीं बढ़ते। खेती करनी पड़ती है और उद्योग भी करने पड़ते हैं। आज आपके गाँव मे कताई मंडल की स्थापना की गई है। मैं वहाँ गया था। दो-चार लोग कात रहे थे। इस शहर

की आबादी करीब दस हजार की है। इन सब को कपड़ा लगता है। बच्चे, बूढ़े, स्त्री, पुरुष सब कपड़ा पहनते हैं; लेकिन सारा कपड़ा ये लोग मिल का ही खरीदते है। मुझे बड़ा आश्चर्य होता है कि जिन मिलों में इतनी पूँजी और इतनी अकल खर्च हो रही है, वे हिंदुस्तान को कितना कम कपड़ा देती हैं। इस ओर किसी का ध्यान ही नहीं है। पिछली लड़ाई के पहले हिंदुस्तान की मिलों में फी आदमी १७ गज़ कपड़ा तैयार होता था, अब लड़ाई के बाद याने दस साल बीत जाने पर फी आदमी १२ गज कपड़ा तैयार होता है। और इस साल कहा गया है कि हडताल आदि कारणों से कपड़ा और भी कम मिलेगा, करीब ११ गज़। १७ से १२ और १२ से ११। यह है मिलो का बारह साल का पराक्रम!

लोग दलील करते है, अब स्वराज्य आगया है तो मिलो को पूरा कपड़ा देना ही चाहिये। मै बहस में नहीं उतरता। मैं पूछता हूं क्या आज मिलें पूरा कपड़ा दे सकती है? मामूली धोती जोड़ा भी काले बाज़ार में आज १५) २०) रुपये मे मिलता है। काला बाजार क्यों होता है? कपड़ा थोड़ा है। श्रीमान लोग चाहे जितना दाम देने को तैयार होते है। इस लिये कपड़े की कीमत बढ़ती है और गरीब लोगों को पूरा कपड़ा नहीं मिलता।

इस हालत में लोग अगर खुद कातने लग जाँय और रोज का एक घंटा भी दे तो साल भर मे फी आदमी १५ गज़ कपड़ा तैयार होगा। मै कहता हूं आधा घंटा भी वे दें तो साढ़े सात गज

कपड़ा तैयार होगा। मिलों में बारह गज़ होता है उसमें यह साढ़े सात गज़ और बढ़ेगा तो देश को अधिक कपड़ा मिलेगा या नहीं? लेकिन यह सब बिना किये कैसे होगा? मैं विवाद में नहीं पड़ता। मिलों के जरिये अगर कपड़े का सवाल हल हो सकता है तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन जब तक ऐसा नहीं होता तब तक आप घर मे सूत कातेंगे तो देश की संपत्ति में वृद्धि होगी या नहीं?

आज की जरूरत

आपके एक गाँव ने अपना कपड़ा तैयार करने का संकल्प अगर किया तो बहुत बड़ा काम होगा। जो बात कपड़े पर लागू है वही दूसरी चीजों पर भी है। मै उम्मीद करता हूं कि जिन लोगो ने यहाँ कताई मंडल कायम किया है वे हारेंगे नहीं। खुद कातते रहेंगे, अपने मित्रों को सिखायेंगे, और इस तरह अपना मंडल बढ़ाते जायेंगे।

लोग कहते हैं, इस ज़माने मे अगर हम चरखे पर सूत कातेंगे तो पुराने ज़माने में चले जाते हैं।' मैं उनसे कहता हू 'पुराना ज़माना और नया ज़माना' इस बहस मे क्यो पड़ते हो? आज आपको कपड़ा चाहिये। मिले कपड़ा देती है, वैसे चरखा भी देता है। फिर चरखे पर सूत कातकर कपड़ा बना लेने में क्या हर्ज है? मैने सुना है पांढरकवड़े की आबादी पहले नौ हजार थी अब आठ हजार होगई है। यह एक हजार संख्या कैसे कम हो गई? तो कहा गया कि यहाँ मज़दूरी नहीं मिलती इसलिये

मज़दूर गाँव छोड़कर शहर में चले गये हैं। लेकिन वहाँ भी उनको क्या उद्योग मिलने वाला है? देश में जब तक उद्योग नहीं बढते हैं तब तक लोगों को मज़दूरी कैसे मिलेगी? स्वराज्य मिलने पर भी हम अगर आलसी रहे तो हमारा स्वराज्य भी सुस्त ही रहेगा। हम उद्योगी बनेंगे तभी स्वराज्य में लक्ष्मी रहेगी। लक्ष्मी का ऐसा बाना है कि वह उद्योगी पुरुष के घर में ही रहेगी। स्वराज्य आया है इसका अर्थ इतना ही है कि हमारी रुकावटे दूर हो गयी है, और काम करने की उमंग बढ़ी है। लेकिन एक बात साफ है कि देश का हरेक मनुष्य जब तक उत्पादन में हाथ नहीं बटायेगा तब-तक हमारे देश को सुख के दिन नसीब नहीं होंगे।

पाढरकवडा, (जि० यवतमाळ)
१२-३-५१

छठा दिन—

: १० :

नाम जैसा ही काम

पैदल यात्रा क्यों ?

अभी सर्वोदय संमेलन हैद्राबाद के नजदीक शिवरामपल्ली में होने जा रहा है। अगर इन दिनों रेल्वे से जाते हैं तो वर्धा से हैद्राबाद एक रात का रास्ता है। लेकिन हमने तो सोची पैदल-यात्रा। और उसमें भी कोशिश यह करते हैं कि बने जहा तक छोटे छोटे गावों में पहुंचें। अब लोग पूछ सकते हैं कि क्या आप रेलवे या विमान आदि नहीं चाहते हैं ? मै कहता हूं कि ऐसी बात नहीं है। उलटे मै तो आज से भी अधिक गति वाले विमान चाहता हूं। अगर घंटे भर मे हम दिल्ली जा सकें तो जरूर जायेंगे। लेकिन हर चीज का अपना स्थान होता है। ऐनक की चाहे जितनी भी महिमा गाई जाय तब भी आंख की महिमा से वह नहीं बढ़ सकती। ऐनक आख की मददगार है। लेकिन आंख की स्वयंभू महिमा है। वैसे हम विमान और दूसरे भी गतिमान साधन चाहते हैं। हमें उनसे नफरत नहीं है। फिर भी पांव की जो प्रतिष्ठा है सो है। पैदल-यात्रा के जो लाभ हैं वे विमान से हरगिज नहीं मिल सकते।

भारतवर्ष एक कैसे बना

हमारे पूर्वजों ने यात्राओं की महिमा बहुत गायी है। काशी-वाले को कहा कि तुमको रामेश्वर के दर्शन करने चाहिये। वैसे

तो काशी में भी गंगाजी है, विश्वनाथजी है। लेकिन उनके बावजूद काशीवाले की इच्छा होती है कि जिंदगी-भरमें कभी रामेश्वर हो आऊँ तो अच्छा है, और गंगाजी का पानी रामेश्वर के मस्तक पर चढाऊँगा तो धन्य होऊँगा। तो इधर रामेश्वरवाले को क्या लगता है? उसको शास्त्रकारों ने सिखाया कि समुद्र का पानी उठा लो और काशी ले जा कर विश्वनाथजी के मस्तक पर चढाओ। इस तरह काशीवाले को रामेश्वर की प्रेरणा और रामेश्वरवाले को काशी की प्रेरणा। दोनो के बीच पन्द्रह सौ मील का अंतर। रेलवे तो उन दिनों थी नहीं। तो पैदल-यात्रा की ऐसी प्रेरणा हमारे पूर्वजों ने दी थी, और हजारों लोग जिंदगी-भरमे प्राय. पैदल जाने की हवस रखते थे। उससे लोगों के दिल एक-दूसरे से एकरूप हो जाते थे। यह एक ऐसा तरीका उन्होने निकाला कि सारा भारतवर्ष एक बन गया।

पैदल-यात्रा में पारमार्थिक बुद्धि

आज हम देखते है कि इतने साधन बढ जाने पर भी देश में जातीयता बढ़ रही है, प्रांतों प्रांतों में वाद बढ़ रहा है। यह सब किस लिये हो रहा है? इसीलिए हो रहा है कि लोग ज्यादा स्वार्थी बने है। वे दूर दूर जाते हैं तो मतलब के लिये जाते है। कोई बंबई जाता है तो कोई कलकत्ता जाता है। रोज गाडी भर भर कर जाती है। लेकिन टिकट घर पर जा कर देखो क्या तमाशा दीखता है। किसी को किसी की दरकार नहीं होती। हरेक अपनी अपनी टिकट कटाने की धुन में होता है। एक दूसरे की पूछ परख करने को फुरसत नहीं

और एक दूसरे की परवाह भी नहीं। रेल की मुसाफिरी तो बहुत बढी है लेकिन उसके पीछे स्वार्थ है। अब पैदल अगर कोई मुसाफिरी के लिये निकलेगा तो क्या स्वार्थ ले कर जायगा। यहां तो काफी मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। और दिन भी बहुत जायेंगे। अगर पारमार्थिक बुद्धि है तो ही यह काम किया जायगा। और पारमार्थिक बुद्धि से होनेवाले लाभ स्वार्थी बुद्धि से कभी नहीं मिल सकते। कोई अगर विमान मे बैठ कर काशी या रामेश्वर पहुंच जाय तो यात्रा का जो फल है, उससे चित्त-शुद्धि की, देशनिरीक्षण की और जनता से एकरूप होने की अपेक्षा कभी नहीं पूरी हो सकेगी। इसलिए हमने सोचा कि हम अपने देशवासियों से मिलते-जुलते, उनसे बातचीत करते करते सर्वोदय संमेलन के लिये जायंगे।

नाम अच्छे हैं लेकिन काम अच्छे चाहिये

आप पूछेंगे भला यह सर्वोदय क्या चीज है? अच्छे अच्छे नाम तो आज कल बहुत चल पडे है। कोई अपने को समाजवादी कहते है। वे कहते है कि सारा समाज एक है और हम सारे समाज के सेवक हो जायेंगे। अपना अलग कोई व्यक्तित्व नहीं रखेंगे। निजी स्वार्थ जैसी कोई चीज नही। सारा समाज को समर्पण। इसका नाम है समाजवाद। कोई कहते है कि हम साम्यवादी है। सब के साथ समान व्यवहार होना चाहिये। न कोई ऊंच और न कोई नीच होना चाहिये। जाति का या अन्य कोई स्वार्थ नहीं होना चाहिये। सारा साम्य होना चाहिये यह हमारा उद्देश्य है। बहुत अच्छा उद्देश्य

है । साम्यवाद शब्द भी अच्छा है, समाजवाद शब्द भी अच्छा है। अब यह नया शब्द निकला "सर्वोदय"। यह भी अच्छा है। अच्छे शब्द तो बहुत निकले हैं लेकिन हमें काम अच्छे करने चाहिये तभी ये शब्द काम देंगे। नहीं तो वे हवा में रह जायेंगे। हमे तो इनको जमीन पर लाना है। सर्वोदय का मतलब है 'हरेक का भला।' याने एक का स्वार्थ दूसरे के स्वार्थ के विरोध में, या दूसरे की परवाह किये बगैर अपना स्वार्थ साधना यह बात नहीं होनी चाहिये। हम सब एक हैं और हम सब का उदय। यह है सर्वोदय का अर्थ। तो सर्वोदय में सब से जो पिछड़े हुए होते है उनकी फिक्र करना पड़ता है। इसीलिये हमने सोचा है कि हम छोटे-छोटे गाँव में पहुंचें और हो सके तो वहां मुकाम करे।

भारत की सभ्यता देहातों में ही

आखिर यह हिंदुस्तान है कहां ? हिंदुस्तान का प्रेम, भारत-माता का अभिमान, देशभक्ति आदि बातें हम सुनते हैं। लेकिन देशभक्ति याने क्या देश की जो मिट्टी होती है उसकी भक्ति ? वह तो जो हमारे देश मे है वैसी दूसरे देशों मे भी पड़ी है। भारतमाता की भक्ति का यही मतलब है कि अपने जो लाखों भाई देहातो में पड़े है उनकी भक्ति, उनकी सेवा, उनपर प्रेम। इन छोटे देहातों के इतिहास कौन लिखेगा ? बड़े शहरों के तो इतिहास लिखे जा चुके हैं। रोम एक बड़ी भारी नगरी हो गई। उसका इतिहास सुनो। लेकिन छोटे गांवों का इतिहास जब कोई लिखने बैठेगा तब उसको पता चलेगा कि ये गाँव दीखने में तो छोटे छोटे हैं लेकिन अति प्राचीन

काल से चले आ रहे हैं। ये देहात ही हिंदुस्तान की रगें हैं, असलियत हैं, आत्मा है। हिंदुस्तान की जो संस्कृति और सभ्यता है वह देहातों में देखने को मिलती है। आज भी हमारी पुरानी सभ्यता जितनी हम देहात में पाते हैं उतनी बड़े शहरों में नहीं पाते। एक मिसाल देता हूं। कल हमारी सभा एक शहर में हुई और आज की सभा देहात में हो रही है। कल की सभा में तो क्या शोर ही शोर मचा था। आज यहां भी छोटे बच्चे हैं लेकिन सारे शांति से सुन रहे है। ऐसा क्यो होता है? इसका कारण यही है कि प्राचीन काल से हमारी जो सभ्यता चली आ रही है उसका अंश देहातों मे मौजूद है। देहातों में आप देखेंगे कि वहां के लोग बहुत दीन बन गये हैं, खाने को भी उनको पूरा नहीं मिलता। लेकिन साथ साथ यह भी देखेंगे कि किसी के घर पर अगर भूखा आदमी पहुच जाय तो किसी-न-किसी तरह उसको खिला ही देते हैं। उसका आदर करते हैं। गरीब से गरीब के घर में भी अतिथि का सत्कार पहले से आज तक होता आया है। इसका अर्थ यही है कि भारत की संस्कृति और भारत की आत्मा देहात में है। देहातों के काम करने के औजार भी करीब करीब पुराने जमाने के ही है। पुराने जमाने का ऋषि अगर आज देहात में आ जाय तो देहातियों की पोषाक में वह जरूर फरक देखेगा, लेकिन उसके जमाने की भावना का अंश वह आज देहातो में जरूर देखेगा, इसमें संदेह नहीं है।

देहात की करुण हालत

लेकिन आज इन देहातों मे किसी को कुछ आकर्षण ही नहीं है। न यहा कोई मजा है, न यहां कोई सिनेमा है और न और कोई समाँ है। यहां कुछ है ही नहीं। शहर का आदमी यहां आता है तो कहता है यहां कुछ सूझता ही नहीं। देहातों में से भी बुद्धिमान लोग शहर में जा कर रहने लगे हैं। अगर कभी देहात में आते है तो उनकी जो कुछ इस्टेट यहां पड़ी होती है उसको देखने या यहां से कोई चीज उठा ले जाने के लिये आते है। लेकिन अपनी सारी अकल वह शहर को समर्पित कर देता है। अगर इस तरह देहात का धन, देहात की अकल शहर मे चली जाय तो सारे देहात कंगाल हो जायेगे और मिट जायेगे। शहरो की आबादी बढ़ रही है। बीस साल पहले वर्धा शहर बीस हजार आबादी का था। अब कहते है कि चालीस हजार का हो गया है।

देहात का सर्वांगी विकास

इसलिये सर्वोदयवालों का काम है देहात की चिंता करना, उनकी देख-भाल करना। यह किस तरह होगा? देहातियों के जो उद्योग है वे उनके हाथ में रखने चाहिये। देहात के कुछ उद्योग ऐसे है जो उनके हक के है। वे अगर उनसे कोई छीन लेगा तो उसके खिलाफ बगावत करनी चाहिये और कहना चाहिये कि ये हमारे उद्योग है, हम नहीं छोड़ेंगे। जिन उद्योगों का कच्चा माल देहात मे होता है उनका पक्का माल करने का उद्योग देहात में ही होना चाहिये। सिर्फ किसानी से याने

खेती से किसानों का कारोबार नहीं चलेगा। खेती के साथ गोसेवा का काम, कपड़ा बनाने का काम, कोल्हू चलाने का काम, गुड़ बनाने का काम, मकान बनाने का काम, यह सारा देहात में बनना चाहिये। ऐसा होगा तभी देहात ताजा-तवाना होंगे और दुनिया के सामने हिंदुस्तान हिम्मत के साथ खडा रहेगा।

देशकी की रक्षा देहाती ही कर सकेंगे

देहात अगर क्षीण होते गये तो अपने देश की रक्षा सिर्फ शहरवालों के भरोसे नहीं हो सकेगी। देश के लिये मर मिटने का प्रश्न आयेगा तब देहात के लोग ही मरने के लिये तैयार होंगे। क्योंकि अपने वतन का खेती का अभिमान और उसकी रक्षा करने की तीव्र वासना देहात को ही हो सकती है। क्योंकि देहातवाले जमीन से चिपके हुए हैं। हिंदुस्तान जैसा देश अपनी रक्षा के लिये अगर सिर्फ शहरवालो पर निर्भर रहा तो खतरे मे रहेगा। इसकी रक्षा तो देहातियों से ही होगी। इसलिये सर्वोदय वालों ने यह संकल्प किया है कि हम देहातियो की सेवा करेंगे। और यही आप को कहने के लिये मैं आपके सामने उपस्थित हुआ हूं। भाइयो, सर्वोदय का विचार देहातियो की दृष्टि से थोड़े मे मैने आपके सामने रख दिया है।

पाटणबोरी, (जि० यवतमाळ)
१३-३-५१

सातवाँ दिन—

: ११ :

आत्म-जाग्रति से ही दुख मिटेगा

हरिनामसकीर्तन का कार्यक्रम

आप लोग शायद जानते है कि हम लोग पैदल निकल पड़े हैं और हैद्राबाद में सर्वोदय समेलन के लिये जा रहे हैं। जब मैंने पैदल चलने का सोचा तो एक भाई ने पूछा, "एक दिन के काम के लिये आप एक महीना लगा रहे है तो इस बीच आपका क्या कार्यक्रम रहेगा।" मैंने जवाब दिया, "मेरा कार्यक्रम तो यही रहेगा कि मैं हरिनाम लू और सब को लेना सिखाऊं।" यह जवाब मैंने इसलिये दिया कि मैं अपने में सिवा राम-नाम लेने के और कोई ऐसी ताकत नहीं देखता हू कि जिससे आपका काम बन सके।

अनेक धर्म, अनेक उपासनायें

आज हमारे देश के सामने बहुत बड़ी समस्याये है। यह आश्चर्य की बात भी नहीं है। हमारा देश बहुत बडा है। फिर हमारी आजादी को भी अभी कितने साल हुए है? जिम्मेवारी एकाएक आ पड़ी इसलिये हमारे देश की नौका गहरे पानी में आ पड़ी। इन सबका हल एक राम-नाम के सिवा और किसी मानवी प्रयत्न में है, ऐसा मै नहीं मानता हूं।

आखिर हरिनाम का क्या मतलब है ? जो हरिनाम लेगा वह और कोई नाम नहीं ले सकता। हमारे संतों ने हमें सिखाया है कि भाई, परमेश्वर की उपासना और पैसे की उपासना दोनों बाते साथ नहीं चल सकतीं। यदि आप अपने मन में परमेश्वर को स्थान देते है तो फिर दूसरी किसी चीज को आपके मन में स्थान नहीं हो सकता। हमारे यहां कई प्रकार के भेद पड़े हैं। इन्होंने हमारा रास्ता रोक रखा है। अगर ये मिटते है तो हमारा रास्ता साफ हो जाता है, और देश एक हो जाता है। हमारे देश मे धर्म अनेक है यह बात दुख की नहीं है बल्कि सौभाग्य की है। जहां अनेक धर्मो की सम्मिलित उपासना होती है वहां धर्मो की यह विविधता देश के विकास में मददगार ही होती है। हिंदुस्तान के विकास में यहा के विविध धर्मों ने काफी मदद पहुंचाई है। भिन्न भिन्न धर्मो के जरिये एक परमेश्वर का नाम हम लें तो हजारों भेद मिट सकते है।

हरिनाम में भेद मिटाने की शक्ति

एक दूसरे की भाषाओ का हमें अध्ययन करना चाहिये। हमारे विविध साहित्यों में अनेक खूबियां भरी हैं। लेकिन यहां तो एक दूसरे की भाषा का भी द्वेष शुरू हुआ है। कोई भी साहित्य द्वेष पर नहीं टिक सकता। इसी तरह प्रांत-भेद, प्रदेश-भेद, पक्ष-भेद भी हम में है। हिंदुस्तान मे दुख तो सब तरफ पड़ा है। हमें जरूरत है सिर्फ सेवा में लग जाने की। पक्ष भेद आदि से सुरक्षित रहने की तरकीब अगर कोई है तो वह भगवान का नाम ही है। मैं लोगों को यह सुनाऊंगा कि हम सारे भगवान के पैदा किये है। के

परमपिता हैं और हम सब उनके पुत्र है। हम अगर आपस मे लड़ेगे तो उनको बहुत दुख होगा। "अमृतस्य पुत्राः" सब के सब अमृत के पुत्र हैं। देह को क्या देखते हो? आखिर सब को खाक मे ही मिलना है। फिर कौन सी खाक ब्राह्मण की है, कौनसी हरिजन की है या और किसी की है, यह पहचाना भी नहीं जायगा। आत्मा एक है, उसीका ध्यान रखो। हम देह मे इसीलिये आये है कि अपने पड़ोसियों की, दीनो की और सबकी सेवा हम करे और परस्पर प्रेम करें। इसी मे मानवदेह की सार्थकता है। और यही हरिनाम का अर्थ है।

और जो हरिनाम लेनेवाले है उनको सेवा मे लग जाना है। पानी निकलता है समुद्र की ओर जाने के लिये; लेकिन रास्ते मे जो कुछ सेवा वह कर सकता है करते हुए जाता है। समुद्र तक पहुचने मे अगर वह कामयाब रहा तो वहा तक पहुच जाता है! अगर न पहुच सका तो रास्ते मे ही खतम हो जाता है। वैसे हमारी कोशिश यही होनी चाहिये कि हमारी जो भी ताकत है उससे हम दीन-दुखियो की सेवा करे।

दोनों हाथों का उपयोग करे

वैसे हिंदुस्तान मे क्या कम है। जमीन पड़ी है, कितनी ही नदिया है, फिर भी हम भीख मांगते है। न खाने को अन्न है और न पहनने को कपड़ा। मेरी समझ मे नही आता कि परमेश्वर ने हमे दो हाथ दिये है तो हमे हाथो से काम करने में क्या आपत्ति है? मानव की ही यह विशेषता है कि उसको भगवान ने दो हाथ

दिये है, जिससे कि वह कर्मयोग साध सके। स्वर्ग मे देवता सुख ही सुख भोगते है, तो पृथ्वी पर जानवर दुख ही दुख भोगता है। जहां केवल भोग ही भोगना है वहां योग कैसे सधेगा? मनुष्य योनि मे कर्मयोग की साधना हो सकती है इसीलिये देव योनि और पशु योनि से मानव योनि श्रेष्ठ समझी गयी है। तो भगवान ने हमें दो हाथ दिये यह उसकी बहुत बडी देन है। उनका हम उपयोग करेंगे तभी हमारे दुख मिटेंगे।

स्वराज्य के सही माने क्या हैं ?

लोग कहते है स्वराज्य आ गया। क्या किसी पार्सल से आया है? स्वराज्य तो अपना निज का होता है। अपनी कमाई का होता है। स्वराज्य आया इसका अर्थ इतना ही है कि उजाला हो गया। अब काम करने मे सहूलियत हो गई। लेकिन हम अगर काम ही न करें तो सिर्फ उजाले से क्या होनेवाला है? स्वराज्य नहीं था तब हम जिम्मेवारी अधिक महसूस करते थे। अब सभी कहने लगे है कि सब कुछ सरकार को ही करना चाहिये। मैं पूछता हू कि सरकार आप से भिन्न है क्या? आप जिसे चाहते हैं उनको वोट दे कर चुन लेते है। आप अगर मजबूत बनेंगे तो आप-की सरकार मजबूत बनेगी। और आप दुर्बल रहे तो आप की सरकार भी दुर्बल ही रहेगी।

लोग कहते है कि अब तक हमने बहुत काम किया अब कुछ आराम करने दो। मैं कहता हूं आराम कैसा? क्या पौर्णिमा आ गई है? अभी तो अमावस्या खतम हुई है और चांद धीरे धीरे

बढ़ेगा। कुछ लोग कहते हैं अब तक हमे कॉंग्रेसवालों से आशा थी अब आप सर्वोदयवालों पर आशा रखी है। यह कितना बड़ा भ्रम है। सर्वोदय समाज कोई अमृत की पुड़िया तो नहीं है जिसे खा लिया और सर्वोदय अपने आप हो गया। हमको ऐसा व्रत लेना होगा कि हमारे जीवन के लिये हम दूसरे की सेवा नहीं लेंगे, बल्कि हो सकेगी उतनी दूसरे की सेवा करेंगे। ऐसा जो करते है वे सर्वोदय-समाज के सेवक बनेंगे। सर्वोदय-समाज सब का है। वह किसी प्रकार की शहादत नहीं मांगता। जो कहता है कि मुझे सर्वोदय समाज के उसूल मान्य हैं वह सर्वोदय समाज का सेवक है। कोई शराबी भी अगर सर्वोदय की बात मान कर शराब पीना कम कर देता है तो वह भी सर्वोदय-समाज का सेवक है।

आत्मा की पहचान ही सब दुख दूर करेगी

किसी ने मुझे बताया कि ढाई साल पहले यहा रजाकारों का बहुत जुल्म था। अब वह चला गया है फिर भी हमें दुख है। ऐसा होता ही है। जब तक मनुष्य की निज की आत्मा जाग्रत नहीं होती तबतक एक दुख मिटता है तो दूसरा शुरू होता है, पेशवाओं के राज मे लोग दुखी थे। उनके बाद अंग्रेजो का राज आया। उनका पहला गवर्नर माउंट एलफिन्स्टन हुआ। उसकी व्यवस्था मे हमारे लोगों ने सुख समझा। लोगो ने देखा कि सारे काम इनके जमाने में समय पर चलते है, व्यवस्था अच्छी है। राज कानून से चलता है। यह सब देख कर लोग बड़े खुश हुये, लेकिन थोड़े ही दिनो में लोग दुखी हो उठे। डाक्टरी इलाज का

ऐसा ही है। एक बीमारी के लिये दवा देते हैं, वह बीमारी अच्छी हुई ऐसा लगता है इतने मे दूसरी बीमारी शुरू होती है। हिंसा में ऐसा ही होता है। रजाकारों से हमको किसने छुड़ाया। पुलिस ने और हथियारों ने। उससे हम तो पराधीन ही रहे। जीवन में कुछ परिवर्तन ही नहीं आया। इस तरह से जीवन सुखी नहीं होगा।

सर्वोदय के कार्यक्रम में रस क्यों नहीं?

लोग कहते हैं कि सर्वोदय के कार्यक्रम में रस नहीं आता। तो अब मै क्या प्रोग्राम बताऊं? पाकिस्तान से लड़ाई छेड़ने का प्रोग्राम दूं? लड़ाई के नाम से लोगो में उत्साह आता है, लेकिन वे यह नहीं सोचते कि फौज पर देश का पचहत्तर फी सदी से अधिक खर्च होता है। तो फिर गरीबों की सेवा कैसे कर सकेंगे?

सारे मानव-सेवक बनें

भाइयो, मुझे इतना ही कहना है कि आप सब भेद भूल जाँय। आड़े गंध और खड़े गंध, भस्मी और बिना भस्मी, सर्वोदय वाले और बिना सर्वोदयवाले ये सब भेद मिटा कर आप एक भाव रखिये कि मैं मानव हूं और मानव का सेवक हूं।

आदिलाबाद (निजाम स्टेट)
१४-३-५१

आठवाँ दिन—

: १२ :

भगवान का ही काम और नाम

रास्ता छोड कर क्यों आया ?

मैं तो जा रहा था वर्धा से हैद्राबाद। लेकिन रास्ता छोड़ कर इधर आपके गाँव की तरफ आ गया। उसका कारण यह है कि इधर माडवी मे कस्तूरबा ग्रामसेवा केंद्र है। महात्मा गाधीजी की धर्मपत्नी कस्तूर बा का नाम तो आप सबने सुना ही है। उनके स्मरण मे जगह जगह संस्थायें खोली गई है जो ग्रामीण स्त्रियों की सेवा कर रही है। माडवी मे जो बहन काम कर रही है उसने इच्छा प्रकट की कि मै उसका काम देखने के लिये वहाँ जाऊं। इसलिये मै वहाँ जा रहा हू।

आपके कामों से प्रसन्नता

मुझे यहाँ इस बात की बहुत खुशी हुई कि आप लोगो ने भगवान के भजन सुनाये। इतने छोटे से गाँव में हरि-चर्चा रोज चलती है यह बहुत अच्छी बात है। हरि-चर्चा हर गाँव मे चलनी चाहिये और रोज चलनी चाहिये।

दोपहर को मै आपके गाँव मे घूम आया। लोगों के घरों में भी हो आया। सौ साल की एक बूढी स्त्री मिली। उसे बड़ी खुशी हुई।

आपने एक बड़ा अच्छा काम किया है। यहाँ का कुआँ और हनुमानजी का मंदिर सबके लिये, हरिजनों के लिये भी, खोल दिया है। यह काम मुझे बहुत अच्छा लगा। भगवान के सामने भेद-भाव रखना गलत बात है। हरिजनों के साथ छूत-छात रखना और उन्हें मंदिरों में आने से रोक-टोक करना अच्छी बात नहीं है। इसलिये आपने जो काम किया है वह बहुत अच्छा है।

फिर आप लोगों ने पानी आदि का छिड़काव देकर यह प्रार्थना की जगह साफ कर ली यह भी बहुत अच्छा किया। इससे आप लोगो को शिक्षण भी मिला।

पशु बलिदान गलत चीज

मैंने सुना कि यहाँ आप लोगो के दो देव है। एक हनुमानजी हैं और दूसरी है पोचम्मा देवी। यह देवी कौन हैं? उसे तो मुरगी चाहिये। बकरा भी चाहिये। क्या अपने बच्चों को खानेवाला भी कोई देव हो सकता है? इसलिये आप एक ही देवता की पूजा करें। और सब देव झूठे है। उसके नाम पर बकरे और मुरगी काटना धर्म नहीं हो सकता।

बुनकर क्यों नहीं ?

मैंने और एक बात देखी। इस गाँव में बढई, लुहार, चमार कुम्हार तो हैं। लेकिन बुनकर नहीं है। मैं परेशान रह गया। कपड़ा तो आप सबको चाहिये। बच्चे, बूढे, स्त्री, पुरुष सबको। इतने पुरुष यहाँ बैठे हैं सब कपड़ा पहने हैं। लेकिन सारा कपड़ा खरीदा

जाता है यह शरम की बात है। गाँव का धन इस तरह बाहर भेजना ठीक नहीं है। मैंने यह भी सुना कि यहाँ स्त्रियाँ दोपहर मे खेती पर नहीं जातीं। सिर्फ सबेरे ही खेत पर जाती हैं। याने उनके पास वक्त रहता है। उन्हें कातना सिखाया जाय तो वे कातेंगीं। भगवान ने मनुष्य को दो बड़ी भारी शक्तियाँ दी हैं। एक वाणी, दूसरी हाथ। वाणी से भगवान का नाम लेना चाहिये, हाथ से भगवान का काम करना चाहिये।

वैसा आप करेंगे तो आप जो भजन करते है वह कृतार्थ होगा। भगवान आप सबको ऐसी प्रेरणा दें, ऐसी प्रार्थना है।

कुचलापुर अर्थात् कौशल्यापुर
१५-३-५१

नौ वां दिन—

: १३ :

लघु-आरंभ का दीर्घ-फल

ग्रामसेविका का प्रेमाग्रह

मै आज यहां आदिलाबाद से आया हूं। वर्धा से हैद्राबाद जा रहा हूं। आप का गाँव रास्ते में तो नहीं था लेकिन आपके यहां की सेविका पार्वती का आग्रह रहा। उसने कहा, "हम यहां देहात में काम कर रहे है। आप अभी न आये तो फिर कब आयेंगे कह नहीं सकते। इसलिये अभी ही चलिये।" मैंने सोचा हमारी लाडली लडकी आग्रह कर रही है तो हो आऊं। इससे मुकाम पर पहुंचने में चार दिन देर हो जायगी।

यह काम एक बडे वृक्ष का पौधा है

यहा की बालवाडी और आरोग्य केंद्र आज सुबह हम देख आये। यह केंद्र छोटा है लेकिन वह पौधा है। ज्ञानदेव कहते है, "इवलें से रोप लावियेलें द्वारी त्याचा वेल गेला गगनावरी" छोटा-सा पौधा लगाया था लेकिन उसकी बड़ी बेल बन कर सारे आकाश पर छा गई। वैसे ही छोटे पौधे की अगर आप लोग ठीक देखभाल करेंगे तो उसको आगे फूल और फल लगेंगे। बच्चा पैदा होता है तब छोटा होता है। लेकिन माँ जानती है कि वह

आगे चल कर बड़ा होनेवाला है और उसकी हिफाजत करती है, उसकी सेवा करती है। वैसे आप भी इस केंद्र की कीजिये।

कस्तूरबा की महत्ता

इस केंद्र का नाम है कस्तूरबा ग्रामसेविका केंद्र। कस्तूरबा गांधीजी की पत्नी थी यह तो आप जानते ही हैं। जैसे गांधीजी पढ़े लिखे थे वैसी कस्तूरबा नहीं थीं। लेकिन उनका भाग्य बड़ा था। गांधीजी और कस्तूरबा ये नाम आज जैसे सार्वभौम हो गये हैं वैसे ही वसिष्ठ और अरुंधती के नाम थे। आज भी विवाह-विधि में वधू और वर को उत्तर दिशा की तरफ मुंह करके खड़ा करते हैं और अरुधती की तरफ इशारा करते हैं। उत्तर दिशा में वसिष्ठ का तारा है और पास ही चार अंगुलियों के फासले पर अरुंधती का छोटा-सा तारा है। इन दो तारकाओं के दर्शन करके उनको नमस्कार कराने की विधि आज भी विवाह मे चलती है। कौन वसिष्ठ और कौन अरुंधती? लेकिन वसिष्ठ के साथ अरुंधती का नाम भी अमर हो गया है। देह के पास छाया होती है। लेकिन मनुष्य छाया की ओर ध्यान नहीं देता है। फिर भी छाया मनुष्य को छोड़ती नहीं है। अरुंधती का ऐसा ही था। उसका व्रत था कि पति के साथ रहना, सुख में या दुख में। वह संकट में पड़ेगा तो उसके पीछे संकट में पड़ना, और वह स्वर्ग में जाय तो उसके पीछे स्वर्ग में जाना। कहीं न ठहरते हुए जाना इसी व्रत के कारण तो उसका नाम "अरुंधती" पड़ा। ऐसा ही दूसरा नाम सीता का है। हम "राजा राम" के साथ साथ "सीता राम" भी कहते हैं।

रामचद्रजी वनवास के लिये निकले तो वह भी उनके पीछे निकली। रामचद्रजी ने कहा, "पिताजी ने तुझे तो वनवास नहीं कहा है।" सीता ने जवाब दिया, "आप सुखोपभोग के लिये कहीं निकलते तो शायद मै न आती, लेकिन आप जंगल मे जा रहे हैं इसलिये मैं आये बगैर नहीं रहूंगी।"

इन उदाहरणों के जैसे ही गांधीजी और कस्तूरबा थी। जहां जहां गांधीजी गये वहां वे गयीं। और आखिर सरकार के साथ सत्याग्रह के युद्ध मे लड़ते हुए गांधीजी के साथ जेल गयीं और वहीं गांधीजी की गोद मे उन्होने प्राण छोड़ दिये। कस्तूरबा के स्मरणार्थ यह काम शुरू हुआ है। तो आप लोग इस काम में सहयोग दें और इस केंद्र से लाभ उठाये ऐसी मेरी आप से प्रेमपूर्वक प्रार्थना है।

माडवी, (जि. आदिलाबाद)

१६-३-५१

दसवां दिन—

: १४ :

सेवा ही तीर्थ-यात्रा है

गाँव की फिक्र गाँववाले ही करें

मैं आज आपका गाँव घूम आया। यहा काफी शक्ति है। दो-चार घरों मे कातना चलता है। हर घर मे क्यों नहीं चलता? आपके गाँव में कपास बहुत होती है। पहले हमारे यहां सब कातते थे और खेती भी करते थे। तब खेती ज्यादा थी और लोग कम थे। इसलिये खेती में ज्यादा समय जाता था। आज खेती कम है और लोग ज्यादा हैं। फिर कातने के लिये समय क्यों नहीं मिलेगा? मैं आप लोगों को दोष नहीं देना चाहता। यह स्थिति हर गाँव में है। इसे बदलने के लिये हर गाँव में कार्यकर्ता चाहिये। अब कार्यकर्ता हर गाँव मे बाहर से कैसे आयेंगे? इसलिये गाँव में से ही कार्यकर्ता निर्माण होने चाहिये।

हम लोगों को एक आदत पड़ गई है कि हम अपने परिवार के बाहर नजर नहीं देते। घर का कचरा पड़ौसी के दरवाजे पर डालते है। घर के बरतन साफ रखेंगे लेकिन गाँव का कुआ साफ नहीं रखेंगे। सोचते हैं कि वह तो सब का है मै क्यों फिक्र करूं? लेकिन चेचक एक को भी हो जाय तो सारे गाव में फैलती है। इसलिये सारा गाँव मेरा और सारे गाँव वाले मेरे इस तरह सोचेंगे तो

गांव वैकुंठ बन जायगा। लेकिन आज तो मैं इतना ही चाहता हूं कि हर गांव में कम-से-कम एक कार्यकर्ता निर्माण होना चाहिये। हिंदुस्तान में यह खूबी है कि जिस गांव में कोई अच्छा आदमी होता है उसके पीछे लोग चलते हैं। मांडवी में अभी मैं गया था। वहा एक अच्छे भाई है तो लोग उनके पीछे जा रहे हैं। आप से मेरी प्रार्थना है कि आप अपने गांव के बारे में आज से ही सोचना शुरू करें। जिस गांव में लोग सारे गांव का नहीं बल्कि सिर्फ अपने बारे में ही सोचते हैं वह गांव नहीं बल्कि स्मशान है।

दुखियों की सेवा कीजिये

लोगों को एक ही स्थिति मे समाधान नहीं होता। मन की शांति के लिये वे तीर्थ-यात्रा करते हैं। लेकिन हम अगर एक दूसरे की सेवा करेंगे और चिंता करेंगे तो तीर्थ-यात्रा की जरूरत नहीं रहेगी। खाने का आनंद तो पशु को भी होता है। लेकिन खिलाने का संतोष मनुष्य को ही होता है। आपके गाँव में एक भी दुखी आदमी नहीं रहना चाहिये। दुखी आदमी किस जाति का है यह भी नही देखना चाहिये। दुखी लोगों की अलग जाति नहीं होती। वह दुखी है यही उसकी जाति है। वैसे ही पुण्यवान लोगों की भी जाति नहीं होती। आप ने सुना है कि साधु संत सब जातियों में हो गये। हम महात्माओं की जाति नहीं देखते। सब महात्मा महात्मा हैं। वैसे सब पापी पापी ही हैं। मरने के बाद परमात्मा यह नहीं पूछेगा कि तुम ब्राह्मण हो या

रेड्डी। वह यही पूछेगा कि तुमने पाप किया है या पुण्य। यह जो ढबू पैसा आप कमा रहे है वह साथ नहीं जानेवाला है। इसलिये जिसके पास जो भी धन है वह लोगो की सेवा में लगा दे। तभी आप भगवान के सामने खडे रह सकेंगे।

तलमगु (जि० आदिलां)
ता० १७-३-५१

ग्यारहवाँ दिन—

: १५ :

ग्रामोद्योग न छोड़ें

पक्के रास्ते के खतरे

हम लोग वर्धा से हैद्राबाद पैदल जा रहे है। आप लोग भी यात्रा के लिये जाते है। यात्रा के लिये पैदल ही जाने का रिवाज है। हमारा रास्ता तो आदिलाबाद से इस गाँव से हो कर जाता है। लेकिन रास्ता छोड़ कर मै माडवी हो आया। आदिलाबाद जिले में जंगल ज्यादा है। देहातों के रास्ते भी अच्छे नहीं है। बहुत लोगो को लगता है कि अच्छे रास्ते न होना बड़े दुःख की बात है। शहर वाले सोचते है कि रास्ते अच्छे बनाना ही पहली सुधार की बात है। हमारे गॉव वाले भी भोले होते हैं। कहते हैं कि हां रास्ते बनने चाहिये। लेकिन मै सोचता हूं कि देहातों में रास्ते बन जायेगे तो उनका कल्याण होगा या अकल्याण? रास्ता अच्छा बन जाता है तो सुभीता हो जाता है सही। लेकिन किन लोगों का सुभीता होता है? सब से ज्यादा सुभीता शहरवालों को होता है। वे यहां आसानी से आ सकते हैं और देहातों को लूट सकते हैं। देहातों में रास्ते नहीं बनने चाहिये, यह मुझे नहीं कहना है। लेकिन रास्ते बनने पर क्या आपत्ति आती है यह मैं समझा रहा हू। आप के नजदीक के एक गांव में मै कल घूम आया था।

वहां मैंने देखा कि कई उद्योग चल रहे हैं। रंगारी का काम चल रहा था। वहां रास्ता अच्छा नहीं था इसलिये वह रंगारी का धंधा चल रहा है। लेकिन रास्ता पक्का बन जाने के बाद रंगारी का धंधा जिंदा नहीं रहेगा। कुछ देहातो में चरखे चलते हुए भी देखे। लेकिन मोटर-रोड हो जाने पर वे कहीं भी दिखाई नहीं देंगे। कुछ घरो मे हाथ की चक्की चलती हुई देखी। मैं बहुत खुश हो गया। लेकिन रास्ता बनने के बाद कोई पूंजीवाला यहां आ कर मिल की चक्की शुरू कर देगा और सारे देहात वाले अपनी चक्कियाँ छोड़ कर उस मिल के गुलाम बनेंगे।

पीसने का व्यायाम

एक गॉव की बात है। वहा एक मुसलमान रहता था। उसकी बीबी बीमार हो गई। उस आदमी की मुझ पर श्रद्धा थी। उसने मुझे बुला लिया और क्या इलाज करना चाहिये इसके संबंध मे मेरी सलाह मांगी। मैंने देखा कि उस बहन को सिवा बदहजमी के और कोई बीमारी नहीं है। मैंने पूछा कि घरमें आटा कौनसा आता है? जवाब मिला कि मिल का आता है। फिर मैंने सलाह दी कि आप एक चक्की घर में लगा दीजिये और बड़ी फजर उठ कर थोड़ा पीसते जाइये। उस आटे की रोटी खाते जाइये। सारा रोग दूर हो जायगा और आज से दुगुनी भूख लगेगी। उसने वैसा ही किया। वह बहन धीरे धीरे चक्की पर पीसने लगी। पंद्रह-बीस दिनों के बाद मैं उस बहन को देखने गया और पूछा कि अब तबियत कैसी है? तो उसने जवाब दिया कि अच्छी है।

हाथ के आटे की रोटी जब से खाना शुरू किया तब से भूख बढ़ी। रोटी भी बहुत बढ़िया लगती है। पीसने का व्यायाम होता है तो तबियत भी अच्छी रहती है। लेकिन मोटर-रोड बनने पर मिल आते ही हम हाथ से पीसना बंद कर देते है। हम आलसी बनते हैं। कौन जल्दी उठेगा? फिर मिल सस्ता भी तो पीस देती है। लोग अब छः बजे उठने लगे हैं।

रास्ता होने पर भी उद्योग न छोड़ो

रास्ते आज नहीं कल होने ही वाले हैं। बिना रास्ते के यह जिला पिछड़ा हुआ माना जायगा। लेकिन रास्ते होने पर भी आप अपनी अकल कायम रखेंगे तो आपका कोई कुछ नहीं बिगाड सकता। मै आपको एक हिसाब बताता हू। आप सबके बदन पर कपड़ा है। यह सारा आप मोल लेते है। हर आदमी के पीछे रोज की आधा सेर ज्वार हम पकड़ें और एक कुटुंब मे पांच आदमी पकड़ें तो साल भर मे पांच खंडी ज्वार लगेगी। साठ रुपये खंडी का भाव पकड़ें तो तीन सौ रुपये हो गये। अब कपड़े का हिसाब करें। एक कुटुंब के लिये आज के भावसे, ब्लैक मार्केट के कारण सौ रुपये का कपड़ा साल भर में लगता है। याने ज्वार के बाद कपड़े का ही खर्च अधिक होता है। अब यह सारा कपडा अगर हम बाहर से खरीदेंगे तो हमारी गृहस्थी कैसे चलेगी और दारिद्र्य भी कैसे मिटेगा?

आप जरा सोचें कि हमने पहले क्या किया था! हिंदुस्तान की मिलो से योरप की मिलों का कपड़ा बहुत सस्ता बिकता था।

यहां की मिलों का कपड़ा पड़ा रहने लगा। तब हमने विलायत के कपड़े का सस्ता होते हुये भी बहिष्कार किया। तो अब हम भी मिल का कपडा, सस्ता होने पर भी, नहीं लेंगे ऐसा व्रत क्यों नहीं लेते? ऐसा व्रत अगर नहीं लेगे तो फिर देहात मे कौनसा उद्योग रहेगा? सारे देहात के उद्योग अगर शहरवाले छीन लेगे, और हम भी तुल्य बन कर कहेंगे कि बहुत अच्छा हुआ सस्ता मिलने लगा, आप शहरवाले सेवा ही कर रहे हैं, तो फिर अनाज भी बाहर से लेने लगेगे क्या? कुछ लोग तो आज कह भी रहे है कि अनाज पैदा करने की अपेक्षा तंबाकू पैदा करना अधिक फायदेमंद है। लेकिन तंबाकू से यद्यपि पैसा मिलेगा फिर भी अन्न कैसे मिलेगा? खाने के लिये अन्न चाहिये इसलिये वह गॉव मे ही पैदा करना चाहिये। उसी तरह पहनने के लिये कपड़ा चाहिये तो वह भी गांव में ही तैयार करना चाहिये। घर मे कपास होती है। उसको धुन कर पूनी बना लेनी चाहिये। घर मे ही कातना चाहिये और बुनना भी घर में ही चाहिये। बुनना कोई कठिन काम नहीं है। ऐसा होगा तो किसान के घर मे उद्योग दाखिल होगा और उसका घर सुखी होगा। फिर झगडे भी नहीं होंगे।

आज जहां देखो वहां झगडे ही झगड़े है। खाने को पूरा नहीं मिलता इसके कारण ये सब झगड़े है। हमें जो चीजें हर रोज लगती हैं वे अगर हम घर पर ही तैयार कर लेंगे तो हमें कोई लूटेगा नहीं और हम भी किसी को लूटेंगे नहीं। लेकिन इसके लिये पराक्रम करना पड़ेगा।

हाथ-चक्की के चार फायदे

मेरी आप से प्रार्थना है कि रास्ते होने पर भी आप अपने घर के उद्योग मत छोड़िये। आटा घर पर ही पीसिये। मिल हो जाने पर भी वहां नहीं पिसायेंगे ऐसी शपथ लीजिये। आप कहेंगे दो ही पैसे में पिस कर मिलता है। लेकिन रोज के दो पैसे याने महीने में एक रुपया और साल भर में बारह रुपये हो जाते हैं। आप का गांव ढाई सौ घरों का होगा तो साल भर में तीन हजार रुपये चले जायेंगे।

दूसरी बात यह होगी कि रोज का आपका व्यायाम चला जायगा। आज अपने देहात के लोग कमजोर है। और पीसने की आदत छूट जायगी तो बाद में वह काम बहुत कठिन मालूम होगा।

तीसरी बात यह कि मिल का आटा हम छः-छः दिनों तक खाते रहेंगे। ताजे आटे में और हाथ-चक्की पर पीसे हुए में जो ताकत है वह मिल के और बासे आटे में नहीं है।

चौथी बात यह कि हम आलसी बनेंगे, देर से उठेंगे। आज जो भगवान का नाम लेते हैं वह भी नहीं लेंगे। मुझे याद है कि मेरी मा सुबह जल्दी उठ कर करीब घंटा भर पीसती थी। और पीसते हुए भगवान का नाम लेती थी। हमारे संतों ने चक्की पीसते हुए गाने के लिये भजन और अभंग बनाये हैं। मेरी मां तुकाराम का अभंग गा कर पीसती थी। "पहिली माझी ओवी ओवीन जगत्र गाजीन पवित्र पांडुरंग"....(यह अभंग विनोबाजी ने पूरा गाकर सुनाया)।

तो अगर चक्की बंद हुई तो ऐसे भजन भी बद हो जायेंगे। इसलिये मुझे आप को सावधान करना है। आप की सेवा करने के बहाने बाहर से लोग आयेंगे और आप लूटे जायेंगे इसलिये आप अपने गाँव के धंधों को कभी भी मत छोडिये यही मुझे कहना है।

गुडी हतनूर, (जि० आदिलाबाद)
१८-३-५१

बारहवां दिन—

: १६ :

व्यापार सेवा के लिए

हिंदुस्तान के बाजार का बिगड़ा रूप

आप इतने लोग दूर दूर के गावों से यहा इकट्ठे हुए है यह देख कर मुझे खुशी होती है। मुझे इस गांव की कोई जानकारी नहीं थी। लेकिन जिन लोगोंने कार्यक्रम तय किया उन्होंने यहा का मुकाम रखा, और यह अच्छा ही हुआ। क्योंकि आज यहां का बाजार था। दुनिया भर में बाजार कैसे चलता है वह तो दुनिया जाने! लेकिन हिंदुस्तान मे जहॉ बाजार भरता है वहां झूठ ही झूठ का बाजार होता है। आज ही का किस्सा है। एक दूकान पर एक आदमी पुस्तक खरीदने गया। दूकानदार ने उसको वह पुस्तक चौदह आने में दी। फिर वह आदमी दूसरी दूकान पर पहुंचा। वहां उसको वही पुस्तक दिखाई दी तो उसने उसके दाम पूछे। दूकानदार ने छह आने बताये। तो फिर वह आदमी पहली दूकान पर वापिस आया और दूकानदार से पूछने लगा कि इस किताब के तुमने चौदह आने कैसे लिये जब कि यह दूसरी दूकान पर तो छह आने में मिलती है? दूकानदार ने जवाब दिया, भाई, मै तो व्यापारी हूं। मुझे जो दाम लेने थे मैने लिये। तुमको अगर यह पुस्तक दूसरी दूकान पर छह आने में मिलती थी तो आप वहीं से खरीदते।

याने दूसरी दूकान पर नहीं खरीदा, यह आपका ही दोष है। दूकानदार का कोई दोष ही नहीं है। ऐसा सब हो रहा था। इतने में हममें से एक साथी वहां पर पहुंचा। उसने पूछा क्या बात है? उस आदमी ने कहा कि यह पुस्तक इस दूकानदार ने चौदह आने में दी जब कि दूसरी दूकान पर छह आने मे मिलती है। हमारे भाई ने पुस्तक खोल कर दाम देखे और कहा, इस पुस्तक के दाम न चौदह आने है और न छह आने हैं बल्कि तीन आने है। वह कीमत उस पुस्तक पर छपी थी। उस तीन आने मे दूकानदार का कमीशन आदि सब आ गया। इसलिये दूकानदार को उससे अधिक कीमत लेने का कोई हक नहीं था। फिर दूकानदार का और पुस्तक खरीदने वाले का झगड़ा शुरू हुआ। मै इस बात को आगे बढ़ाना नहीं चाहता। हमारे बाजार कैसे होते हैं यह समझ लो "झूठ ही लेना झूठ ही देना झूठ चबेना।"

व्यापारियों का धर्म

होना तो यह चाहिये कि व्यापारी सेवा का भाव रखे। व्यापार एक धर्म है। हमें शास्त्रकारो ने बताया है कि वैश्यो को व्यापार के धर्म का आचरण करना चाहिये। धर्म का मतलब लूटना नहीं होता, बल्कि सेवा करना होता है। जो चीज एक जगह नहीं मिलती है उसको दूसरी जगह से लाकर लोगों को देना और उसमें अपनी जो मेहनत लगी हो उसको जोड़ कर ठीक भाव से बेचना। इसका अर्थ है व्यापार।

मालिक को जाग जाना चाहिये

वास्तव में किसान मालिक है और व्यापारी सेवक है। तो सेवक कभी स्वामी से बढ़कर नहीं होता। जब हिंदुस्तान में मालिक गरीब है तो सेवक भी गरीब ही होना चाहिये। लेकिन बात उलटी हो गई है। मालिक गरीब बन गया है और सेवक श्रीमान बन गया है। और वह श्रीमान कैसे बना? मालिक को लूट कर। आज अगर उन सेवको को कोई उनका धर्म सिखादे तो वे नहीं सीखेंगे। इसलिये अब मालिक को ही जाग जाना चाहिये। मालिक के जागने का मतलब यह है कि वह अपना आधार बाजार पर न रखे। मेरा तो विश्वास है कि अगर गाँववाले अपनी जरूरत की चीजें गाँव मे बना लेंगे तो हर गाँव बादशाह बन सकता है। यह किसान क्या खरीदने के लिये आता है? उसको भाजी चाहिये तो क्या वह अपने खेत में भाजी पैदा नहीं कर सकता? आंगन में भी भाजी बन सकती है। कोई कपडा खरीदने आते हैं। गाँव में कपड़ा क्यो नहीं बन सकता है? अगर कपड़ा नहीं बन सकता तो कल आप रोटी भी बाजार से ही खरीदने लगेंगे। अगर इस तरह बनी बनाई चीजे खरीदते रहोगे तो लूट में से आपको कौन बचायेगा?

भगवान की व्यवस्था से सबक सीखो

हमें गाधीजी ने चरखा चलाने को कहा, और यही कहते कहते वह बूढ़ा मर गया। उनका वह संदेश अब भी सुनने लायक है। लोग कहते है अब तो स्वराज्य हो गया अब कातने की क्या जरूरत है? सरकार का काम है कि वह कपड़ा हमें दे। मैं कहता

हूं कि आप कल कहेंगे स्वराज्य आया है तो अब हम हल नहीं चलायेंगे, सरकार को हमें अनाज देना चाहिये। लेकिन स्वराज्य का यह मतलब नहीं है कि हम सारे काम छोड़ दे। दिल्ली के लोग बड़े हैं और बुद्धिमान हैं इसमें शक नहीं है। लेकिन उनसे भी परमेश्वर अधिक बड़ा और बुद्धिमान है। वह किस तरह हमारा पालन करता है देखो। उसने हमको हाथ दिये, पाव दिये, नाक दिया, कान दिये, और बुद्धि दी। और कहा कि अपने हाथों से काम करो, तुम्हारा पेट भरेगा। उसने थोड़ी थोड़ी बुद्धि हरेक को दी। अगर वैसा वह नहीं करता और बुद्धि का सारा खजाना वैकुंठ मे ही रखता तो हमारा पालन वह कैसे कर सकता था? उस दशा मे भगवान को चैन से नींद भी नहीं आती। लेकिन भगवान तो कहते है कि शेषशायी है और योगनिद्रा में सो रहा है। वह इसलिये सो सकता है कि उसने सब को अकल दी और काम करने की जिम्मेवारी का ढंग बताया। हम हाथों से काम करते हैं फिर भी अगर काम नहीं बनता है तो परमेश्वर की प्रार्थना करते हैं, और वह हमे मदद देता है। हम अगर हाथो से काम नहीं करते हैं तो भगवान भी मदद नहीं करता इसी तरह हम अगर हाथों से काम नहीं करेंगे तो दिल्ली की सरकार भी हमको कुछ मदद नहीं दे सकेगी।

सरकार खास प्रसंग के लिये है

आप कहते हैं कि अब स्वराज्य आ गया है तो हमें कुछ कर्तव्य ही बाकी नहीं है। सब सरकार करेगी। हरेक काम के लिये अगर हम सरकार पर अवलंबित रहेंगे तो वह स्वराज्य होगा या

गुलामी। अपने गाँव में हम शांति नहीं रखेंगे और हर समय पुलिस को मदद के लिये बुलायेंगे तो वह होनेवाली बात नहीं है। विशेष मौके पर पुलिस की हम मदद मांगें तो सरकार दे सकती है। बाकी हमारी रोज की शांति, हमारा अनाज, हमारा कपड़ा, हमारी सफाई, हमारा शिक्षण, सारा गाँव मे ही करना चाहिये।

लोग कहते हैं कि सरकार हर गांव में स्कूल खोले। लेकिन सरकार के पास उतना पैसा नहीं है। अधिक कर देने के लिये आप तैयार नहीं है। मै कहता हूं कि आप आपस आपस में क्यों नहीं सिखाते? जो थोड़ा बहुत पढ़ा हुआ है वह अगर रोज एक घटा दूसरे को पढ़ायेगा तो सारा गॉव शिक्षित हो सकता है। मान लीजिये कि हजार लोक-संख्या के गांव में दस लोग पढ़े हुए हैं। वे अगर हर साल दस लोगों को पढ़ा देंगे तो एक साल में सौ लोग पढे-लिखे बन जायेंगे। और इस तरह दस साल में सारा गाँव पढ़ा-लिखा बन जायगा, इतनी यह आसान बात है। यही बात दूसरे कामों के बारे मे भी है।

उद्धरेत् आत्मनात्मानम्

हमारे सब काम हमें खुद करने चाहिये। भगवान ने गीता में कहा है, "उद्धरेदात्मनात्मानं" खुद का उद्धार खुद को ही करना चाहिये। दूसरों पर भरोसा रख कर मत बैठो। गाँव का राज्य गाँव वालों को स्थापित करना है। जो स्वराज्य दिल्ली में या आदिलाबाद मे है वह आप को काम नहीं देगा। आप को वही स्वराज्य काम देगा जो आप के गांव में बनेगा। यहीं देखो न। बाहर से मनुष्य

के शरीर को वैद्य तब तक ही मदद दे सकता है जब तक शरीर में ताकत बची हुई होती है। अगर शरीर की ताकत खतम हो जाती है तो वैद्य कुछ नहीं कर सकता। इसलिये हमारा काम यह है कि शरीर का आरोग्य हम अच्छा रखें। उसके लिये हमें गाधीजी ने बताया है कि कुदरती इलाज पर आधार रखो। सूर्यप्रकाश, पानी, मिट्टी, आदि से रोग अच्छे करना सीख लेना चाहिये। आज कल तो लोग कहते है हर गाँव में एक दवाखाना हो। अभी तक वैसा नहीं हुआ है यह परमेश्वर की कृपा है। अगर ये लोग हर गाँव मे दवाखाना खोल सकें तो गाँव का पैसा दवाखाने के निमित्त से बाहर जायगा और रोग दसगुना बढ़ेंगे....जरा कहीं कुछ हुआ तो हम दवाखाने में दौडेगे। और यह समझ लो कि एक दफा वैद्य अगर घर में आता है तो फिर वह घर नहीं छोड़ता। कुछ लोग कहते है फलाना डॉक्टर हमारा फॅमिली डॉक्टर है। याने घर मे जैसे माता-पिता होते हैं वैसे वह डॉक्टर भी घर का ही एक हिस्सा बन गया। इस तरह हर बात मे अगर हम गुलाम बनते जायेगे तो फिर स्वराज्य काहे का? सरकार का काम आप को बाहर से कपड़ा ला देने का नहीं है। वह आप को कातना बुनना आदि सिखा देगी। वैसे तो सरकार आप की खिदमत करने के लिये ही है। आप जैसा चाहेंगे वैसा वह करेगी। लेकिन आप को उसके लिये पैसा खर्च करने की तैयारी रखनी होगी। आप कहेंगे हम खेती नहीं करेंगे हमें बाहरसे गल्ला दो तो सरकार अमेरिका से गल्ला ला देगी। उसके लिये आप को पैसा देना पड़ेगा। सरकार तो सेवक है। सेवक

से कैसी सेवा लेनी चाहिये यह मै आप को समझा रहा हूं। आप उसको कहें कि हमें तालीम दो, हम स्वावलबी बनना चाहते हैं।

भगवान झूठे पर प्रसन्न नहीं होता

आप का बाजार देख कर मुझे जो बाते सूझी वह मैने आप के सामने रखी। जब तक हिंदुस्तान के बाजारो में झूठ चलता है तब तक हिंदुस्तान सुखी नहीं होगा। हम परमेश्वर का भजन करते है। लेकिन परमेश्वर झूठे पर कभी प्रसन्न नहीं होता। एक दफा दुर्योधन गाधारी के पास आशीर्वाद मांगने गया था। युद्ध का अवसर था। दुर्योधन ने गाधारी से कहा कि मुझे विजय मिले ऐसा आशीर्वाद दो। गाधारी तो दुर्योधन की माता थी और उसका दुर्योधन पर बहुत प्यार था। लेकिन उसने अपने पुत्र से कहा, "जहां धर्म होगा वहीं विजय होगी यह मेरा आशीर्वाद है।" परमेश्वर का हमारे ऊपर बहुत प्यार है। वह हमें कहता है कि सचाई से बरतो तो तुम्हें मेरा आशीर्वाद है। अगर हम झूठे होंगे तो परमेश्वर हमें उसके लिये सजा देगा। उसमें भी उसकी दया ही होती है। परमेश्वर की दया अजीब होती है। पापी को शुद्ध करने के लिये वह उसको सजा देता है तो उसमे उसकी दया ही होती है। तो अगर हम परमेश्वर का आशीर्वाद चाहते हैं और जीवन सुखी हो ऐसी इच्छा रखते है तो सत्य को नहीं छोड़ना चाहिये।

इच्छोडा (जि० आदिलाबाद)
१९–३–५१

तेरहवाँ दिन—

: १७ :

देहात के काम

आप सावधान रहें

आप का यह गाँव बिलकुल ही छोटा है। लेकिन इस गाँव में मैंने जो काम देखा है उससे मुझे बहुत ही आनंद हुआ है। क्यों आनंद हुआ यह आप लोगों को नहीं मालूम हो सकता। बात ऐसी है कि आप के गाँव मे मैंने बीस पचीस चरखे चलते हुए देखे। इस तरह चरखों का काम मैंने अपनी इस यात्रा में अभी तक कहीं नहीं देखा। और यह दृश्य देख कर मेरे हृदय को बड़ा संतोष हुआ। लेकिन आप लोगों को मै जाग्रत कर देना चाहता हूं। यहां अभी तक बाहर के व्यापारियों का ज्यादा प्रवेश नहीं हुआ है। लेकिन आगे चल कर स्थिति ऐसी ही नहीं रहेगी। बाहर के व्यापारी यहां भी आयेंगे। मुझे आज कल व्यापारियों का सब से अधिक डर लगता है। वास्तव में व्यापारी तो होने चाहिये ग्रामों के सेवक। लेकिन इन दिनों ऐसा हुआ है कि व्यापारियों मे दयाधर्म नहीं जैसा रह गया है। इसलिये वे जब कहीं जाते है तो गांवों की सेवा के बजाय अपने स्वार्थ को ही देखते है। आज तामीरातवाले एक भाई मुझसे मिलने आये थे। बातचीत में उन्होंने बताया कि यह जिला जो अभी बहुत पिछड़ा हुआ है पैनगंगा पर

पुल बनने के बाद आगे बढ़ जायगा। क्योंकि फिर बरार के साथ बहुत व्यापार चलेगा। लेकिन फिर यह जिला आगे बढ़ेगा इसका मतलब इतना ही है कि यहां व्यापारियों का जमघट बन जायगा। मतलब उसका इतना ही है कि फिर आपके गाँव में जो अच्छा दृश्य हमने देखा वह देखने को नहीं मिलेगा। बाहर के व्यापारी आपके गाँव में आयेंगे। कपड़ों के अच्छे अच्छे नमूने आपको बतायेंगे, आप लोभ में पड़कर उनसे कपड़ा खरीदने लग जायेंगे और गुलाम बन जायेंगे। आज भी मैं देखता हूं कि आपके गाँव में सूत कतता है। कुछ लोग हाथ का कपड़ा पहनते हैं; लेकिन मिल का कपड़ा भी बहुत चलता है। लेकिन जब वे व्यापारी आयेंगे तब सारा का सारा कपड़ा बाहर से आने लग जायगा। इसलिये मैं आज ही आपको सावधान करना चाहता हूं कि आप शपथ लीजिये कि बाहर का कपड़ा नहीं लेंगे। अगर आप ऐसा नहीं करते तो आप के देखते देखते सारा गाँव दरिद्र हो जायगा। आज मैं आपके गाँव में घूम आया। सारे घर देख आया। घर बहुत तो थे नहीं इसलिये समय भी ज्यादा नहीं लगा। छोटासा गाँव है। आज आप लोग संतोष से रहते हैं। लेकिन अगर आप आलस में पड़े और बाहर की चीजें खरीदने लगे तो आज का यह संतोष नहीं रहेगा।

खादी का व्रत

एक घर में, जो कुछ पड़ा था, लोगों ने बैठने के लिये कहा। मैं वहां बैठा। उन्होंने मेरा स्वागत किया। लेकिन उस घर में मैंने

देखा कि उस घर की लक्ष्मी सारे कपड़े मिल के पहने हुय थी । मैंने उन्हें प्रेम से समझाया कि इस घर में मैं आया हूं तो अब यहा बाहर का कपड़ा नहीं आना चाहिये। उन्होंने मेरी बात को मान लिया। अब मैं नहीं जानता कि वे कहा तक अपना वचन पालन करेंगे। भगवान से मेरी प्रार्थना है कि उन्होंन जो वचन दिया है उसका पालन करने की शक्ति वह उन्हे दे।

हिंदुस्तान की पहले की स्थिति

मैं अभी हैद्राबाद मे होनेवाले सर्वोदय समेलन के लिये जा रहा हूं। सर्वोदय का मतलब है सब की उन्नति। सर्वोदय मे यह बात नहीं आती कि किसी एक का भला हो, दूसरे का न हो। इसलिये सर्वोदय का चिंतन करनेवाले मुझ जैसे के सामने यह बड़ी समस्या है कि शहरो के साथ देहातो का भला कैसे होगा? हम चाहते है कि भला शहरों का भी हो और गॉवो का भी। एक जमाने में हिंदुस्तान के सारे गाँव बहुत सुखी थे। परदेश से आनेवाले लोग उसकी गवाह देते थे। बीच में जब अंग्रेज यहा आये तो उन्होंने भी देखा कि यहां हर गाँव में कपड़ा बनता है और दूसरे भी बहुत से उद्योग चलते हैं। तो उन्होंने लिखा है कि गाँव गाँव में दूध बहुत मिलता है। लेकिन आज हम देखते हैं कि लोगों को मुश्किल से दूध मिलता है। दूध नहीं, तरकारी नहीं, कपड़ा नहीं, और आज तो गल्ला भी बाहर से आता है। यह हालत दो सौ साल के अंदर हुई है।

स्वराज्य का कार्यक्रम

अब स्वराज्य आया है। हम चाहते है कि हमारे गांव फिर से सुखी हो। लेकिन स्वराज्य आने पर भी अगर हम लोग देहात का रक्षण नहीं कर पायेगे, देहात के उद्योग कायम नहीं रख सकेंगे तो हमारे गाव सुखी नहीं हो सकेंगे। स्वराज्य का अर्थ ही यह है कि आप लोगो को अपने गाव का कपडा पहनना चाहिये। अपने ही गाव की चीजे खरीदनी चाहिये। बाहर का पक्का माल आप को नहीं खरीदना चाहिये, बल्कि अपने गाँव में खुद कच्चे से पक्का माल बनाना चाहिये। आप के गांव में पक्का माल बनेगा तो शहरवाले खरीदेंगे और आप को लाभ होगा। लेकिन अगर आप कच्चा माल पैदा करके पक्का बाहर से खरीदेंगे तो आप को नुकसान होगा। अगर अपने ही गाँव मे कच्चे माल से पक्का बनाते है तो मजदूरी आप को मिलती है। पक्का नहीं बनाते तो मजदूरी बाहर जाती है। एक जमाना था जब हिंदुस्तान-वाले अपने लिये तो कपडा बनाते ही थे लेकिन बाहर भी भेजते थे। उस जमाने मे लोगों को चरखा कातने के लिये समय मिलता था और आज नहीं मिलेगा ऐसी बात तो नहीं है। आज लोगों की संख्या बढ़ गई है, जमीन कम हुई है। इसलिये समय तो खूब मिलता है। अभी एक जगह एक गाव का सर्वे किया गया तो मालूम हुआ कि वहा के लोगों को साल भर में छः माह काम नहीं मिलता है। मै देखता हूं कि आप के गांव में बगीचे भी नहीं है। याने आप के यहां की खेती बारिश के पानी पर ही होती है।

इसलिये वह काम अधिक नहीं रहता। समय काफी बचता है। उसका 'क्या' किया जाय? अगर कोई व्यक्ति ऐसा हो जो आप के गांव की सेवा करे तो आप के गाव की उन्नति होगी। वह व्यक्ति आपके गांव का ही होना चाहिये। काँग्रेसवालों का काम है कि ऐसे गाव की सेवा करें। मुझे तो ऐसे गाव मे रहने की इच्छा हो जाती है। यहा रहा तो पहले मै कातनेवालों को धुनना सिखाऊंगा। आज तो कातनेवाले अपनी पूनी नहीं बनाते। दूसरे लोग उनके लिये पूनी बनाते रहे है। अपने घर मे कपास बने और दूसरा मनुष्य उसकी पूनी बनावे और फिर मै कातूं ऐसा क्यों होना चाहिये? अगर हम अपने ही घर में पूनी बनाते है तो पूनी अच्छी बनती है और सूत भी अच्छा कतता है। दिल्ली मे हमने यह प्रयोग करके देखा। पंजाब की निर्वासित स्त्रियो को कातने के साथ हमने उन्हें पूनी बनाना भी सिखा दिया। परिणाम यह हुआ कि जो स्त्रियां पहले आठ दस नबर तक कातती थीं वे सोलह बीस नंबर तक सूत कातने लगीं। याने पहले बिल्कुल मोटा सूत कातती थीं अब महीन कातने लगी हैं। बारीक सूत से धोतियां और साड़ियां बन सकती है। आप देख रहे है कि मदालसा यहा बैठी पूनी बना रही है। पांच पाच छः छः साल के बच्चे भी ऐसी पूनी बना लेते हैं। इस तरह अगर घर मे ही पूनी बनने लग जायगी तो सूत अच्छा कतेगा।

फिर आप के यहां ये पहाड़ भी हैं। अगर मैं यहा रहा तो पहाड़ से पत्थर ला ला कर उन पत्थरों से मकान बना लूंगा। इस

तरह अपने परिश्रम से पक्के मकान बन जायेंगे। फिर सफाई का काम शुरू कर दूंगा ताकि गांव में कोई बीमारी न होने पावे। आप लोग बाहर खुले में पाखाना जाते है। लेकिन उस पर मिट्टी नहीं डाली जाती। खाद की बरबादी होती है। हमारा हिसाब है कि फी आदमी मैले की कीमत चार रुपया होती है। मतलब यह कि पाचसौ जनसंख्या के आप के गाव मे दो हजार रुपयों की आमदनी बढ़ सकती है। इस तरह गाव गाव उत्पादन भी बढ़ेगा और स्वच्छता भी बढेगी। अब यह सारा काम अगर यहां कोई मनुष्य रहेगा तो हो सकेगा। लेकिन बाहर से मनुष्य कहां से लावें? इसलिये यहीं पर कोई कार्यकर्ता मिलना चाहिये।

एक बात और। आप के गाव में प्रेम-भाव बढ़ना चाहिये। जसा एक परिवार में प्रेम होता है वैसा सारे गाव में होना चाहिये। सारा गाव एक परिवार ही हो जाना चाहिये।

तो आप लोग नित्य गाव में उद्योग बढाइये और प्रेम-भाव बनाये रखिये, यही मुझे आप से कहना था।

निरडगोंडी, (जि० आदिलाबाद)
२०-३-५१

चौदहवाँ दिन—

: १८ :

ग्राम राज्य

गांधीजी का ही संदेश सुनाता हूं

मुझे गांधीजी का आदमी समझ कर आप सब स्त्रियां अपने अपने चरखे लेकर इस सभा में आयी हुई है। और आज मै आपको जो सुनानेवाला हूं वह गांधीजी का ही संदेश है। लोग कहते हैं कि गांधीजी ने जो कहा उससे कोई नई बात यह मनुष्य नही कहता है। यह बात सही भी है। क्योंकि गांधीजी के पास मैंने जो सीखा उसे नहीं भूल सकता। अगर गांधीजी का शिक्षण मै भूल जाऊंगा तो पशु बनूंगा।

सुदर्शन चक्र धारी भगवान के दर्शन

आप लोगो को मै नारायण समझता हूं। और जब मैंने देखा कि सौ से अधिक स्त्रियां यहां चरखे चला रही है तो उस सुदर्शन चक्रधारी भगवान के ही मैंने आज दर्शन किये। इस तरह आपके दर्शन का लाभ लेने के लिये मै पैदल निकल पड़ा हूं। आज सुबह पांच बजे हम निकले और चौदह मील की मुसाफिरी की। एकदम से इतना चलने से हम लोगो को कुछ तो थकान जरूर लगी। लेकिन जो दृश्य यहां आपके कातने का मैंने देखा उससे वह सारी थकान

उड़ गई। आज की सभा जो भी देखते वे अगर मनमें शंका रखते हैं कि चरखा कैसे चलेगा इन दिनों, तो यह दृश्य देखकर वे समझ जायेंगे। लेकिन आज तो आप लोगों ने बता दिया कि आप खेती का काम भी कर सकती हैं और चरखा चला कर अपना कपड़ा भी बना लेती है।

लक्ष्मी की कथा

अब मुझे यही कहना है कि आप यह काम निष्ठा से अधिक बढ़ाइये। अपने गाँव में हाथ का बना कपड़ा ही हमें पहनना चाहिये। बाहर का कपड़ा यहां नहीं आना चाहिये। आप कातती है और उसका कपड़ा भी पहनती है यह अच्छा है। लेकिन खद्दर ही पहनेंगे दूसरा कपड़ा नहीं पहनेंगे ऐसा व्रत आपने नहीं लिया है। ऐसा व्रत न लेने में क्या खतरा है यह मैं आपको समझाऊंगा। खतरा यह है कि मिल का कपड़ा यहां आता रहेगा और आपको उसका मोह होगा। फिर आप खुद उस मिल के कपड़े को शायद नहीं पहनेंगी। लेकिन अपनी लड़कियों को वह पहनायेंगी और कहेगी कि कैसी सुंदर दीखती है मेरी लड़की मिल के कपड़े में। लेकिन मैं आपको कहता हूं कि मिल के कपडे में आपके लडके लडकियां खूबसूरत नहीं बल्कि बदसूरत दीखेंगी। क्योंकि मिल का कपड़ा अगर घर में आता है तो घर की लक्ष्मी बाहर चली जाती है। और लक्ष्मी अगर बाहर गई तो फिर घर की क्या शोभा रही? लक्ष्मी की कथा है कि वह शामके समय गाँव में घूमती है। जिस घरमे देखती है कि सायंकाल के समय भी दीपक जल रहा है और

काम हो रहा है उस घर में वह प्रवेश करती है। उसका मतलब यह है कि जहां दिन में भी काम चलता है और रातको सोते तक निरंतर काम और उद्योग चलता है उसी घर पर लक्ष्मी की कृपा होती है। चरखे से इस तरह घर घर काम हो सकता है।

कातनेवालों की जाति नहीं होती

मैं देख रहा हूं कि कुछ स्त्रियां कात रही है लेकिन कुछ नही कातती है। एक बाई से मैने पूछा कि वह क्यो नहीं कातती? मिल का कपड़ा क्यो पहनती है? उसने उत्तर दिया कि हमारी जाति मे कातना निषिद्ध है। यह खयाल गलत है। जो भी कपड़ा पहनता है उसको कातना चाहिये। जैसे बढ़ई की या लुहार की जाति होती है वैसे कातनेवालो की कोई जाति नहीं होती। हरेक जाति को कातना चाहिये। हर घर मे रसोई बनती है उसमे जाति का कोई प्रश्न नहीं होता। वैसे हर घरमें कातने का काम होना चाहिये। मै यह भी देखता हू कि स्त्रियां तो कातती हैं लेकिन पुरुष नहीं कातते है। शायद उनको लगता है कि वे कातेंगे तो उनका धर्म बिगड़ेगा। स्त्रिया कपड़ा पहनती है तो पुरुष नंगे थोड़े ही रहते हैं? इसलिये पुरुषो को कातना चाहिये स्त्रियो को कातना चाहिये बच्चो को कातना चाहिये और बूढ़ों को भी कातना चाहिये। गांधीजी रोज नियम से कातते थे। जिस दिन उनका खून हुआ उस दिन भी वे कात कर मरे हैं। इस तरह उन्होंने सारी जिंदगीभर हमारे सामने एक आदर्श दिखा दिया कि हमको रोज कुछ न कुछ सूत कातना चाहिये।

बेकार रहेंगे तो शैतान मन में घर करेगा

लोग पूछते हैं कि अब तो स्वराज्य आया है अब कातने की क्या जरूरत है ? तो आप से यह भी पूछ सकते हैं कि अब स्वराज्य आया है तो रसोई करने की क्या जरूरत है ? स्वराज्य के पहले घर में रसोई करने की जरूरत थी, स्वराज्य के बाद भी जरूरत है। मिल का पराक्रम आप को सुनाता हू। लड़ाई के पहले मिलें फी आदमी १७ गज कपड़ा देती थीं। और अब १२ गज तैयार करती है। इस पर से आप के खयाल में आयेगा कि मिल पर भरोसा रखना कितना घातक है। मैं तो कहना चाहता हू कि मिलें अगर ५० गज भी कपड़ा तैयार करें तो भी उसको खरीदने में देहातवालों का भला नहीं है। कोई कहते है कि मिल का कपड़ा सस्ता होता है। मैं कहता हू कि वह मुफ्त मे भी मिले तो भी हम वह कपड़ा नहीं लेगे इस तरह का निश्चय हमे करना चाहिये। ऐसा निश्चय अगर देहातवाले नहीं करेंगे तो उनके सारे धंधे खतम हो जाएंगे। और आप के धंधे अगर नष्ट हो गये तो फिर आप को मुफ्त कौन खिलायेगा ? इसलिये मैने लक्ष्मी का जो चरित्र कहा था वह याद रखिये। उद्योग चले गये तो लक्ष्मी चली जायगी, हम आलसी बनेंगे और फिर आपस आपस में झगड़े शुरू हो जायेंगे। फिर लोगों में तरह तरह तरह के व्यसन शुरू हो जायेंगे। नशाखोरी चलेगी। लोग शराब और बीड़ी पीने लगते हैं। बीड़ी पीनेवाले तो यहां तक आगे बढ़ गए है कि जहां प्रार्थना चलती है वहां भी वे बीड़ी पीते है। याने साधारण सभ्यता भी वे नहीं जानते हैं कि

जहां लोग इकट्ठे होते है वहां बीड़ी नहीं पीनी चाहिये। जहां उद्योग नहीं होते हैं और मनुष्य खाली रहता है वहां ये सारे ढंग सूझते हैं। फिर झगड़े बढ़ते हैं और उसके साथ व्यभिचार आदि भी चलते हैं। इसीलिए हमारे पुरखाओं ने हमें सिखाया है कि "क्षणार्धमपि व्यर्थं न नेयम्" एक क्षण भी खाली नहीं रहना चाहिये। इस तरह एक एक क्षण का हम हिसाब नहीं रखेंगे तो फिर हमारे मन में शैतान काम करने लगता है और यह विचार शुरू होता है कि दूसरे के जेब से पैसे कैसे लूटे जांय। व्यापार में सर्वत्र झूठ शुरू होता है। चोरियां कैसे की जायं इसकी युक्तियां खोजी जाती हैं। यह सब हिंदुस्तान में शुरू हो रहा है इसलिये मै आप लोगों को सावधान कर रहा हूं।

ग्रामराज्य और रामराज्य की व्याख्या

जो लोग अपने घर में सूत कातेंगे उनका अपना कपड़ा घर का होगा। लेकिन उनके घर में अगर ज्यादा कपड़ा तैयार होता है तो गांव के दूसरे लोग उसको खरीद सकते हैं। गांव मे कुछ लोग जरूर ऐसे होंगे कि जिनके लिए खुद सूत कातना संभव नहीं होगा। तो वे अपने गांव में कते सूत का कपड़ा खरीदेंगे। यह जो मैंने कपड़े के लिये कहा वही दूसरे उद्योगों को भी लागू है। तेल गांव में बनाना चाहिये। गुड़ गांव में बनाना चाहिये, आटा घर घर पीसा जाना चाहिये। इस तरह आप देहात की स्त्रियां और पुरुष काम करेंगे तो यह राज्य आपका होगा। इसको ग्रामराज्य कहते हैं। ग्राम में जब स्वावलंबन होगा, गांव अपनी शक्ति पर खड़ा होगा तब

वह ग्रामराज्य होगा। और रामराज्य तब होगा जब आपस आपस में कोई झगड़ा नहीं रहेगा, सब एक दूसरे पर प्यार करेंगे, सब एक दूसरे का साथ देंगे और सहकार करेंगे। अपने देश के लिये स्वराज्य तो आया है। लेकिन ग्रामराज्य स्थापित करना बाकी है। उसके लिये अब हमें झगड़ना है, मेहनत करनी है। वह बड़ी भारी लड़ाई होगी।

ग्रामराज्य के लिए लड़ाई लड़नी है

स्वराज्य के लिए तो लड़ाई हो गई। लेकिन उससे भी कठिन लड़ाई आगे ग्रामराज्य के लिये होनेवाली है। आज तक हमने जो लडाई लड़ी वह अहिंसात्मक थी। वैसे यह लड़ाई भी अहिंसात्मक ही होगी। यह लड़ाई टलनेवाली नहीं है। उस लडाई के सिपाही आप सारी बहनें और भाई होंगे। उधर शहरवाले लोग व्यापार में लगे हुए है, ग्रामों की कोई चिंता नहीं करते हैं। उनके साथ हमारा कोई भेदभाव तो नहीं है, लेकिन झगड़ा जरूर है। उस युद्ध में हमारे औजार होंगे चरखा और हल। हमारे युद्ध के लिये हमें बम की जरूरत नहीं है, तोपों की भी जरूरत नहीं है। हमें जरूरत है काम करने के औजारों की।

गोपाल पेठ, (जि० आदिलाबाद)
२१–३–५१

पन्द्रहवाँ दिन—

: १९ :

सर्वोदय की महिमा

स्वराज्य शब्द की महिमा

हम सर्वोदय के यात्री अपनी पैदल मुसाफिरी मे आप के गांव मे आ पहुंचे है। सर्वोदय एक महान शब्द है और उसका अर्थ भी महान है। समाज के सामने जब कोई महान शब्द होता है तो उससे समाज को शक्ति मिलती है। शब्द की महिमा अगाध होती है। जिस समाज के सामने कोई बडा शब्द नहीं होता है वह समाज शक्ति-हीन और श्रद्धा-हीन बनता है। शब्द की शक्ति का यह अनुभव हर जमात को और हर देश को आया है। हमारे देश में चालीस साल तक स्वराज्य शब्द चला और उसका पराक्रम तथा महिमा सब ने देख ली। १९०७ मे स्वराज्य शब्द दादाभाई नौरोजी ने हमे दिया और १९४७ में उसका दर्शन हमे मिला। उसका चमत्कार आखिर तो हैद्राबादवालो ने भी देख लिया। हैद्राबादवाले बहुत दिनो से सोच रहे थे कि बाकी के सारे देश में स्वराज्य का उदय हुआ, हमारा क्या हाल होगा? उनको भी अनुभव हुआ कि जो शक्ति देशभर मे पैदा हुई थी उसका स्पर्श यहां भी होना था। यह सस्थान उससे अलग नहीं रह सकता था।

स्वराज्य के बाद का शब्द

इस तरह स्वराज्य शब्द का कार्य हिंदुस्तान मे हो गया और उसके साथ साथ महात्मा गांधीजी का अस्त हुआ। उनके जाने के पीछे सारा देश हक्का-बक्का हो गया और कुछ रोज तो सूझता ही नहीं था कि इस देश का क्या होनेवाला है ? लेकिन परमेश्वर की कृपा से सब लोग स्थिर हो गये और अब ऐसा समय आ गया है कि देश के प्रगति का अगला कदम रखा जाय। अगला कदम तो तब रखा जा सकता है जब कि जहां जाना है उसकी दिशा तय हुई हो। तो गांधीजी के जाने के बाद चंद लोग इकट्ठा हुए और उन्होंने अपने देश को सर्वोदय शब्द दे दिया। यह शब्द भी गांधीजी का ही रचा हुआ था। और उसकी जड़ हिंदुस्तान की संस्कृति में प्राचीन काल से जमी हुई है। जब स्वराज्य नहीं हुआ था तब तो वही एक शब्द हमारे सामने था और परदेशियों का यहां का राज्य हटाने में ही हम सब लगे हुए थे। हमारे खेत मे तरह तरह के निकम्मे झाड़ उगे हुए थे, उनको काटने का काम हुआ उसीका नाम स्वराज्य था। अब स्वराज्य-प्राप्ति के बाद उस खेत मे परिश्रम करना है और बोना है। लेकिन मै देख रहा हू कि लोगों का यही खयाल है कि अब तो काटनेका समय है। यह बिलकुल गलत खयाल है। तो वह जो खेती मे परिश्रम करके फसल लाना है उसी का नाम है सर्वोदय। सर्वोदय शब्द अगर हमारे सामने न होता तो हम सब ध्येय-शून्य बन जाते।

स्वराज्य के बाद का नैतिक कार्य

सर्वोदय शब्द ने हमारे सामने स्पष्ट उद्देश्य रख दिया। वह उद्देश्य ऐसा है जिसमें सब लोगो का समावेश हो सकता है। मेरे अभिप्राय में स्वराज्यप्राप्ति के बाद हिंदुस्तान में जो तरह तरह के राजकीय पक्ष पैदा हुए है उनकी कोई जरूरत नहीं थी। स्वराज्य के बाद हिंदुस्तान में जो असंख्य समस्यायें पैदा हुई वे बहुत सारी अनैतिक थीं। याने जनता की नीति गिरी हुई थी उसका हमें तरह तरह से अनुभव आया। और आज भी हम यही देखते हैं कि जहां जाओ वहाँ नीति-हीनता और शील-भ्रष्टता का दर्शन होता है। इसके लिये मै जनता को दोष नहीं देता हूं। क्योंकि मैं जानता हूं कि सारी की सारी जनता नीति-भ्रष्ट नहीं हो सकती। लेकिन वैसा नीति-भ्रष्टता का दर्शन अगर सर्वत्र होता है तो यही समझना चाहिये कि उसका कारण परिस्थिति मे मौजूद है। जिम्मेदारी चाहे परिस्थिति की हो चाहे जनता की हो लेकिन जो है उसको हमें दुरुस्त करना है। स्वराज्य प्राप्ति के बाद सब लोगों का शील कायम रखना, आपस आपस मे प्रेम-भाव कायम रखना आदि बिल्कुल बुनियादी काम करना जरूरी हो गया था और है। इस हालत में किसी भी तरह के राजकीय उद्देश्यों के लिये मौका ही नहीं रहता है। जब समाज का नैतिक स्तर और आपस आपस का प्रेम-भाव बढ़ेगा तब राजकीय उद्देश्यों के लिये मौका आ जाता है। इसलिये जिन जिन लोगों से जब जब बात करने का मौका मिलता है तब उन्हे मैंने यही कहा है कि भाइयो,

यह राजकीय लेबल अब अपने सिर पर मत चिपकाओ। और केवल इन्सान बन जाओ।

आज का परदेशावलंबी स्वराज्य किस काम का

देखिये मैं तो पैदल घूम रहा हूं। बीच-बीच मे छोटे-छोटे गाँवों मे जाना होता है तो बीच मे शहर देखने को मिलते हैं। तो मैं देखता हूं कि उधर गावो की परिस्थिति क्या है और इधर शहरो की परिस्थिति क्या है ! देहात में एक तरह का दुःख है तो शहरों मे दूसरी तरह का। देहात में देखता हूं कि लोगों को कपड़े पहनने के लिये नहीं है और शहर मे देखता हू कि लोग शराबी बन रहे है। वस्त्रों का न होना एक बड़ा भारी दुख है तो शराबी होना कोई सुख की बात नहीं है। तरह तरह के व्यसन शहरों में बढ़ रहे हैं। स्वराज्य के पहले स्वदेशी विदेशी का जो फरक हम करते थे वह भी अब भूल गये हैं। जो भी अच्छी चीज देखते हैं खरीद लेते हैं। स्वराज्य के बाद हमारे शहरों की अगर यह हालत हो जाय कि सारे बाजार परदेशी वस्तुओं से भर जायं तो वह स्वराज्य किस काम का ? और मैं आप को विश्वास दिलाता हूं कि आप परदेशी वस्तु खरीदते रहिये, आप के स्वराज्य पर कभी आक्रमण नहीं होगा। आपका स्वराज्य कायम रहेगा। क्योंकि दूसरे देशो को क्या फिक्र पड़ी है कि आप का देश कब्जे में रख कर सारा जिम्मा उठायें अगर उनका माल यहां खपता है ? और इन दिनों किसी देश को अपने कब्जे में रखना कठिन काम हुआ है। इसलिये दुनिया के बड़े बड़े

देश यह नहीं सोचते कि दूसरे देशों पर अपनी राजकीय सत्ता कायम करे। अगर व्यापारी सत्ता हासिल है तो राजकीय सत्ता हासिल करने मे कोई लाभ नहीं है। मतलब यह हुआ कि फिर हमारे स्वराज्य का कोई अर्थ ही नहीं रहेगा अगर हमारे बाजार परदेशी वस्तुओं से भरे रहे। यह है हमारे शहरो का हाल।

उधर देहातो का हाल यह है कि उन लोगो के पास कोई धंधे नहीं है। उनके जो छोटे छोटे धंधे थे वे शहरवालो ने छीन लिये। यहीं देखो, हम जहा बैठे है वह एक धान कूटने की मिल है। अगर धान कूटने का धंधा देहात में चला तो लोगो को काम मिलेगा, वह भी शहर मे गया तो देहातवाले बेकार हो जायेगे।

तो उधर परदेशी वस्तुओं से शहर के बाजार भर रहे है उनके विरोध मे शहरियो का पराक्रम कुछ नहीं चलता है। उनका सारा पराक्रम देहात के धंधे डुबाने का है।

देहात के धंधे सुरक्षित रहें

होना यह चाहिये कि देहात के धंधो को देहात मे रखना चाहिये और परदेश से जो माल आ रहा है उसके विरोध मे शहरो में धंधे खड़े होने चाहिये। आज की हालत यह है कि परदेश के लोग हमारे शहरों को लूटते जा रहे है और शहरवाले हमारे देहातो को लूटते जा रहे हैं। अगर उससे उलटा बना याने परदेश के धंधो के विरोध में शहरवाले खड़े हो गये और देहात के धंधों को उन्होंने बचा लिया तो देहात और शहर दोनों का सहयोग होगा।

और यह देश शक्तिशाली बनेगा। हम हमारे कुछ जंगलो को जैसे रिजर्व रखते हैं वैसे देहात के लिये कुछ धंधे रिजर्व रखने चाहिय। इस तरह देहात के धंधो को हमने सुरक्षित नहीं रखा तो देहात उजड़ जायेगे और आखिर देहाती लोग शहरो पर टूट पड़ेंगे। तो उधर परदेश के व्यापारी शहरो को लूटेंगे और इधर देहात के लोग शहरो पर टूट पड़ेंगे तो फिर शहरों की क्या हालत होगी आप ही सोचिये। तो स्वार्थबुद्धि से भी आप को देहात की रक्षा करनी चाहिये।

देहात उजड़ जाय तो शहर और देहात की लड़ाई अटल है

तो हम लोगोकी अकल अब इस बात मे लगनी चाहिये कि देहात और शहर दोनो का सहयोग कैसे हो और दोनो मिल कर परदेशी माल के विरोध मे कैसे शक्ति पैदा करे? यह नहीं हो रहा है और मुझे देहातवालों को कहना पड़ता है कि भाई तुम्हारे और शहरियों के बीच लड़ाई होनेवाली है। मैं उस लड़ाई को नहीं चाहता। लेकिन अगर शहरियों का रवैया नहीं बदला तो यह लड़ाई अटल है, यह मैं देख रहा हूं और वही मुझे कहना पडता है।

सर्वोदय का ध्येय

मैं उस लड़ाई को नहीं चाहता इसीलिये सर्वोदय के प्रचार के लिये आप को समझा रहा हूं। और मैं कहता हूं कि इस समय इस शब्द में जो शक्ति है वह आप चिंतन करेंगे तो आप को महसूस होगी। सर्वोदय शब्द हमें यह समझा रहा है कि देश मे जगह

शक्तिसंचय हो जाना चाहिये। देश में एक घर भी अशक्त नहीं रहना चाहिये। अगर इस तरह हम नहीं सोचते हैं और वर्गों के झगड़ों की बात निकालते है या कोई खास लोगो के हित की ही बात सोचते हैं तो हिंदुस्तान सुख मे नहीं रहेगा। सरकारी कानूनो मे जो भी लूपहोल मिलते हैं उनका लाभ उठाने का व्यापारी सोचते है। इस तरह व्यापारी और सरकार दोनों के बीच अकल की लड़ाई चलेगी और इन दोनों की लड़ाई के बीच देहात के लोग मारे जायेंगे। जरूरी इस बात की है कि व्यापारियों की ताकत देहात के हित में लगे, सरकार की ताकत देहात के हित मे लगे और शहरियों की भी ताकत देहात के हित में लगे। और देहाती लोग, शहर के लोग, व्यापारी और सरकार चारों मिलकर परदेशी वस्तुओं का और विचारों का जो आक्रमण हो रहा है उसके विरोध में खड़े हो जाँय।

सर्वोदय का लक्ष्य

तो स्वराज्य के बाद सर्वोदय का क्या काम है यह मैंने थोड़े में आपको समझाया। हमारे देश में चार शक्तियां काम कर रही हैं। एक है सरकार की, दूसरी है व्यापारियो की, तीसरी है शहरियों की और चौथी है देहातियों की। इन सब शक्तियों का योग साध्य करना सर्वोदय का काम है। अब आप ही सोचिये कि सर्वोदय में इतना अर्थ भरा है तो इसको छोड़ कर और किस शब्द की आपको जरूरत है ? और किन राजकीय पक्षों की आपको आवश्यकता है ? सर्वोदय कोई राजकीय पक्ष नहीं है।

लेकिन सारे राजकीय पक्षों को पेट में निगलने के लिये वह पैदा हुआ है। दूसरी भाषा में सबका हृदय एक बनाना, सबकी भावना एक बनाना, और सबकी शक्तियों का समवाय सिद्ध करना सर्वोदय का लक्ष्य है।

भाइयो, मै आशा करता हूं कि यहां का हरेक जवान और प्रौढ इस शब्द से स्फूर्ति पावेगा और इसके लिये जीवन भर कोशिश करेगा। इस शब्द से जो स्फूर्ति मिलती है वह राम-नाम जैसी शक्ति है। और राम वही है जो सबके हृदय में रम रहा है। उसी का भजन अब हम सब मिल कर करेंगे।

निमल, (जि० आदिलाबाद)
२२-३-५१

सोलहवां दिन—

: २० :

सच्चा वर्णाश्रम धर्म

आज प्रार्थना सभा सदा की भांति साढ़े पांच बजे होनेवाली थी। लेकिन आप सब भाई बहनें दूर दूर गांव से यहां आ कर बैठे है इसलिये जल्दी ही शुरू कर देता हूं। ये स्त्रियां अपने बच्चों को घर छोड कर आई है। इसलिये मै उन्हे जल्दी ही रवाना कर देना चाहता हू।

ग्रामोद्योग का अर्थशास्त्र

मुझे इस बात की बडी खुशी है कि आप सूत काततीं है। लेकिन आपके चारों ओर घटोत्कची माया फैली है। सब तरफ मिलो का कपडा छाया हुआ है। आप के लिये इस देश की मिलो और परदेश की मिलो ने कोई फरक नहीं है। आप को तो अपने सूत का ही कपडा पहनना चाहिये। मुझे इस बात का दुःख है कि आप तो सूत कातती है लेकिन यहां के लोग मिल का कपड़ा पहनते हैं। होना तो यह चाहिये कि इस गांव मे बना हुआ कपड़ा ही यहा के लोग पहने। अपने गाव वालों पर जो प्रेम नहीं करते वे प्रेम करना जानते ही नहीं। प्रेम का अर्थ ही यह है कि एक दूसरे की रक्षा करें। गांव में चमार है। वह जूता बनाता है तो उसका जूता हम नहीं खरीदेंगे और बाहर का खरीदेंगे तो

गांव का चमार मर जायगा। इस तरह हमारे चमार को हम रक्षण नहीं देते हैं तो उस पर हम प्रेम नहीं करते। इसी तरह तुम्हारे गांव के तेली का तेल तुम्हें खरीदना चाहिये। अपने गांव के बुनकर का कपडा पहनना चाहिये। लेकिन हम कहते है कि हमारे गांव के चमार का जूता महगा है, तेली का तेल महंगा है, बुनकर का कपडा महगा है। इस तरह अगर गांव के चमार का जूता, तेली का तेल, बुनकर का कपडा, गांव का गुड और गांव की चीजे हमे महंगी लोगी तो हम जी नहीं सकेंगे। हम महंगा महंगा कहते हैं, लेकिन वास्तव मे वह महगा नहीं है। गांव के तेली का तेल उसी गांव का चमार खरीदता है और चमार का जूता तेली खरीदता है तो इसका पैसा उसके घर मे जाता है, उसका पैसा इसके घर में जाता है। हम अपने घर की लडकिया दूसरो के घर देते है, उनकी लडकियां हमारे घर लेते है। क्या यह सौदा महंगा पड़ता है? इसी तरह अगर तेली का पैसा चमार के घर और चमार का पैसा तेली के घर जाता है तो किसका नुकसान होता है? इस तरह जिसे आप महगा कहते है वह महंगा नहीं है बल्कि उस पर ही हमारे गांव का जीवन चलता है। इस लिये आप लोगो से मेरी प्रार्थना है कि जो माल आप के गांव मे बनता है वही खरीदिये। यह मत कहिये कि हमारा देश बड़ा है तो दिल्ली का माल क्यों न खरीदे। दिल्ली हमारे देश में तो है पर दिल्लीवालो का काम है कि वे दिल्ली की चीजें खरीदें, यहांवालों का काम है कि वे यहां की चीजे खरीदें। दिल्ली में जो बारिश होती है वह सुवर्णपुर में नहीं

आती। भगवान हर गांव मे बूंद बूंद बारिश बरसाता है। उसी तरह घर घर मे और गांव गांव में लक्ष्मी निर्माण करने की शक्ति चरखे मे पडी है। चरखा धन थोडा देता है जैसे बारिश की बूंद भी छोटी होती है। लेकिन बारिश की बूंद छोटी होते हुए भी घर घर बरसती है वैसे ही चरखे का धन थोड़ा होने पर भी घर घर निर्माण होता है। यह जब सोचते है तो आप को मालूम हो जायगा कि अपने गांव की रक्षा कैसे हो सकती है।

हमारे यहां पहले से वर्ण-धर्म चला आया है। वर्ण-धर्म का अर्थ यह है कि अगर बाप चमार है तो लड़के को भी चमार का धंधा करना चाहिये। लेकिन अगर हम अपने गांव के चमार का माल नहीं खरीदेगे और बाहर का खरीदेंगे वैसे ही अपने बुनकर का कपड़ा न खरीद कर बाहरवालों का कपड़ा खरीदेगे तो चमार का लडका चमड़े का काम करेगा कैसे? और बुनकर का लड़का बुनकर का काम आगे चलायेगा कैसे?

गांव का शिक्षण ब्राह्मण संभाले

इस गांव में ब्राम्हण भी रहते है। ब्राम्हण विद्वान होते है। और देहातों मे अकसर नहीं रहते। मै अभी छोटे छोटे देहातो से होता हुआ आया हूं। मैंने कहीं ब्राम्हणों के घर नहीं देखे। छोटा गांव होते हुए भी यहां ब्राम्हण हैं क्योंकि यह क्षेत्र का गांव है। लेकिन यहां ब्राह्मणों के होते हुए भी यहां के लोग शिक्षित नहीं हैं। यहां के लोग मुझे आज सबेरे कहते थे कि यहां एक मदरसा खोलने के लिये सरकार से प्रार्थना की जाय। सरकार हर गाँव में कहां तक

मदरसे खोल सकती है ? और पैसा भी कहां से ला सकेगी ? इस गांव मे अगर ब्राह्मण रहते हैं तो यहां के बालकों को वे मुफ्त क्यों नहीं पढ़ाते है ? ब्राह्मण लोग रोज एक घंटा पढ़ायेंगे तो पाँच-सात साल में सारा गांव लिखना-पढ़ना सीख जायगा। मदरसा-खोलेंगे तो वहां बच्चों को रोज पांच छ:-घंटे पढ़ना होगा। और इतना समय गरीबों के बच्चे निकाल नहीं सकेंगे। इसलिये मैंने ब्राह्मणों से कहा है कि वे सिर्फ एक घंटा पढ़ावें और बच्चे भी एक घंटा सीखें। कुछ लोग शाम को एक घंटा पढ़ायेंगे कुछ लोग सुबह एक घंटा पढ़ायेंगे। पढनेवाले बाकी के समय काम करेंगे और पढाने वाले भी काम करेंगे। अगर इस तरह ब्राह्मण बिना शुल्क विद्यादान करेगा तो उसकी प्रतिष्ठा कायम रहेगी। लेकिन ब्राह्मण बन गये लोभी और फिर भी प्रतिष्ठा कायम रखना चाहते है। लोभ और प्रतिष्ठा दोनों साथ नहीं रहेंगे। इसलिये मैंने ब्राह्मणों से कहा है कि वे विद्यादान करें।

वर्णाश्रम धर्म कैसे टिकेगा ?

ये सारे ब्राह्मण वर्णाश्रमाभिमानी होते हैं। लेकिन उनके बदन पर मिल के ही कपड़े हैं। अब मै उनसे पूछूंगा कि भाई आप अगर वर्णाश्रम का अभिमान रखते हैं तो गाँव के बुनकर का कपड़ा क्यों नहीं पहनते हैं ? अगर वे जूते पहनते हैं तो गाँव के चमार के बनाये हुये क्यो नहीं पहनते ? इस तरह वर्ण-धर्म की प्रतिष्ठा कायम रखना उनका काम है। मैं ब्राम्हणों से और सब से प्रार्थना करता हूं कि अपने गाँव के उद्योग कायम रखों और इस

तरह वर्ण-धर्म कायम रखने मे मदद करो। ऐसा करोगे तो गोदावरी के तट का यह गॉव फिर से भाग्यशाली और सही माने मे सुवर्णपुर बनेगा।

इस गाँव के बहुत से लोग बाहर गये है। उन्होंने बाहर अपनी पढाई की है। लेकिन वे अपने इस गाँव की क्या सेवा कर रहे हैं? उनका का काम है कि अपने गॉव का जो ऋण उन पर है वह चुकावे और उसके लिये गॉव की सेवा मे लग जाय।

सबसे समान व्यवहार करो

अत मे एक बात और। यह क्षेत्र है। क्षेत्र मे ब्राह्मण ऊचे माने जाते है और हरिजन नीच माने जाते है। मुझसे कहा गया है कि मै इस बारे मे कुछ कहू। लेकिन इस बारे मे आप मुझसे मत पूछिये। इस गोदावरी नदी को ही पूछिये। क्या यह गोदावरी ब्राह्मण को पानी पिलाती है और हरिजन को नहीं पिलाती? तो जैसे गोदावरी सब के साथ समान व्यवहार करती है और यह सूर्य सब को समान भाव से प्रकाश देता है वैसे सबके साथ समान भाव से व्यवहार करना ही धर्म है। यह ऊचा वह नीचा कहने वाले धर्म का आचरण नहीं करते। इसलिए इस क्षेत्र मे किसी तरह का भेद-भाव होना ही नहीं चाहिये। दुनिया मे दो ही जातिया है। एक सज्जनों की और दूसरी दुर्जनों की। भला बर्ताव करनेवाला चांडाल भी ब्राह्मण से बढ कर है, और बुरा बर्ताव करनेवाला ब्राम्हण भी चांडाल से बदतर है।

तो मेरे भाइयो, मुझे जो कहना था मै कह चुका। मै एक दफा आपके गाँव मे आया। फिर कब आऊंगा कौन जाने ? हम लोग सर्वोदय यात्रा के लिये निकले हैं। जैसे यह गोदावरी आप के गाँव से होकर गुजरती है वैसे हमारी यात्रा भी सहज ही यहां आ गई है। तो आप से मेरी प्रार्थना है कि इस क्षेत्र को सच्चे अर्थ मे क्षेत्र बनाओ। यहां के हर मनुष्य को पढ़ना-लिखना आना चाहिये एक बात, और यहां जो चीजे बनती है उन्हीं को आप को खरीदना चाहिये यह दूसरी बात। एक ज्ञान की है और दूसरी प्रेम की। ये दो बाते आप ध्यान में रखियेगा। मेरा आप को प्रणाम।

गेन अर्थात् सुवर्णपुर, (जि० आदिलाबाद)
२३-३-५१

सतरहवाँ दिन—

: २१ :

गाँव गोकुल बने

मुझे बहुत आनंद होता है कि आप इतनी बहनें और भाई दूर दूर के गाँव से हम लोगों से मिलने के लिये आ गये हैं। अभी दो तीन साल के पहले आपका यह हैद्राबाद का राज्य बड़ा दुखी था। रजाकार लोगों का जुल्म चल रहा था और आप सब लोग भयभीत थे। कोई कुछ कर नहीं सकता था। लेकिन रजाकारों की सल्तनत खतम हुई और आप लोग अब आजादी से इकठे हुए हैं। नहीं तो ऐसी सभाओं में कोन आ सकता था?

आजादी का मतलब

लेकिन आजादी का यह मतलब नहीं है कि आप बिना काम किये सुखी हो जायेंगे। हम लोग हाथ पर हाथ दिये बैठे रहेंगे तो हम आजाद हो गये है इसलिये मुफ्त खाने या पहनने को थोड़े ही मिलनेवाला है!

अपने ही सूतका कपड़ा पहनें

आज मैंने देखा यहां पर बहुत स्त्रियां कात रही थीं, लेकिन वह देख कर भी मुझे आनंद नहीं हुआ। क्योंकि कातनेवाली बहनों के बदन पर तो मिल का ही कपड़ा था। कातने से मजदूरी मिलती है। इसलिये वे कातती है। लेकिन हमारे सूत की कीमत

अगर हम नहीं करेंगे तो लोग क्यों करेंगे ? हमें हमारे सूतका ही कपड़ा पहनना चाहिये।

सरकार के सिपाही हैं

लोग मानते हैं कि हमको सरकार अनाज दे, कपड़ा दे। लेकिन क्या सरकार के पास अनाज का और कपड़े का खजाना है? हम सारे हमारी सरकार के सिपाही हैं। अगर हम सिपाही का काम नहीं करेंगे तो हमारी सरकार बेकार हो जायगी। हम काम करेंगे तभी सरकार मजबूत बनेगी।

बाहर मत देखिए

इसलिये आप को मेरी सूचना है कि आप सब मिल कर एक समिति बनाइये। उस समिति द्वारा गाँव का सारा कारोबार चलाइये। गाँव में झगड़ा है तो बाहर की अदालत में नहीं जाना चाहिये। गाँव में कोई न कोई सज्जन होते ही हैं। उनके पास अपना झगड़ा रख कर उनका फैसला मानना चाहिये। सारे गाँव का हिसाब करके उसमें क्या बोना चाहिये वह तय करना चाहिये। आप के गाँव मे सब तरह की शक्ति है। अनाज आप तैयार करते है, तरकारी आप ही करते हैं, दूध, घी भी आप के यहां होता है। इतना होते हुए भी आप भिखारी हैं, क्योंकि ये चीजें आप खा नहीं सकते, उनको बेचना चाहते है। और बेचते क्यों हैं? पैसे के लिये। और पैसा क्यों चाहिये? बाहर से सारा पक्का माल खरीदने के लिये। अपना कच्चा माल आप बेचते हैं और पक्का माल मोल लेते है। इस तरह से आप लोग स्वराज्य का अनुभव नहीं कर सकेंगे।

सारा गांव एक कुटुम्ब बने

और एक बात आप को कहनी है। हरेक गाँव में अलग अलग पार्टियां होती है। उससे गाँव में झगड़े होते है। लेकिन सारा गाँव एक कुटुंब के जैसा होना चाहिये। कोई आपसे पूछे कि क्या आप काँग्रेसवाले है या कम्युनिस्ट है या समाजवादी है, तो जवाब देना चाहिये कि हम हमारे गाँव के हैं और उस गाँव की सेवा यही हमारा धर्म है। भगवान श्रीकृष्ण के गोकुल मे सारा गोकुल एक कुटुंब बन गया था उस तरह आप का गाँव गोकुल बनना चाहिये। इस तरह अपने गाँववालों पर प्रेम करना सीखेंगे तो सारा गाँव भगवान का निवास-स्थान बन जायगा।

झुकें नहीं, नम्रता रखे

आखिर मे एक बात। आप लोग नमस्कार करने के लिये आते हैं और पाव पर सिर झुकाते है। आप लोगो को खड़े रह कर ही नमस्कार करना चाहिये। हमको सीखना चाहिये कि हम किसी के आगे इस तरह अपना सिर झुकायेगे नहीं। हमारा आदर और प्रेम हमको प्रकट करना है तो दोनों हाथ जोड़ कर नम्रता से सिर झुका कर खड़े खड़े ही नमस्कार करना चाहिये। पैर तक सिर नहीं झुकाना चाहिए। मै आप सब को प्रणाम करता हू।

बालकोंडी, (जि० निजामाबाद)
२४-३-५१

अठारहवां दिन—

: २२ :

सच्चा स्वराज्य

आप मेरा भाषण सुनने के लिये इतनी बड़ी तादाद में यहां आये हैं। आप की उत्सुकता मै समझ गया हूं। आप शांति से बैठे हैं यह देख कर मुझे खुशी होती है।

स्वराज्य आने पर भी हालत क्यों नहीं सुधरी

आज घर पर बात हो रही थी तब कुछ लोगों ने कहा कि स्वराज्य आया है फिर भी कोई खास फरक हम नहीं देखते हैं। मुझे यह सुन कर आश्चर्य नहीं हुआ। देखिये आप के इस निजाम के मुल्क में करीब सात-आठ सौ साल से दूसरों की सत्ता चली आ रही है। और अब दो साल से आप की खुद की सत्ता आई ऐसा कहते हैं। अब यह स्वतंत्रता आप को किस तरह हासिल हुई है? तो बोले पुलिस ॲक्शन से। पहले के जमाने में भी इसी तरह राज्यों में फेर-बदल होते थे। एक राज्य जाता था और दूसरा आता था, लेकिन उस से प्रजा मे कोई फरक नहीं होता था। तो प्रजा मे कोई फरक हुए बगैर जो राज्य आता है वह स्वराज्य हो ही नहीं सकता। वह परराज्य है, चाहे उसको चलानेवाले अपने लोग भी क्यों न हो।

जब यहां रजाकारों का जुल्म था तब आप लोग भयभीत थे। तो क्या अब आप लोगों ने भय छोड़ कर के यह राज्य हाथ में लिया

है ? लोगों का भय तो जैसा का वैसा ही है। आज भी पुलिसे डंडा चलायेगी तो लोग डरेंगे। परकीय सत्ता इसलिये होती है कि लोगों में भय होता है। अगर वह भय कायम है तो स्वराज्य आया कैसे कह सकते हैं ? परकीय सत्ता इसलिये होती है कि लोगों मे आपस आपस में एकता नहीं होती। अगर लोगों में आज भी एकता नहीं है तो स्वराज्य आया कैसे कह सकते हैं ? परकीय सत्ता इस-लिए होती है कि लोग शराबी होते हैं, व्यसनी होते हैं, पराक्रमहीन होते हैं। अगर आज भी लोग शराबी हैं, व्यसनी हैं, और पराक्रम-हीन हैं, तो स्वराज्य आया कैसे कह सकते हैं ? लोगों में परकीय सत्ता इसीलिए होती है कि लोग आलसी हैं। अगर आज भी लोग आलसी हैं तो स्वराज्य आया कैसे कह सकते है ? इसलिए मुझे आश्चर्य नहीं होता कि आप लोगों की स्थिति पहले थी वैसी ही आज है। अगर मुझे कोई कहेगा कि कल रात थी और आज दिन हो गया है फिर भी प्रकाश नहीं है, तो मैं कहूगा कि दिन नहीं हुआ है बल्कि छोटी सी लालटेन लगी हुई है। तो यही समझो कि पुलिस ॲक्शन के पहले रात थी, और आज भी रात है, लेकिन जरासी लालटेन लग गयी। लेकिन उतने लालटेन से दिन नहीं होता है। दिन के लिये तो सूर्य का प्रकाश चाहिये जो हर घर मे पहुँचता है।

स्वराज्य का अर्थ

आप के इस गाँव मे १२ हजार लोग रहते है, लेकिन यहां आपस आपस में सहकार्य से कौनसा काम चल रहा है ? क्या गाँव का शिक्षण आप लोग चलाते है ? आप कहेंगे हमारा रक्षण सरकार करती है और शिक्षण हमें सरकार देती है। इस तरह

अगर गाँव का सारा काम हुकूमत ही करती है तो फिर गाँव का स्वराज्य कहां रहा ? यहां कपड़ा बाहर से आता है, तेल बाहर से आता है तो गाँव में आप क्या करते हैं ? यहां बीड़ियाँ बना कर आप बबई भेजते है और वहां से पैसा लाते हैं। उससे क्या हुआ ? शायद पहले से आप अधिक बीड़ियाँ पीने लगे होगे। स्वराज्य का मतलब तो यह होता है कि हरेक गाँव अपनी-अपनी बहुत सारी आवश्यकताओं को गाँव में ही पूरी कर लेता है। और इस तरह जो गाँव स्वावलंबी होते हैं वे एक दूसरे की पूर्ति कर सकें इसलिये सरकार निमित्तमात्र होती है। सरकार का काम यह नहीं है कि गाँव को हर चीज बाहर से ला दे। सब गाँवों का संबंध बना रखने के लिये सरकार है। सरकार का काम हरेक गाँव को स्वावलंबी बनने में मदद देने का है। मेरी तो व्याख्या यह है कि जहां स्वराज्य नहीं होता है वहां दुर्गुण होते हैं। गोरी चमड़ी वाले लोग गये और काली चमड़ीवाले आये इससे स्वराज्य नहीं बनता। तो मुझे जब लोग कहते हैं कि स्वराज्य के बाद हमारी स्थिति सुधरी नहीं है तो मै पूछता हू कि क्या आप के दुर्गुण कम हुए है ? अगर हमको यह अनुभव आता है कि पहले से हमारे दुर्गुण कम हुए हैं तो स्वराज्य आया ऐसा समझ सकते हैं। अगर वैसा अनुभव नहीं आता है और चार साल पहले जिन दुर्गुणों में हम थे वे अब भी कायम हैं तो स्वराज्य हमें नहीं मिला है ऐसा समझना चाहिये। इसलिये मुझे आप लोगों को यही कहना है कि अभी स्वराज्य हासिल करना बाकी है ऐसा समझ कर आप जोरों के साथ काम में लग जाइये।

हरेक को दो भाषाओं का ज्ञान हो

अब दूसरी बात जो आज मुझे सूझ रही है वह मैं कहता हूं। हमारी विधान सभा ने हिंदी को राष्ट्रभाषा के तौर पर स्वीकार किया है। इसलिये अब हरेक को राष्ट्रभाषा का उत्तम अभ्यास करना चाहिये। मैंने तो यह उपमा दी है कि जैसे मनुष्य को दो आंखें होती है वैसे हरेक हिंदुस्तानी को दो भाषाओं का ज्ञान होना चाहिये, एक अपनी मातृभाषा और दूसरी राष्ट्रभाषा। मेरा तर्जुमा करने के लिये जो यहां खडे है उन्होंने हिंदी भाषा का अच्छा अभ्यास नहीं किया है। तो हो यह रहा है कि आपके लिये जो विचार मै भेजता हूं उसमें से कुछ आपके पास पहुचते है और कुछ बीच मे खतम हो जाते है। यह आज का अनुभव ध्यान मे लीजिये और जल्दी से जल्दी राष्ट्रभाषा का अध्ययन सब कर लीजिये।

बड़े राष्ट्र की जिम्मेवारी

इन दिनों छोटे-छोटे राष्ट्र टिकते नहीं हैं। हिंदुस्तान जैसा बड़ा देश ही टिक सकता है। पुराने जमाने में छोटे छोटे राष्ट्र टिकते थे। लेकिन आज जमाना दूसरा आया है। आज बड़े राष्ट्र ही टिक सकते है। और आगे तो हम ऐसा स्वप्न देखते है कि सारी दुनिया मिल करके एक ही राज्य बन जाय।

तो यह सब ध्यान मे लेकर हरेक नागरिक का कर्तव्य है कि भारत की कोई भी एक भाषा और अपनी मातृभाषा अच्छी तरह सीखे। सारे भारत को एक माना है तो यह जिम्मेवारी उठानी ही चाहिये।

आरमूर (जि० निजामाबाद)
२५-३-५१

उन्नीसवां दिन—

: २३ :

हमारे पाप

आज मुझे इस बात की खुशी है कि मैं हिंदुस्तानी में ही बोलूंगा और आप मेरे व्याख्यान को समझ लेंगे। नहीं तो अकसर मेरे वाक्यों का तर्जुमा करना पड़ता था तेलगु में, जिसमे भाषण का बहुतसा सार मैं खो बैठता था। लेकिन वह बात आज नहीं होगी और मेरी आवाज सीधी आपके कानों तक और मैं उम्मीद करता हूं कि हृदय तक, पहुंचेगी।

अभी आप लोगों को सुनाया गया कि हम वर्धा से पैदल-यात्रा के लिये निकल पड़े हैं। शिवरामपल्ली में सर्वोदय संमेलन होने जा रहा है, वहां जा रहे है। वैसे रास्ते में तो आप का गाँव नहीं आता है, थोड़ा बाजू में है। इसलिये यहां आने का मैंने नहीं सोचा था। लेकिन आपके गाँववाले पहुंच गये। उन्होंने बहुत आग्रह किया तो मैं पिघल गया। और आप लोगों के दर्शन करने के लिये आरमूर से आज १७ मील चल कर पहुंच गया हूं।

छोटे देहात में क्यों जाता हूं

अकसर मेरी इच्छा खास कर छोटे छोटे गावों में जाने की होती है। क्योंकि ऐसे छोटे गाँवों में लोग बहुत कम पहुंचते हैं। इसके अलावा पदैल-यात्रा का यह उद्देश्य था कि जिन

देहातो में अकसर जाना नहीं होता है वहां जा कर वहां की स्थिति देखूं। तो आप का गाँव वैसे छोटा भी नहीं था और रास्ते पर भी नहीं था। दोनों लिहाज से यहा आने का मुझे कोई आकर्षण नहीं था। फिर भी आप लोगो के प्रतिनिधियो ने आपका प्रेम मुझे पहुंचाया। वह मुझे यहां खींच लाया है। छोटे देहात में जाना होता है तो घटा डेढ घटा उस गाँव में मै घूम लेता हूं। मेरे कार्यक्रम मे यह भी एक चीज है। बहुत सारे घरों मे जाता हू; वहां की बहनों से बातचीत करने का मौका मिलता है। इस तरह काफी प्रेमभाव महसूस होता है। मेरे और गाँववालो के बीच कोई परदा नहीं रहता।

शहर की व्याख्या

अब यह बात शहरो मे तो नहीं होती। शहर मे यह अपेक्षा भी नहीं होती कि सब से परिचय हो। इतना ही नहीं बल्कि मैंने तो शहर की व्याख्या ही यह की है कि शहर वह है जहां मनुष्य अपने पडोसी को नहीं पहचानता। अगर आप से पूछा जाय कि आपके पड़ोसी कौन है और वे क्या करते है, और आप उसका जवाब मुझे दे सके तो मै कहूंगा कि आप दर असल नागरिक हैं ही नहीं। आप देहात के रहनेवाले है। शहर तो वह है जहां एक दूसरे की पहचान नहीं, एक दूसरे की परवाह नहीं, और जहां प्रेम का कोई सवाल ही नहीं। हरेक अपने अपने में मग्न है। अगर दूसरे किसी से संबंध आया तो अपनी गरज से। टिकट घर पर लोग इकट्ठा होते हैं उनके बीच में कोई संबंध

नहीं होता सिवाय इसके कि हरेक को अपनी अपनी टिकट कटानी होती है। वैसे शहर मे जो समुदाय इकट्ठा होता है वह समुदाय की गरज से नहीं बल्कि अपनी गरज से होता है। तिसपर भी मानवता होती है इसलिये कुछ प्रेमभाव पैदा हो जाय तो लाचारी की बात है।

शहरों में नहीं रहते

एक पुरानी कहानी है। उपनिषदो मे वह किस्सा आया है। एक राजा था और उसने किसी ज्ञानी का नाम सुना। राजा का दिल बडा था। जब वह किसी ज्ञानी का नाम सुनता तो उससे मिलने की उसको बहुत तीव्र इच्छा हो जाती थी। तो राजा ने अपने सारथी को बुला कर कहा कि "जाओ भाई, फलाने ज्ञानी का नाम मैंने सुना है उसका पता लगाओ। वह कहां रहता है? ढूंढ निकालो।" राजा के हुक्म से सारथी गया और उसने सारी राजधानी ढूढी। लेकिन जिस ज्ञानी को ढूंढना था उसका कोई पता नहीं लगा। वह राजा के पास वापिस आया और कहा, "मैंने सब जगह ढूढ लिया लेकिन "नाविंद इति प्रत्येयाय"—मुझे वह ज्ञानी नहीं मिला।" तो राजा बोला, "अरे मूरख तू कैसा है, ज्ञानी जहां होते है वहां ढूंढना चाहिये। ज्ञानी क्या कहीं शहर में होते हैं?" फिर वह सारथी जंगल में गया। वहां उसको वह ज्ञानी मिला। फिर राजा को आकर सारथी ने यह बात बताई। राजा ज्ञानी के पास पहुंचा और बहुत कुछ ज्ञान उस ज्ञानी से उसने हासिल किया। वह सारा उपनिषद में दिया

है। हम लोगों को आश्चर्य होगा कि वह उपनिषद का ऋषि ज्ञान की आशा ही शहर मे नहीं करता है। और इधर देखो तो जो भी विद्यालय, हाईस्कूल या कॉलेज आदि खुले हैं सारे शहरोंमें है। मानों सरस्वतीदेवी ने अपने कमलासन को छोड कर नगर में ही आसन डाला है। लेकिन उस जमाने में यह बात जितनी सही थी उससे भी आज वह ज्यादा सही है कि शहर में कोई विद्या नहीं है।

शहरों में विद्या का लय

मैं तो बहुत दफा कह चुका हू कि शहरो में विद्यालय तो बहुत खुले हैं लेकिन वहां विद्या का लय होता है, विद्या का आलय वह नहीं है। आजकल के विद्यालयो मे जो विद्या पढ़ाई जाती है वह बिलकुल ही बेकार है। नागरिकों से जो कुछ आशा करनी है उसके लायक विद्या हाईस्कूल, कालिजो में होनी चाहिये, वह वहां मौजूद नहीं है तो वह विद्या किस काम की? आज कल जो विद्या चलती है वह हमारे काम की नहीं है, उसमें फौरन परिवर्तन होना चाहिये; यू कहते कहते सरदार वल्लभभाई पटेल चले गये। और मैने तो कई दफा कहा है कि भाई इस तरह की विद्या होने के बजाय न होना बेहत्तर है। अगर नये ढंग के विद्यालय शुरू करने में देरी लगती है तो कम से कम पुरानी विद्या तो बंद कर दो। चार-छः महीने बच्चों को छुट्टी दे दो, कोई नुकसान नहीं होगा। वैसे तो आज जिस तरह स्कूल चलती है उसमें भी चार-छः महीनों की छुट्टी होती है। गरमी की मौसम में

लगातार दो-दो महीने छुट्टी होती है जब कि किसान धूप में अपने खेत पर काम करता है। लेकिन हम मकानों में बैठ कर विद्या का आदान-प्रदान नहीं कर सकते! इस तरह साल भर में चार-छः महीने छुट्टी लेते हैं और बारह-बारह पंद्रह-पंद्रह साल सीखते रहते हैं। बच्चों पर उनके मां-बाप तालीम के लिये पैसा खर्च करते हैं। और बच्चे बिना काम किये जिंदगी कैसे बसर हो इसकी खोज में रहते है। इसमें उनका कोई दोष नहीं है। जो विद्या उन्हें मिली है वह निर्वीर्य है। तो बच्चों के शरीर भी नाजुक बनते हैं। कोई रुहानी याने आत्मिक ताकत मिलती नहीं है, काम की आदत पड़ती नहीं और कोई दस्तकारी सिखाई जाती नहीं। जो उठता है उपदेश देता है कि देश की पैदावार बढ़ाने की आवश्यकता है, और हरेक का काम है कि देश के लिये कुछ न कुछ पैदा करे। इस तरह प्रवचन देनेवाले देते है और सुननेवाले सुनते हैं। लेकिन दोनों मिल-कर कोई चीज पैदा नहीं होती। चीज तो तब पैदा होती है जब कोई करे। लेकिन करने की तालीम स्कूल में नहीं है। इस हालत में देश का कोई भला यह शहर की तालीम नहीं कर रही है। उससे बेकारी में वृद्धि होती है, मनुष्य के दिल में एक तरह का असंतोष पैदा होता है। इसलिये यद्यपि शहरों में इतने विद्यालय हैं फिर भी देश का भला हो, मानवता ऊंची उठे, दीनों के दुःख मिटें परस्पर सहकार बढ़े, सारा देश वीर्यवान, बलवान हो ऐसा कोई काम हम कर नहीं पाते। और सारे शहर एक तरह से राष्ट्र के लिये भाररूप से हो गये हैं।

युवानो में सर्वोदय का संदेश सुनने की उत्सुकता

ऐसी निकम्मी तालीम दी जाने के बावजूद मै जब कभी शहरो में हाईस्कूल या कॉलेजो में गया हूं और वहा बोला हू तो आश्चर्य चकित हुआ हू। क्योंकि मै देखता हू कि वहा के लड़के सर्वोदय के विषय में मै जो कहता हू वह सुनने के लिये अत्यत उत्सुक रहते हैं और उससे प्रभावित होते हैं। हाईस्कूल, कॉलेजो के नवयुवको मे एक ऐसी आकांक्षा काम कर रही है जिससे उनका जी छटपटा रहा है कि कुछ न कुछ करना चाहिये जिससे हमारा देश आगे बढे। मानव मे रजोगुण और तमोगुण काम करते ही है, और इन दिनो इन दोनों का नाच बहुत जोरो से चल रहा है। रिश्वतखोरी बढी है, आलस्य बढा है शराबखोरी और दूसरे व्यसन बढे है, एक दूसरे को लूटने का विचार हो रहा है, यह सब हो रहा है। लेकिन इतना होते हुए भी युवानों मे एक ऐसी सद्भावना और शक्ति काम कर रही है जो इस बिगड़ी हुई हवा से बिलकुल अलिप्त है और जिसको अपनी ही कल्पना में विचरने की इच्छा हो रही है। युवानों को लग रहा है कि चाहे साम्यवाद आये, चाहे समाजवाद आये, चाहे सर्वोदय आये, किसी भी तरह से आज जो बुरी हालत है वह जाय। इस तरह की प्रेरणा तरुणो में मैंने देखी है। मैंने सोचा इसका कारण क्या होगा। तो कारण मुझे यही लगा कि इस देश पर भगवान की कृपा हो रही है।

वैसे यह देश एक पुण्यभूमि के तौर पर सारी दुनिया में मान्य है। हम तो कहते ही आये हैं कि "दुर्लभं भारते जन्म"

लेकिन सारी दुनिया कबूल करती है कि हिंदुस्तान के इतिहास में एक ऐसी विशेषता है जो दूसरे देशो के इतिहास में कम पाई जाती है। यहां हमने अनेक प्रकार की तपस्या की है। यहां अनेक खोजें हुई हैं। अनेक तरह के आध्यात्मिक शोध यहां हुए हैं। इन दिनों पश्चिम में जिस तरह वैज्ञानिक और प्रापंचिक शोध हुये हैं वैसे हमारे यहां आध्यात्मिक शोध और प्रयोग हुये हैं। यह देश क्या है? यह तो सारी पृथ्वी का एक दर्शन है। "नाना धर्माणं पृथिवीम् विवाचसम्" अनेक धर्मवाले और अनेक भाषावाले लोग पृथ्वीभर में फैले हुये हैं और "माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।" यह सारी भूमि मेरी माता है और मैं उस भूमि का पुत्र हूं, यह जो सारी पृथ्वी के लिये वैदिक ऋषि ने कहा था वह इस भरतभूमि के लिये भी उतना ही लागू है। यहां के विचारवान और ज्ञानी लोगों ने कभी आप पर भेद नहीं रखा। जिसे संकुचित देशाभिमान कहते हैं वह इस भूमि में कभी जन्मा ही नहीं। इसलिये दुनियाभर के लोग यहां आये तो उनका बहुत प्रेम से यहा स्वागत हुआ है। इस तरह के कई पुण्य इस भूमि में हुए हैं तो परमेश्वर की कृपा उस पर होनी ही चाहिये।

हमारी भूमि के कुछ पाप

लेकिन जैसे इस भूमि में कुछ पुण्य हुए हैं वैसे कुछ पाप भी हुए हैं। और पापों को पुण्य के साथ भुगतना ही पड़ता है। यह नहीं होता कि पांच रुपयों का पुण्य किया और तीन रुपयों का पाप किया तो आखिर दो रुपयों का पुण्य बचा। पाप-पुण्य का हिसाब पैसे जैसा नहीं होता है। अगर पांच रुपयों का पुण्य

किया है तो वह भी अलग से भोगना है और तीन रुपयों का पाप किया है वह भी अलग से भोगना है। दोनों को भोगना पड़ता है। एक में से दूसरा बाद नहीं होगा। बहुत लोगों को इस बात का खयाल नहीं होता। वे बहुत पाप करके पैसा कमाते हैं और फिर सोचते हैं कि कुछ दान देंगे, धर्मशाला बांध देंगे तो उस पुण्य से पाप खतम हो जायगा। लेकिन पाप और पुण्य दोनो अलग से भोगने पड़ते हैं। तो इस पुण्यभूमि में यद्यपि पुण्य काफी हुआ था तो भी पाप भी हुआ था। वह पाप यह कि यहां के लोगो ने उच्च नीच भाव को बढ़ाया। हमारे समाज की रचना में श्रम के लिहाज के खयाल से वर्ण-व्यवस्था का उदय हुआ और इसमे मै कोई दोष नहीं देखता हू। लेकिन उस वर्ण-व्यवस्था मे आगे चल कर उच्च-नीच भाव दाखिल हुए और जितने-जितने परिश्रम के उपयोगी काम थे वे सारे नीच श्रेणी के गिने गये। और वे काम करने वाले मनुष्य भी नीच माने गये। यहा तक कि उनमें से कुछ लोगों को अछूत तक हमने माना। काम करना बेइज्जती समझा गया। ज्ञानी काम नहीं करेगा, भक्त माला जपेगा लेकिन काम नहीं करेगा। संन्यासी काम नहीं करेगा। ब्राह्मण काम नहीं करेगा। इस तरह काम न करने वालों की संख्या बढ़ गई और उनकी इज्जत भी बढ़ गई। जो काम करते थे उनकी संख्या घट गई और उनकी इज्जत भी घट गई। यह बड़ा पाप हमारे देश में हुआ। तो उस पर परमेश्वर की अब कृपा हुई और शताब्दियों से हम लोग गुलामी भुगत चुके।

पापों का प्रायश्चित्त हुआ

अब यह दीखता है कि इस देश ने जितना पाप किया था उसका प्रायश्चित्त उसको मिल चुका ऐसा परमेश्वर को लगा। आखिर परमेश्वर कृपालु तो होता ही है। उसने अपनी कृपा इस देश की तरफ फिर से दिखाई, जो पहले भी थी। इसके सिवाय मै और कोई कारण नहीं देखता कि हमारे जैसे टूटे-फूटे लोग भी गाँधीजी जैसा नेता निमित्तमात्र बनने पर आजादी हासिल कर सके। मै तो हमारे लोगो मे ऐसी कोई शक्ति नहीं देखता हूं कि जिसके बल पर हमको आज़ादी मिली ऐसा हम कह सकते हैं। अगर उस शक्ति का आत्मविश्वास हमे होता तो हिंदुस्तान की आज जो हालत है वह हम नहीं देखते। उसका रंग हमको दूसरा ही दीखता। यह कभी नहीं हो सकता कि स्वराज्य आता है। और लोगों का दुःख, विमनस्कता और मनोमालिन्य जो पहले था वैसा ही बना रहा। लेकिन ऐसा बना है तो उसका मतलब यह है कि परमेश्वर की इच्छा से ही हम स्वराज्य मे दाखिल हुए हैं। इसी कृपा के कारण मैं यह देख रहा कि आज के बिगड़े हुए वातावरण में भी हाईस्कूल और कॉलेजों के युवानों मे उच्च आकांक्षा और सद्भावना कुछ अंश मे सर्वत्र है।

साम्ययोग से तरुणों को स्फूर्ति

हम लोग आश्रम मे काम करते हैं वहां मेरे पास काफी तरुण लोग हैं। बहुत सारे तो हाईस्कूल-कॉलेजों को छोड़ कर आये है। और वहां आ कर वे क्या करते हैं? कोई खेती में लग

गये हैं, कोई जमीन खोदते हैं, कोई पानी खींचते हैं, कोई रसोई करते हैं, कोई भंगी का काम करते हैं। हमको कुआं खोदने की जरूरत थी तो आखिर वह भी हमने शुरू कर दिया। जिन तरुणों को उस काम का कोई अनुभव नहीं था वे उस काम को बड़े उत्साह के साथ कर रहे है। मैं बड़ा ताज्जुब में रह जाता हूं कि यह प्रेरणा उन जवानों में कहां से आयी। तो सिवाय इसके कि यह परमेश्वर की इच्छा है, मुझे और कोई जवाब नहीं मिलता है। और क्योंकि इसमें मैं परमेश्वर की इच्छा देख रहा हू तो मेरा उत्साह परमावधि को पहुंचता है। जब मैं हिंदुस्तान की अभी की हालत के विषय में लोगों में निराशा देखता हू तो उस निराशा का जरा भी स्पर्श मुझे नहीं होता। क्योंकि मै देखता हूं कि यद्यपि काफी अंधकार फैला हुआ है, फिर भी उसको तोड़नेवाली शक्ति का जन्म हो रहा है, याने युवानों में बलवान प्रेरणा काम कर रही है। उनकी आत्मा उछल रही है। वे देख रहे हैं कि कौन ऐसा मिलता है जो हमें मार्ग बतायेगा जिससे कि सारे हिंदुस्तान में साम्ययोग दीख पडेगा। बस साम्ययोग का नाम लीजिये और तरुणों का उत्साह देखिये। इसीलिये जिन्होंने बिलकुल परिश्रम नहीं किया था वे परिश्रम के लिये तैयार हो रहे है। और इस तरह का काम जहां भी आप शुरू करेंगे वहां जवान लोग उत्साह से काम करने के लिये सामने आते है ऐसा दृश्य आप को दीख पड़ेगा।

मेरा खास दावा

इसलिये मैं बहुत दफा कॉंग्रेस वालों को सुनाता हूँ। उनको इसलिये सुनाता हू कि वह एक बड़ी जमात है। उसके पीछे तपस्या का भाव है। पचास-साठ साल के इतिहास में कॉंग्रेस ने बहुत भारी तपस्या की है। इस युग मे कई महान् महान् पुरुष हमारे देश में पैदा हुये और उन सबका प्रयत्न कॉंग्रेस के द्वारा हुआ। इसका मतलब यह हुआ कि कॉंग्रेस ऐसी संस्था बनी कि जिसका सपर्क सारे देश से आ गया। इसलिये मैं कॉंग्रेसवालों को सुनाता हू। लेकिन मैं दूसरे लोगों को भी सुनाता हूं। समाजवादियो में मेरे कई मित्र हैं। वे जानते है कि यह एक ऐसा मनुष्य है जो भेद-भाव नहीं रखता है। मेरा ऐसा खास दावा है कि मै अपने को किसी पक्ष का कभी समझता ही नहीं हूं। मेरे सिर पर किसी तरह का लेबल कभी चिपका ही नहीं। मेरा दिमाग किसी वाद के पीछे पागल नहीं हुआ है। जहां जहां सत्य का थोड़ा अश भी दीख पडता है वह ग्रहण करने के लिये मैंने अपनी बुद्धि को हमेशा स्वतंत्र रखा है। इसलिये समाजवादियों में भी मेरे कई मित्र पड़े हैं। तो मैं उनको भी सुनाता हूं और सबको सुनाता हूं कि अभी वाद-विवाद छोड़ दीजिये। वाद के लिये अभी मौका नहीं है। देश अभी ही स्वतंत्र हुआ है। जहां देश स्वतंत्र होता है वहां कई तरह की शक्तियां काम करती हैं। उनमें कुछ शक्तियां प्रतिक्रियावादी भी होती हैं। उनका मुकाबला सबको मिल कर करना चाहिये। जब इनका मुकाबला होगा और देश का नैतिक

स्तर चाहिये वैसा बनेगा उसके बाद अपने अपने वादो के लिये अवकाश रहेगा। तब तक वादो को छोड़ो और सारे लोगों की सेवा में लग जाओ।

लागों की सेवा कैसे होगी

और सेवा व्याख्यान श्रवणादि से नहीं बल्कि प्रत्यक्ष शरीर-परिश्रम से होगी। आज हिंदुस्तान के हरेक नागरिक से, और ग्रामीण से, चाहे वह पुरुष, स्त्री, बच्चा, बूढ़ा कोई भी हो, यह आशा की जाती है कि उस से जो भी प्रयत्न बन सकेगा अपनी मातृभूमि के लिये उसे करना चाहिये। अगर यह नहीं होता है तो हमारे देश की समस्या हल नहीं होगी। लोग मुझे पूछते है कि सर्वोदय क्या है? मै कई तरह के अर्थ समझाता हू। एक अर्थ यह भी समझाता हूं कि सर्वोदय याने सब का प्रयत्न। एक बच्चा भी ऐसा नहीं रहना चाहिये कि जिसने देश के लिये कुछ न कुछ काम नहीं किया है। इसीलिये गांधीजी ने हरेक को दीक्षा दी कि सूत कातो। और भी दूसरे काम करो। लेकिन कोई इतना कमजोर है कि दूसरा कुछ काम नहीं कर सकता तो वह भी थोड़ा सूत अगर कात लेता है तो देश की पैदावार मे उतनी वृद्धि होती है। जैसे बूंद बूंद से नदी बनती है वैसे हरेक मनुष्य से इस वक्त परिश्रम होना अत्यंत जरूरी है।

मैं तो समझता हू कि आप ऐसा कोई कार्यक्रम प्रत्यक्ष पैदावार का निकालो। गरीबो से एकरूप होने का कार्यक्रम

निकालो कि जिससे अमीर, गरीब, शिक्षित, अशिक्षित, नागरिक और ग्रामीण यह सारा भेद मिट जाय, किसी प्रकार का उच्च-नीच भाव न रहे। इस तरह का कार्यक्रम शुरू करो तो कोई वाद का सवाल ही पैदा नहीं होगा और आप देखेंगे कि तरुणों को कितना उत्साह आता है और कितनी तीव्र प्रेरणा से वे उस कार्यक्रम में शामिल होते हैं।

तो मै सब से पहले कॉंग्रेसवालो को सुनाता हूं फिर समाज-वादियो को सुनाता हूं और बाद मे और भी जो बहुतसे वादी पड़े हैं उनको सुनाता हू कि भाइयो, तुम्हारे जो भी अलग विचार हैं वह सारे रखो तुम्हारे पास। मै यह नहीं कहता कि उनको छोड़ दो· क्योकि जो विचार तुमको अच्छे लगते है और तुम्हारे दिल मे बैठे है वे आप कैसे छोड़ेगे ? और छोड़ना भी नहीं चाहिये। लेकिन उन विचारो को ध्यान में रखते हुए भी यह समझो कि फिलहाल देश को शरीर-परिश्रम की जरूरत है और भेदभाव मिटाने के कार्य-क्रम हाथ में ले लो। तो देखोगे कि कितनी महान् शक्ति पैदा होती है। हमने थोड़ा करके देखा है जिससे हमको अनुभव आया है कि कितनी स्फूर्ति उससे मिलती है। देखनेवालो और सुननेवालों को स्फूर्ति मिलती है तो प्रत्यक्ष करनेवालों को कितनी मिलती होगी इसका अंदाजा आप लगाइये।

आज आपके शहर में आया तो यह विचार सहज सूझा कि शहर और देहात मे भेद क्यों होना चाहिये ? शहरों को देहात की सेवा में लग जाना चाहिये। देहातियों मे शहरों को मदद

करने की प्रेरणा होनी चाहिये। इस तरह एक दूसरे को एक दूसरे की मदद करने की प्रेरणा क्यो नहीं होनी चाहिये? ऐसी प्रेरणा यदि होती है तो यह सारा भेद मिट जायगा और सारे मिलकर हिंदुस्तान की सेवा में लग जायेंगे। भगवान ने हरेक को अलग अलग शक्ति दी है। इस तरह की विषमता दुनियॉ में है इसमे दोष नहीं बल्कि लाभ है। अगर संगीत मे केवल 'सा' 'सा' 'सा' ऐसा एक ही स्वर होता, 'ग' 'म' आदि कुछ नहीं होते तो संगीत ही नहीं बनता। लेकिन भिन्न-भिन्न स्वर होते हुये भी हरेक में भिन्न भिन्न गुण है इसलिये मधुरता होती है और सब मिल कर सुंदर संगीत बनता है। वैसे शहरवालो मे कुछ शक्तियाँ पड़ी हैं, लेकिन वे सारी एक दूसरे के खिलाफ काम करती है तो उन शक्तियों का जोड नहीं होता बल्कि घटती ही होती है। दस के विरोध में अगर आठ खड़े होते है तो दोनों मिल कर दो ही शक्ति रह जाती है। लेकिन दस के साथ अगर आठ लगते है तो शक्ति अठारह बनती है। यह सीधी गणित की बात है। तो हमारे देश में शक्ति काफी पड़ी है। लेकिन उस शक्ति का साक्षात्कार हमे तब होगा जब कि वह सारी एक दिशा मे लग जाय। नदी का पानी जब कई जगहों से एक दिशा में आता है तो शक्तिशाली नदी बनती है। लेकिन पानी अगर इधर उधर दौड़ता चले और नदी न बने तो वह सारा का सारा पानी कहीं न कहीं गायब हो जायगा। उसमें से कोई विशेष महान प्रवाह बनता हुआ दीख नहीं पड़ेगा। वैसे हममें शक्ति कम नहीं है।

लेकिन वह सारी अगर एक दिशा में लग जाती है तो उसका प्रकाश पड़ेगा, उसका स्वरूप दीख पड़ेगा, उसके परिणाम का अनुभव आयेगा।

मेरे भाइयो, मैने आपको काफी सुनाया। अगर आप के दिलों तक मेरी बात गई है तो कुछ न कुछ उत्पादक शरीर-परिश्रम मे लग जाइये और ऊंच-नीच भाव मन में से बिल्कुल निकाल दीजिये। यह मेरी आप से प्रार्थना है।

निजामाबाद
२६-३-५१

बीसवाँ दिन—

: २४ :

सज्जनों का समाज

कुष्ठ-रोगियों की सेवा

आप के इस गाव मे कोई पंद्रह-बीस साल पहले मै एक बार आया था। लेकिन यहां गांव के भितर नहीं आया। कुष्ठ-रोगियो का दवाखाना देखने के लिये आया था जो उन दिनो बहुत मशहूर था। हिंदुस्तान भर मे इस तरह के कुष्ठ-रोगियो के दवाखाने ईसाई भाइयों ने चलाये है। वैसे हिंदुस्तान मे ईसाइयो की सख्या बहुत कम है। और जो बीमार होते है उनमें ज्यादातर हिंदू-मुसलमान ही होते है, ईसाई कम होते है। उन दिनो हमारे मन मे विचार आता था कि हम ऐसी सेवा क्यो न करे? वैसे हम लोग दूसरी सेवा तो करते थे, जैसे हरिजन सेवा, खादी आदि। लेकिन कुष्ठ-रोगियो की सेवा का काम हाथ मे नहीं लिया था। जब इस सेवा के क्षेत्र मे आने की इच्छा हुई तो हममे से एक इस काम के लिये तैयार हो गये। उनकी तीव्र इच्छा हुई कि यह काम करें। तब वर्धा में हमने यह काम शुरू कर दिया। उस दृष्टि से उस समय वह दवाखाना मैंने देखा था और देखकर मुझे बहुत खुशी हुई थी। हमारे मित्र श्री मनोहरजी ने यह काम शुरू किया। वे खुद डॉक्टर नहीं थे। लेकिन इस काम के लिये जरूरी डॉक्टरी का ज्ञान

उन्होंने प्राप्त किया। इतने दिन उन्होने अकेले ही काम किया। वैसे वर्धा के कुछ डॉक्टरों ने भी उनकी मदद की।

लेकिन अब वहां दो अच्छे कार्यकर्ता इस काम के लिये मिले हैं। बीमारों की व्यवस्था भी अच्छी है। गाधीनिधि वालों ने भी तय किया है कि उस निधि से इस काम को कुछ मदद पहुंचाई जाय। क्योंकि महात्मा गांधी ने जो रचानात्मक कार्य बताये हैं उनमें इस काम का भी समावेश है। हम आशा करते हैं कि वह काम अब ठीक चलेगा।

सेवकों की कमी

लेकिन भारत मे सेवको की बहुत कमी है। और यह सेवको की कमी हमारे हर काम में बाधा डाल रही है। मानों फसल तो बहुत ज्यादा है और काटनेवालों की कमी है। हमारे देश में आज तरह-तरह के सेवकों की जरूरत है। आज तक स्वराज्य नहीं था तो वह प्राप्त करने में कार्यकर्ताओ की शक्ति लगी थी। लेकिन अब स्वराज्य मिलने पर कार्यकर्ताओं को सेवा के काम मे लग जाना चाहिये।

सेवकों का काम

भारत देश मे केवल यही एक रोग नहीं है। और भी बहुत रोग है। इन सब रोगों से लोगों को मुक्त करना सेवकों का काम है। लोगों को अच्छा खाने को भी नहीं मिलता। अच्छी खुराक के अभाव में रोगों की बन आती है। तो रोगो की भी एक समस्या है। और दरिद्रता की भी एक समस्या है। फिर दरिद्रता की समस्या के साथ व्यसनों की भी समस्या है। जिधर देखो उधर शराबखोरी

चल रही है। इधर इस मुल्क मे तो लोग शराब खूब पीते दीखते हैं। सब को शराबखोरी से मुक्त करना हमारा काम है। मतलब यह कि जिधर देखो उधर सेवा का काम पड़ा ही है। इसलिये सेवा में फौरन लग जाना चाहिये। कॉंग्रेसवालो को और दूसरे जो सेवक है उनको भी।

शराब के विरुद्ध प्रचार की आवश्यकता

पुराने जमाने में कॉंग्रेस पिकेटिंग द्वारा शराब के विरुद्ध प्रचार करती थी। अब तो कॉंग्रेस का ही राज्य है, लेकिन सरकार को लगता है कि शराबबंदी से सरकार की आमदनी बंद होगी और लोग तो छिप छिप कर चोरी से शराब पीते ही रहेंगे। इसलिये कार्यकर्ताओ का काम है कि चित्रों और व्याख्यानो के जरिये शराब की बुराइयो को लोगों के सामने रखें। जब ऐसे प्रचार से वातावरण तैयार हो जायगा तो गाँव गॉव मे प्रस्ताव पास करके सरकार को शराबबदी के लिये कानून बनाने की बात हम कह सकते है। याने इधर ज्ञान-प्रचार द्वारा और उधर कानून द्वारा यह काम करना होगा।

जो व्यसन लोगों मे सालों से घुसा हुआ है उसे निकालने मे तकलीफ तो होगी; लेकिन यह बात भी सही है कि हमारे सारे देश में वातावरण शराबखोरी के लिये अनुकूल नहीं है, प्रतिकूल है। यद्यपि सब लोग इसके विरोध मे हैं फिर भी कुछ जातियां, जैसे हरिजन आदि, शराब अधिक पीती हैं। इसलिये केवल कानून से यह काम हो, ऐसा नहीं मानना चाहिये। हम लोगों को प्रचार भी

काफी करना चाहिये। और ये जो प्रचारक होंगे वे केवल प्रचारक नहीं होंगे बल्कि गाँवों की विविध सेवा करनेवाले कुशल सेवक होंगे। अगर वे ऐसा करेंगे तो आप को यहां कम्युनिज्म का जे डर लगता है उसको भी वे रोक सकेंगे। क्योंकि आखिर कम्युनिस्टो का जो हिंसक तरीका है वह हमारे देश को कभी पसंद नहीं आ सकता। फिर भी क्योंकि देश मे गरीबी है, लोग उनकी बात मान लेते हैं। अगर हम लोग देहातो मे चले जांय और उनकी सेवा मे लग जांय तो उन्हे महसूस होगा कि काँग्रेसवाले हमारी सेवा मे लग गये हैं। इस दृष्टि से सेवा के बारे मे यह डिचपल्ली का दवाखाना हमें गुरुरूप बना है। दूर दूर से अंग्रेज लोग आते है और हमारी सेवा करते हैं यह क्या हमारे लिये शरम की बात नहीं है? काँग्रेस-वाले अगर आइंदा इस तरह सेवा के काम मे नहीं जुट जायेंगे तो काँग्रेस खतम होगी। यह तो मैने सेवकों के लिये कहा। किंतु गाँववालों को भी चाहिये कि वे भी खुद अपनी सेवा करें।

सज्जनों का समाज

लोग यह नहीं कह सकते कि हमारे यहां सेवक नहीं हैं। जंगल के जानवर भी शेर आदि हिंसक पशुओं से बचने के लिये आपस में झुंड बना कर रहते हैं, और एक दूसरे की मदद करते हैं। आप लोग तो आखिर मनुष्य हैं। अगर आप प्रेम से रहेंगे और एक दूसरे की मदद करेंगे तो गाँव की रक्षा सहज कर सकते है। जैसे हम अपने परिवार की सोचते हैं वैसा सारे गाँव की भी सोचने की आदत डालनी चाहिये। लेकिन अपने परिवार के बाहर हम

सोचते ही नहीं। सालों से यही आदत पडी है। इसलिये आप लोगों को गाँव में सज्जनों का एक समाज बनाना चाहिये। जानबूझ कर मैने इसे 'समाज' नाम दिया है। याने यह जो समाज बनेगा वह किसी तरह का अधिकार नहीं चाहेगा। वह सिर्फ सेवा करना चाहेगा।

गाँव मे दुर्जन भी होते है। आपस आपस मे संघ करते है। लेकिन सज्जन लोग ऐसा संघ नहीं करते। हरेक सज्जन अकेला अकेला काम करता है इसलिये सज्जनों की शक्ति प्रकट नहीं हो पाती। इसलिये हम लोगो ने सर्वोदय-समाज कायम किया है। ऐसा सज्जनो का समाज हर गाँव मे बनना चाहिये फिर यह सोचेगा कि गाँव की बुराइयो का मुकाबला कैसे किया जाय? इस समाज को चाहिये कि सारी समस्याओं पर सोचे। यही सज्जनसघ का काम होगा। ऐसा संघ आप अपने गांव मे कायम करेंगे और गाँव की सेवा करेगे ऐसी मैं आशा करता हूं।

डिचपल्ली
ता. २७-३-५१

इक्कीसवाँ दिन—

: २५ :

गाँव स्वर्ग-भूमि है

हम भी देहात में रहते हैं

हम लोग वर्धा से पैदल यात्रा मे आ रहे है। वैसे वर्धा तो एक बडा शहर है। लेकिन हम लोग वर्धा मे नहीं रहते। वर्धा के नजदीक छोटे देहात में हम रहते हैं। आप का जैसा यह छोटा गाँव है वैसा हमारा भी एक छोटा गाँव है। महात्मा गांधी वर्धा मे रहे यह सब जानते है। लेकिन वे वर्धा शहर मे नहीं बल्कि वर्धा से नजदीक एक छोटे गाँव में रहे। वैसे पहले वे वर्धा आये। फिर उन्होने कहा कि हमें शहर में नहीं रहना है, बल्कि गाँव में रहना है तो कोई गाँव ढूंढो। फिर वर्धा से चार-पांच मील दूर एक छोटा गांव ढूंढ लिया। और उस गाँव का नाम सेवाग्राम रखा। उस गाँव मे वे दस-बारह साल रहे। उन्होंने सारे देश का काम उस छोटे गाँव में बैठ कर किया। वहां ही बड़ी बड़ी संस्थाये खुल गई जो सारे देश का काम करती हैं। आप जानते है कि बड़े लोग तो बड़े बड़े शहरो में रहते हैं। कोई हैद्राबाद में रहेगा कोई बंबई रहेगा तो कोई दिल्ली रहेगा। हम सब महात्मा गांधी को बड़ा मनुष्य कहते हैं। लेकिन उन्होंने छोटे गाँव में रहना पसंद किया। उनको मिलने के लिये बड़े बड़े लोग

आते थे तो उनको भी वे देहात मे घसीट लाते थे। उन्होंने हमें सिखाया कि हिंदुस्तान के गरीब लोग गाँवो मे रहते हैं तो उनकी सेवा के लिये गाँवों मे जाओ। उनकी आज्ञा और शिक्षण के मुताबिक हम लोग भी छोटे छोटे गाँवो मे दस-दस पंद्रह-पंद्रह सालों से रहते है।

वैकुंठ की व्याख्या

छोटा गाव याने स्वर्गभूमि है। लेकिन स्वर्ग को भी मनुष्य नरक बना सकता है। हम आज सुबह आपका गांव देखने के लिये आये थे। यहा लोगो में प्रेम बहुत देखा। स्वर्ग और वैकुंठ तो प्रेम को ही कहते है। जहां प्रेम है वहां वैकुंठ है। मैने देखा कि आप के इस गांव में प्रेम बहुत है। तो यह एक स्वर्ग हो सकता है। लेकिन उस प्रेम के साथ ज्ञान भी चाहिये, और स्वच्छता भी चाहिये, तब स्वर्ग वनता है। तो जहां प्रेम है, ज्ञान है और स्वच्छता है वहां वैकुंठ आ गया। आपके घरो मे तो कुछ स्वच्छता देखी लेकिन गाँव काफी गंदा था। तो सब लोगों को मिल कर रोज कुछ न कुछ गाव की सफाई का काम करना चाहिये। हमारे यहां छोटे छोटे गांवों में सफाई का काम चलता है। एक रोज पुरुष काम करते है, एक रोज स्त्रियां काम करतीं है और एक रोज बच्चे काम करते है, इस तरह सफाई का काम बांट लिया गया है। इस तरह सारा गाँव साफ करने की तालीम उस गांव को मिल रही है। यह नहीं हो सकता कि आप का गांव साफ करने के लिये शहर से कोई मेहतर आ जाय। आप के घर की स्त्रियां जिस तरह घर का सफाई का काम करती है

वैसे सब गांववालों को मिल कर अपने गांव की सफाई करनी चाहिये। जब गांव स्वच्छ होगा तो अपना हृदय भी स्वच्छ होगा। हमें अगर अमंगल जगह में बैठने की आदत पड़ जाय तो हमारा चित्त भी अमंगल बनता है। इसलिये हमारे पूर्वजों ने तालीम दी है कि ध्यान या पूजा करनी है तो पहले जगह साफ कर लो। सफाई के लिये पैसे की भी जरूरत नहीं होती। जरूरत है परिश्रम की। इस तरह आप गाँव के बड़े लोग, स्त्रियां और छोटे बच्चे सफाई के काम में लग जायेंगे तो अपना गाँव वैकुंठ बन जायगा।

गॉव की रक्षा गॉव ही करे

मैंने सुना कि इस गांव में एक साहूकार रहता था। वह डर के मारे गाँव छोड कर दूसरे गाँव में रहने गया है। बडे दुख की बात है कि किसी को गाँव छोड कर जाना पड़े। हमारे गाँव का मनुष्य कैसा भी क्यो न हो अपना मनुष्य है। तो हम सबको उसकी रक्षा करनी चाहिये। अगर हमारा किसी से झगड़ा है तो हम उसके साथ प्रेम से झगड़ेंगे। लेकिन उसकी रक्षा तो गाँव में जरूर होगी। किसी के शरीर को जरा भी तकलीफ नहीं पहुंचने देंगे। इस तरह गाँव की रक्षा की जिम्मेवारी हमारी है। जरा कहीं भय मालूम हुआ तो लोग पुलिस को बुलाते हैं। अब पुलिस गाँव में आकर क्या करेगी? वह भी दूसरों को लूटती है। लूटनेवालों ने गाँव को लूट लिया। उसके बचाव के लिये पुलिस आये तो उन्होंने भी गाँव को लूट लिया। तो आप को पुलिस की आशा नहीं रखनी चाहिये और अपने गाँव की रक्षा खुद करनी चाहिये। गरीब लोगों

से ही सरकार को पैसा मिलता है। वह पैसा अगर पुलिस पर ही खर्च होगा तो आपके हित के लिये सरकार कुछ नहीं कर सकेगी। आपको सरकार से कहना चाहिये कि हमारे गॉव मे पुलिस मत भेजो। हमारी रक्षा करने के लिये हम समर्थ है। हमने जवान लोगों की सेना बनाई है। गॉव मे अगर कोई दुर्जन भी रहा तो उसका भय नहीं मालूम होना चाहिये। दुर्जन को भी हमे प्रेम से जीतना है। हमारे गॉव का भाई हमारे घर का मनुष्य है। अगर लड़का ठीक बर्ताव नहीं करता है तो क्या माता उसको घर से निकाल देती है? वह तो उसको प्रेम से जीतेगी। उसी तरह गाँव के सब लोगों को हमे प्रेम से सीधे रास्ते पर लाना है। लोग कहते है कि दुर्जन पर हम प्रेम करते है तो वह और भी दुर्जन बनता है। लेकिन यह खयाल गलत है। अगर कहीं अधकार है और उसमे हम दीपक लाते है तो क्या अधकार ज्यादा हो जाता है? इस बात का बहुत अनुभव आ चुका है कि सज्जनता के सामने दुर्जन की बुद्धि भी शुद्ध होती है।

शिक्षण का जिम्मा गॉववाले उठायें

आप के गाँव में एक बहुत अच्छी बात हमने देखी, जो हमारी तरफ उत्तर हिंदुस्तान मे नहीं है। किसी देहात मे अगर हम सभा करते हैं तो आप के यहाँ स्त्रियाँ भी बहुत आती है। लेकिन वहां तो पुरुष ही पुरुष आते हैं। बहुत सी स्त्रियां तो परदे में रहती हैं तो सूर्य का दर्शन भी बिचारी को नहीं होता। आप के यहां स्त्री, पुरुष दोनो प्रेम से एक जगह आते हैं और ज्ञान सुनते है,

यह अच्छा है। गाडी मे दो पहिये होते है, वैसे संसार की गाडी के भी स्त्री और पुरुष ये दो पहिये हैं। दोनो को ज्ञान की अत्यंत आवश्यकता है, और समान आवश्यकता है। लेकिन मैने सुना है कि आप के गाँव में जो स्कूल चलता है उसमें केवल लडके ही जाते है, लड़कियां नहीं जातीं। लेकिन लड़कियों को भी अच्छी तालीम मिलनी चाहिये। मैं जानता हूं कि गरीब लोगों के लड़के और लडकियां स्कूल मे नहीं जा सकतीं, उनको घर मे काम रहता है। तो मै कहता हू कि गाँव में एक घटे की स्कूल चलनी चाहिये। वह स्कूल सरकार नहीं बल्कि गाँव का पढ़ा-लिखा आदमी चलायेगा। उसके लिये पैसे भी नहीं लगेंगे। वह आदमी प्रेम से रात को एक घंटा सिखायेगा और दिन में भी एक घंटा सिखायेगा। अभी गोदावरी के तीर पर सोन नाम का गॉव है वहाँ, मैं गया था। वहा के लोगो से मैने कहा कि प्रेम से एक घंटा सिखाने के लिये तैयार हो जाइये। वहां पर वैसे लोग तैयार हुए और मेरे जाने के बाद एक घटे की पाठशाला वहां शुरू हो गई है। तो जैसे उस गॉव मे हुआ है वैसे आप के गाँव मे भी हो सकता है।

सहकारी दूकान गॉव में होनी चाहिये

मैने पूछा इस गाँव मे दूकाने कितनी हैं। तो कहा गया कि तीन-चार हैं। लेकिन ये दूकाने खानगी है। मैं चाहता हूं कि आप के गाँव में सब लोगो की एक दूकान होनी चाहिये। चार-चार पांच-पांच रुपयों का शेअर बनाइये। इस तरह सब के पैसे से दूकान करेंगे तो आप को अच्छा माल मिलेगा और कोई

किसी को ठगेगा नहीं। अगर हरेक घर से चार-आठ या दस रुपये मिल जाते हैं तो तीन-चार हजार रुपयों की दूकान हो सकती है। इस तरह की बड़ी दूकान अगर गाँव में चले तो सब को ठीक भाव से माल मिलेगा। एक बच्चा भी उस दूकान पर माल खरीदने जायगा तो उसको ठीक भाव से ही माल मिलेगा। वह दूकान आपके गाँव की होगी। आप सब लोगों का उस पर हक होगा। उसमें अगर कोई लाभ हुआ तो वह भी आप सब लोगों को मिलेगा। मैं जानता हूं कि देहात के लोगों के पास धन कम है। लेकिन जो थोड़ा सा है वह इकट्ठा करेंगे तो बडा काम हो सकता है। देहात में धन कम है लेकिन शरीर-श्रम करने की शक्ति बहुत है। तो उसका उपयोग करो और सब मिल कर गाँव का काम करो इतना ही मुझे कहना है। मेरा आप लोगों को प्रणाम।

कलवरल, (जि० निजामाबाद)
२८-३-५१

बाईसवाँ दिन—

: २६ :

मूर्ति गुण चिन्तन का साधन

आज पैदल यात्रा में मैं आपके गाँव आ पहुंचा हूं। हम सब जा रहे हैं शिवरामपल्ली में सर्वोदय संमेलन के लिये। यहां आपने मुझ से एक काम लेना चाहा। यहां पर गांधीजी की मूर्ति का उद्‌घाटन आप मेरे हाथ से करवाना चाहते हैं। तो इस काम को मैं कुछ संकोच के साथ करता हूं।

चित्र से प्रेरणा

यों गांधीजी का दर्शन आप लोगों के नेत्रों को होता रहेगा तो यह खुशी की बात होनी चाहिये। लेकिन संकोच भी मुझे इसमें हो रहा है। कारण उसका यह है कि हम चित्र को खड़ा कर देते हैं लेकिन उस चित्र का जो भी हमारे मन के सामने भाव होना चाहिये वह अति परिचय से मिट जाता है। मैंने बहुत बार यह अनुभव किया है कि लोग अपने घरों में अच्छे अच्छे चित्र तो रख देते हैं लेकिन चित्र का उपयोग मच्छरों को होता है वहां रहने के लिये। इस तरह अगर चित्रों का हमारे जीवन में ठीक उपयोग हम नहीं करते है तो उन चित्रों के होने के बजाय न होना बेहतर है। वास्तव में जिस भावना से चित्र खड़ा किया जाता है

वह भावना रोज द्विगुणित होनी चाहिये। आप देखते हैं कि नदी शुरू तो होती है छोटे आकार में लेकिन दिन ब दिन उसका पानी बढ़ता जाता है। इसी तरह हमारी भावना भी बढ़ती रहनी चाहिये ताकि रोज वह बढ़ती जाय। लेकिन शरीर तो जड़ रहता है इसलिये उसको बार बार प्रेरणा देनी पड़ती है। अगर हमने गेंद को एक दफा गति दे दी तो वह कायम नहीं रहती वह कम होती जाती है। इसलिये फुटबॉल खेलने वाले हमेशा उसको गति देते रहते हैं। तो आज यदि हम शुभ भावना के साथ गांधीजी के चित्र का उद्घाटन कर देते हैं, तो कल हमें अपनी भावना में और भी वृद्धि करनी चाहिये।

चित्र का उपयोग

वैसे हिंदुस्तान मे मूर्तियाँ और देवता कम नहीं है। लेकिन उन देवताओ का हमारे जीवन में कोई खास उपयोग नहीं होता। इस तरह सत्पुरुषो की मूर्तियों को बेकार नहीं बनाना चाहिये। अगर हमारे सामने हमने एक मूर्ति रखी है तो उसके गुणो का ध्यान और चिंतन हमें करना चाहिये। और हमे सोचना चाहिये कि वह भी हम जैसा ही एक सामान्य पुरुष था और अपने पराक्रम से महा-पुरुष बना था। अगर अपने मन में हम यह मान लेते हैं कि महापुरुष एक वर्ग के थे और हम दूसरे वर्ग के हैं तो ऐसे चित्रो का हमारे लिये उपयोग नहीं होगा। याने विचार यह होना चाहिये कि हम भी प्रयत्न करेंगे तो उनके गुणों का हमें भी अनुभव आ

सकता है। मैने एक घर मे गाधीजी का चित्र देखा। उसमें गांधीजी चरखा कात रहे थे। मैंने उस घरवाले भाई से पूछा कि क्या आप के घर में चरखा चलता है ? तो उन्होंने कहा कि नियमित तो नहीं चलता, कभी कभी चलता है। फिर मैने सोचा कि यह गांधीजी का चरखेवाला चित्र हम अपने घर में रखेंगे और चरखा नहीं चलायेंगे तो क्या दशा होगी ! फिर तो ऐसी दशा होगी कि हमारे घर में चित्र तो रहेगा गरुड़वाहन वाले विष्णु का, लेकिन हम तो गरुड़ पर नहीं बैठते है। वैसे अगर सोचेंगे कि गांधीजी के लिये तो चरखा वाहन हो गया लेकिन हमारे लिये वह वाहन नहीं हो सकता। इस तरह सोचेंगे तो उस चित्र से जो लाभ हमें होना चाहये, वह नहीं होगा।

अहिंसा का विकास

देखिये गांधीजी के प्रयत्नों से और उनके शिक्षण से हमको स्वराज्य तो मिल गया। लेकिन जहां स्वराज्य हाथ में आया वहाँ भगवान ने गांधीजी को हम में से उठा लिया। तो भगवान अब हमारी परीक्षा कर रहा है। वह देखता है कि इन लोगों ने गांधीजी का नाम लिया, उनके पीछे चलने का दावा किया, अब उनके बाद ये क्या करनेवाले है ? वह देखता है कि गांधीजी की तालीम अगर ये लोग दर असल समझ है तो अब गांधीजी की इनको जरूरत नहीं है। और अगर उनकी तालीम हम लोगो के दिल में नहीं पहुंच चुकी है तो गांधीजी को जिंदा रखने से कोई लाभ नहीं है। मैं

तो परमेश्वर की यह कृपा समझता हूं कि वह मौके पर सत्पुरुषों को भेजता है और मौके पर उनको उठा लेता है। इसमें तो मैं भगवान की दया ही देख रहा हूं। वह गांधीजी की जो तालीम थी उसको हमारे द्वारा प्रचलित करना चाहता है। अहिंसा और सर्व भूतों के लिये प्रेम, यह था गांधीजी का दिया हुआ शिक्षण। अहिंसा का यह सिद्धांत ही ऐसा है कि उसके विकास के लिये पूरी स्वतंत्रता चाहिये। मनुष्य के चित्त पर कोई दबाव नहीं होना चाहिये। अब जब कि गांधीजी को भगवान ले गया तो हम लोगों को पूरी आज़ादी है कि हम अपनी अक्ल से सोचें और अहिंसा का अपने जीवन में विकास करें। मेरे जैसे लोग जो कि उनके साथ रहे और उनके मार्ग पर चले वे अब क्या करते है। यह आप देख रहे है। मैं क्या कर रहा हू इसके आप साक्षी है लेकिन जैसे गांधीजी के विचार के मुताबिक मुझे चलना है, वैसे आपको भी चलना है। तो आप मुझे देखिये, मेरे साक्षी बनिये और मै आपको देखूंगा, मैं आपका साक्षी बनूंगा। इस तरह आप और मै दोनों एक दूसरे के साक्षी बनेंगे, एक दूसरे को मदद देंगे तो अहिंसा बढ़ेगी।

प्रजा ही राजा

आप देखते हैं कि प्रजा हमेशा सरकार की तरफ ताकती रहती है। पहले की सत्ता जुल्मी थी और आज की सत्ता अच्छी है, तो सत्ता का फरक हुआ। उसमे प्रजा के गुण में कोई फरक नहीं

हुआ। अगर राजा अच्छा रहा तो वह प्रजा को सुख देता है और राजा बुरा रहा तो प्रजा को दुःख रहता है। सुख और दुःख का फरक वह करता है। लेकिन राजा पर ही जहां प्रजा का आधार है वहां प्रजा मे स्वराज्य तो तब होगा जब हम मे से हरेक यह महसूस करेगा कि मै ही अपना राजा हूं और मैं ही अपनी प्रजा हूं। छः सौ साल हुए हैद्राबाद में प्रजा के हाथ में सत्ता नहीं रही। तो उसका कारण क्या था? कारण यही समझना चाहिये कि हम लोगों में कोई ऐसे दोष हैं जिनके कारण हम स्वतंत्र नहीं बन सके हैं।

स्वराज्य का अनुभव

देखिये जो डर जनता मे पहले था वह आज भी मौजूद है और जनता निर्भय नहीं है। तो स्वराज्य क्या मिला? जो व्यसन और आलस पहले था वही अगर आज भी रहा तो स्वराज्य कहां आया? तो भावार्थ उसका यह हुआ कि हमारे हृदय में बल आना चाहिये और हमे स्वराज्य का अनुभव होना चाहिये। जिसने भोजन किया उसको तृप्ति का अनुभव आता है। वैसे अगर हमें स्वराज्य मिला है तो उसका अनुभव बच्चे बच्चे को होना चाहिये। हां, एक फरक जरूर हुआ है। यह गांधीजी का चित्र आपने आज खड़ा किया वैसा पुराने जमाने में खड़ा नहीं कर सकते थे। आपको लगता था कि अगर गांधी टोपी से या गांधीजी के नाम से संबंध रखेंगे तो रजाकार हमको पीटेंगे। लेकिन अब शायद यह लगेगा कि

गांधीजी का नाम लेते रहेंगे, उनके चित्र का उद्घाटन करेंगे तो हम पर बड़े लोगों की मेहरबानी होगी। इन दिनों हम देखते हैं न कि हमारे स्वागत के लिये बड़े अधिकारी आते हैं। पहले जब बड़े अधिकारी आते थे तो हम समझ लेते थे कि हमारी गिरफ्तारी का संबंध है। पर इस समय गांधीजी का चित्र घर में रखने मे किसी को कोई तकलीफ होनेवाली नहीं है।

गांधीजी के काम से निर्भयता

तो, इस अवस्था मे हमें यह करना चाहिये कि हम गांधीजी का काम करे। उनके चित्र से कोई निर्भयता हम में आती है ऐसी बात नहीं है। उनके काम से ही हममें निर्भयता आयेगी। पहले के जमाने में अकबर आदि बादशाहो के चित्र घरों मे रहते थे. और स्कूलों में रहते थे। अगर उनकी जगह हम गांधीजी को देंगे और उनके चित्र घर मे, शालाओं में, और होटलो मे रखेंगे तो वे क्या काम के होंगे? मेरे कहने का मतलब यह है कि गांधीजीने हमारे लिये कुछ काम दिया है। वह काम हमको करना चाहिये। हम अगर माता का नाम लेते हैं तो वह यही कहेगी कि अगर तुम मेरा नाम लेते हो तो परस्पर में प्रेम क्यों नहीं करते हो? तो गांधीजी के लिये हमें आदर है या नहीं इसकी परीक्षा इसी पर से होनेवाली है कि हम आपस में कितना प्रेमभाव रखते हैं। क्या अभी भी हम हरिजनों को अपने से नीच समझते हैं? क्या अभी भी हिंदू और मुसलमानों के दिलों मे भेद

मौजूद है ? क्या अभी भी पुलिस का डर जैसे पहले था वैसा ही मौजूद है ? अगर यह सब है तो समझ लेना चाहिये कि गांधीजी के लिये वास्तव में हमें आदर नहीं है ।

स्थितप्रज्ञके लक्षण

मेरे भाइयो, मैं जानता हूं कि मेरे व्याख्यान का कुछ हिस्सा आपके पास पहुंचता है और कुछ हिस्सा बाहर रहता है । इस हालत में मैं आपको अपेक्षा कृत ज्यादा देर रखना नहीं चाहूंगा । मुझे इस बात की खुशी है कि आप लोगों ने यहां काफी शांति रखी । आज प्रार्थना में मैं जो बोला वह भगवद्गीता का एक भाग है । उसका मैंने तेलगु में तर्जुमा भी पढ़ लिया । उसमें स्थितप्रज्ञ पुरुष के लक्षण बताये हैं । जैसे गांधीजी का यह चित्र आपके सामने है वैसे स्थितप्रज्ञ का शब्दों में लक्षण गीता से मिलता है । महात्मा गांधीजी प्रार्थना में हमेशा ये लक्षण बोलते थे और उनका सारा जीवन उन लक्षणों का अनुशीलन करने के कारण हुआ है । तो ये स्थितप्रज्ञ के लक्षण हम अपने सामने रखें । हम रोज ऐसे पुरुष का चिंतन करें यह मै आप लोगों से प्रार्थना करता हूं । कुटुंबवाले अड़ोसी-पड़ोसी और मित्र दिन में शाम को एक दफा एकत्र हो जायं और स्थितप्रज्ञ के लक्षण बोलें, उस पर चिंतन करें तो बहुत अच्छा होगा । उनमें जो गुण बताये हैं वे हिंदुओं के लिये अच्छे हैं, मुसलमानों के लिये अच्छे हैं, क्रिस्तियों के लिये अच्छे हैं और सारे मनुष्यों के लिये अच्छे हैं । तो मैं चाहता हूं कि ये लक्षण आप

हमेशा बोलते रहें, पढ़ते रहें, गाते रहें। मैं आज आप के गांव में आया। कल यहां से जाऊंगा। और परसों शायद इस दुनिया से भी चला जाऊंगा। लेकिन ये जो स्थितप्रज्ञ के लक्षण हैं वे हमारी आंख के सामने कायम रहने वाले है, सदा टिकनेवाले हैं। मेरे जैसे लोग तो आयेंगे और जायेंगे। उनका इतना उपयोग नहीं है जितना इन लक्षणों का है। इसलिये हम इन लक्षणों का ही चिंतन करें और मनुष्यों को भूल जायं। आखिर में आप सबको मेरा प्रणाम।

कामारेड्डी
२९-३-५१

तेईसवाँ दिन—

: २७ :

परमेश्वर की देनें

हम लोग वर्धा से हैद्राबाद पैदलयात्रा करते जा रहे हैं। हैद्राबाद से पांच मील पर शिवरामपल्ली है। वहां सर्वोदय संमेलन होने जा रहा है। महात्मा गांधीजी के भक्तजन वहां इकट्ठे होनेवाले है। उनकी संगति का लाभ लेने के लिये हम लोग भी जा रहे हैं। रोज हम अक्सर दस बारह मील चलते है। लेकिन आज हम को कामारेड्डी से यहां पहुंचने के लिये सत्रह मील चलना पड़ा। आज एक बात और हुई। बात यह थी कि बीच में एक रोज बारिश आदि होने के कारण आज मुझे थोड़ा बुखार था। और सुबह मेरे मन में शंका थी कि सत्रह मील की मंजिल आज कैसे तय होगी। लेकिन भगवान का नाम लिया, चलना आरंभ किया और उसकी कृपा से आज हम यहां पहुंच गये। और मैं आप से कहना चाहता हूं कि मुझे कोई तकलीफ नहीं हुई।

मानव-देह का प्रयोजन

परमेश्वर का नाम ले कर जो काम किया जाता है उस में जरा भी तकलीफ नहीं होती यह अनुभव मैंने कई बार किया। भगवान के स्मरण से शरीर की थकान दूर हो जाती है और मन की भी थकान दूर हो जाती है। मनुष्य ताजा बन जाता है। यह

एक ऐसी अपार शक्ति है कि जिस में से हम चाहे जितना ले सकते हैं। हम मांगें और वहां से न मिले यह बात आज तक हुई नहीं। लेकिन भगवान से कैसे मांगना, भगवान के साथ कैसे संबंध जोड़ना यह समझने की बात है। मानव-देह हमे इसीलिये मिला है कि इसके जरिए हम भगवान से संबंध जोड़ें। और खास कर किसानों के जीवन में तो भगवान से निरंतर संबंध आता है। कभी वर्षा नहीं पड़ती है तो किसान का चित्त जमीन से उठ कर आसमान की तरफ दौड़ता है। वह परमेश्वर की प्रार्थना करने लगता है। अगर वर्षा अच्छी हुई तो उसकी बुद्धि कृतज्ञता से भर जाती है और वह परमेश्वर का स्मरण करता है। इसलिये किसान का जीवन मैं अत्यंत पवित्र समझता हूं। किसान कितना भी कष्ट कर के यह नहीं समझता कि जो फसल होती है वह उसके खुद के कष्ट से होती है। वह तो यही समझता है कि कदम कदम पर भगवान की कृपा होती है तभी फसल आती है।

परमेश्वर की देनें

सब लोगों का यही हाल है। मनुष्य की एक सास भी परमेश्वर की इच्छा के बगैर नहीं होती है। लेकिन कुछ लोग अपना संबंध परमेश्वर के साथ सीधा है यह कम महसूस करते हैं, किसान ज्यादा महसूस करता है। अब देखिये आप के इर्दगिर्द के गावों मे ओले गिरे और फसलें काफी बरबाद हुई। अब किसान क्या करता है? वह परमेश्वर का स्मरण करता है। इस तरह अपने जीवन में

हरेक काम का परमेश्वर के साथ संबंध जोड़ना हमें सीखना चाहिये। अगर इस तरह हम भगवान से संबंध जोड़ सके तो हमें पता चलेगा कि उसने हमें कितनी देनें दी हैं, कितनी नियामतें बख्शी है। उसने हमें जो नियामतें दी है वे बेहिसाब है, उसकी कोई गिनती नहीं है। उसने हम पर क्या उपकार नहीं किया है? लेकिन उसके उपकार का ठीक उपयोग करने का भी हमें ज्ञान नहीं है।

परमेश्वर की देनों का दुरुपयोग

मै इधर घूम रहा हूं और चारों तरफ सिंदी के पेड़ देखता हूं। यह परमेश्वर की हमारे लिये देन है। लेकिन हम उसका दुरुपयोग करते है। उस में से शराब बनाते है और अपनी जिंदगी को खराब करते है। लेकिन हम अगर उसका ठीक उपयोग करें तो हमारे लिये वह अमृत का वृक्ष बन जायगा। उसमें से उत्तम गुड़ बनेगा और हरेक गांव गुड़ के विषय में स्वावलंबी बन जायगा। आज जो आप की जमीन का बहुतसा हिस्सा गन्ने मे जाता है वह बच जायगा अगर सिंदी का गुड़ हम बनायेगे। आज हमारे देश में अनाज की कमी है; ऐसी हालत मे जितनी जमीन बच जाय उतना अच्छा है। इससे आप की दो बातें बनती थी। सिंदी के पेड़ से गुड़ बनता और जमीन में अनाज ज्यादा पैदा होता। लेकिन परमेश्वर की इस देन का उपयोग करना हम नहीं जानते और सिंदी से शराब बना कर अपनी आत्मा और शरीर को हम बिगाड़ते हैं और जमीन गन्ने में खर्च होती है। इसमे परमेश्वर का क्या

दोष है ? उसने तो हमको एक भारी चीज दी थी, लेकिन उसका उपयोग हमने नहीं किया।

हमारे पास जमीन पड़ी है। उसमें से हर चीज हमको मिलती है। लेकिन उसका उपयोग हम सिर्फ पैसे के लिये करते हैं। पैसे के लोभ से ही जमीन का उपयोग करने की दृष्टि रही तो जमीन में से तम्बाकू बनती है। परमेश्वर ने हमें क्या क्या दिया और हम ने उसकी देनों को कैसे बरबाद किया इसका मै कहां तक वर्णन करू ?

कपास के लिये जमीन रखो

मैं सुनता हूं कि यहां पहले लोग थोड़ा कपास भी अपने उपयोग के लिये बोते थे। लेकिन आज लोगो ने वह छोड़ दिया, पैसे के लोभ में पड़े और सारा कपड़ा बाहर से खरीदते हैं। नतीजा उसका यह हुआ कि आप परावलंबी बन गये और अपना भार आप ने व्यापारियों पर डाल दिया। मैं यह नहीं कहता कि इस जमीन में अगर गन्ना अच्छा होता है तो गन्ना मत बोओ। लेकिन मैं कहता हूं कि कुछ तो जमीन अपने कपास के लिये रखो। इस तरह अगर देखते हैं तो कई चीजों का अच्छा उपयोग हमको सूझेगा।

गोबर और मैले का ठीक उपयोग करो

देखिये हम लोगों की गायें और भैंसें हमको गोबर देती हैं। हम उस गोबर को जलाते हैं तो हमारा सारा खाद खतम होता है। इसी तरह मनुष्य का भी मैल और मूत्र इधर उधर गिरता है और हम अपनी सारी दुनिया अमंगल बनाते हैं। उस से हमारी सेहत

बिगड़ती है, हमारी सभ्यता बिगड़ती है। अगर इस मलमूत्र को जमीन के अंदर रखते हैं और उस पर मिट्टी डालते हैं तो परमेश्वर की कितनी अपार कृपा है उसका अनुभव आयेगा। भगवान ने हमें गाय बैल दे दिये। अगर हम उनका दूध बढ़ाते हैं और बैलों को मजबूत बनाते हैं, उनको पूरा खिलाते हैं तो उनसे बहुत सेवा होती है। यह तो परमेश्वर की देन का अच्छा उपयोग होगा। लेकिन अगर हम गायों को ठीक खिलाते नहीं और उनको कम दाम में बेच डालते हैं तो गायों की कतल होती है। इसका मतलब यह हुआ कि भगवान की देनों का हमने दुरुपयोग किया। परमेश्वर की देनों का हम ठीक उपयोग करें और उसका हम स्मरण करें तो इस दुनिया में कोई मनुष्य दुःखी नहीं रह सकता।

हम सर्वोदय सर्वोदय चिल्लाते हैं। कहते हैं कि सब का भला होना चाहिये। लेकिन परमेश्वर अपने मन में हंसता होगा और कहता होगा कि भाई यह काम इतना मुश्किल क्यों लगता है? कोई बाप अपनी संतान के लिये जीवन मुश्किल हो ऐसा नहीं चाहता। तो वह परम पिता, जिसने हमें निर्माण किया और हमारे लिये ये सारे उपकार पैदा किये, हम उनका उपयोग अच्छा नहीं करते। आपस में झगड़ते हैं और कहते हैं कि सर्वोदय कब होगा।

ईश्वर अल्ला एक ही नाम

गांधीजी अपनी प्रार्थना मे ईश्वर का नाम लेते थे और उस के साथ अल्ला का नाम भी लेते थे। अब ईश्वर और अल्ला में कोई

भेद नहीं है। लेकिन कुछ पागल हिंदुओंने कहा कि हम अल्ला का नाम नहीं सहन करते। वैसे ही रघुपति राघव राजाराम कहते हैं तो कुछ मुसलमान कहते है कि यह राम काफिरों का शब्द है हम उसकी प्रार्थना में नहीं जायेंगे। इस तरह भगवान के नाम में भी हमने भेद निर्माण किये। यहां तक हमारी बुद्धि भ्रष्ट हो गई तो हम सुखी कैसे बन सकते हैं? फिर तो आपस में लडना झगड़ना ही है। इस तरह सारे झगड़े अपने देश में पड़े है और बाहर के देशों में भी झगड़े ही झगड़े चल रहे है। आप कोई अखबार देखिये तो सौ में से नब्बे खबरें यही पायेंगे कि किसी का खून किया, कहीं लूटा, कहीं लड़ाई हुई। उधर कोरिया की लड़ाई चलती है, इधर कश्मीर का मामला चल रहा है। बोल रहे हैं कि तीसरी लड़ाई—तीसरा महायुद्ध कब होगा! कब होगा यूं कहते जायेंगे और उसी का ध्यान करेंगे तो वह जरूर होगा। क्योंकि जिस चीज का हम ध्यान करते है वह चीज हमारे सामने खडी होनी ही चाहिये ऐसा ध्यान करो कि हम सब परमेश्वर के पुत्र है। और अगर हम सब एक कुटुंब के हैं, तो हम में कोई झगड़ा होगा ही नहीं।

पृथ्वीपर संख्या का नहीं, दुर्गुणों का भार होता है

लोग कहते है कि हिंदुस्तान में जनसंख्या बढ गई। मै कहता हूं कि आज भी हिंदुस्तान मे इतनी शक्ति है कि हम अगर परमेश्वर की देनों का उपयोग करें तो हिंदुस्तान में प्रेम के साथ रह सकते हैं। यह भी बात सही है कि मनुष्य को विषयवासना रोकनी चाहिये। लोग संतान कम ज्यादा गिनते हैं। मैं कहता हूं

कि विषयवासना कम करो। अगर हम विषयवासना को नहीं जीत सकते हैं तो हम एक दूसरे पर प्रेम नहीं कर सकते। अगर हम विषयवासना को जीतते हैं तो जो भी प्रजा होगी वह परमेश्वर की भक्त होगी, और उसका दुनिया पर भार नहीं होगा। इस दुनिया मे मनुष्य ज्यादा है या कम हैं इसका पृथ्वी कोई भार महसूस नहीं करती है। लेकिन मनुष्य सज्जन हैं या दुर्जन हैं इसका भार अवश्य महसूस करती है। पृथ्वी को मनुष्य की संख्या का भार नहीं है, मनुष्य के दुर्गुणो का भार है। हम काम क्रोधादि को जीतें, एक दूसरे पर प्यार करें, परमेश्वर की देनों का सदुपयोग करना सीखें, अपनी हरेक कृति का संबंध परमेश्वर से जोड़ें, सुख और दुःख में उसका स्मरण करें, तो सर्वोदय ही होगा, और कुछ नहीं हो सकता।

रामायण पेठ
३०-३-५१

चौबीसवाँ दिन—

: २८ :

सत्पुरुष और धर्म

आज मैं इस गांव में आया तो ठहरने के लिये यह जगह मिली है। मुझे इस बात की खुशी है कि ठहरने के लिये मुझे क्रिस्तियों का स्थान मिला।

सारे सत्पुरुषों की जाति एक

अपने इस बड़े देश में बहुत प्राचीन काल से अनेक सत्पुरुष पैदा हुए। क्रिस्ती लोगों के गुरु ईशु क्राइस्ट नाम के थे, और वे बड़े सत्पुरुष थे। वैसे ही मुसलमान धर्म के बड़े संस्थापक हो गये मुहंमद पैगंबर, वे भी एक बड़े सत्पुरुष थे। इस तरह के सत्पुरुष हर जाति मे, हर कौम मे और हर भाषा में पैदा हुए। परमेश्वर की मानवो पर यह कृपा है कि मानवो को बीच बीच में राह बताने के लिये अच्छे मनुष्यों को वह भेजता है। इन दिनों हमारे देश में महात्मा गांधी इस तरह के सत्पुरुष हो गये। ये सारे जो सत्पुरुष हुए उनमें कोई फरक नहीं था। सब के दिल एक थे। उन सब की एक ही जाति थी, उन सब का एक ही धर्म था। परमेश्वर की भक्ति करना, मानवों पर प्रेम करना यही उनका धर्म था।

गुरु का नाम लेते हैं, काम नहीं करते

अभी आप लोगों ने क्रिस्ती प्रार्थना सुनी। उसमें यही कहा गया था कि परमेश्वर प्रेममय है और उसकी भक्ति से हमारे हृदय प्रेममय

और पवित्र हो जाँय। लेकिन आश्चर्य की बात तो यह है कि मुहंमद के अनुयायी, क्रिस्त के अनुयायी और हिंदू धर्म के अनुयायी आपस में प्रेम से नहीं रहते। यह बड़े आश्चर्य की बात है, इसमें कोई शक नहीं। अपने अपने गुरु का नाम लेना यह अच्छी बात है। लेकिन उस गुरु के नाम का भी एक अभिमान बना करके दूसरों में और हममें फरक पैदा करना यह बुरी बात है। गुरु ने जो शिक्षण दिया उसका पालन तो हमने किया नहीं, लेकिन अभिमान रखते है और दूसरो का द्वेष करते हैं। हम जानते हैं कि हिंदूधर्म ने यह शिक्षण दिया कि हरेक जीव में आत्मा मौजूद है, लेकिन उधर हजारों जातियां बना करके हम लोगो ने द्वेष बढ़ा दिया। क्रिस्त ने तो हमेशा प्रेम का संदेश दिया। लेकिन क्रिस्त के नाम का अभिमान रखनेवाले दुनिया भर में जहां देखो वहां लड़ाइया करते रहे। पिछले चालीस साल में दो महायुद्ध हुए। दोनों क्रिस्तियो के आपस मे हुए। क्रिस्त गुरु ने तो यह कहा था कि हमको अहिंसा रखनी चाहिये। किसी भी हिंसा नहीं करनी चाहिये। याने जो गांधीजी की शिक्षा थी वही क्रिस्त की थी। लेकिन क्रिस्ती लोगो ने जितने शस्त्रास्त्र बढ़ाये उतने सारी दुनिया मे किसी ने नहीं बढ़ाये। मुसलमान लोग अपने धर्म को इस्लाम कहते हैं। इस्लाम का अर्थ है शांति। अगर किसी को वे नमस्कार करते है तो कहते हैं "सलाम अलयकुम्" याने आपको शांति रहे। लेकिन उन लोगों का जो भी बर्ताव रहा उसे देखते हुए लोगों को शंका होती है कि क्या इस्लाम में

भी शांति की शिक्षा हो सकती है। इस तरह उन उन गुरुओं का हमने अभिमान रखा, आचरण कुछ नहीं किया, और अपना जीवन पहले जैसा बिगड़ा हुआ था, वैसा ही आज भी है।

हम लोग बिगड़े हुए थे तो हमको सुधारने के लिये ये गुरु हमारे पास आये। लेकिन हम क्या करते हैं? अपना जीवन तो हम सुधारते नहीं और कहते है कि दूसरे हमारे धर्म में आ जाँय। जो उठा वह यही चाहता है कि मेरे धर्मवालो की सख्या बढ़े। कोई यह नहीं देखता कि धर्म तो एक आचरण की चीज होता है, सख्या से उसका क्या मतलब है। मैंने सुना कि यहां के इर्द-गिर्द के देहातों में तीन हजार क्रिस्ती बन गये। अगर उनका जीवन सुधर गया है तो मै कहूंगा कि अच्छी बात है। लेकिन अगर नहीं सुधरा है तो हिंदू नाम के बदले क्रिस्ती नाम हो जाने से क्या फरक हुआ? जैसे पहले शराब-सिंदी पीते थे वैसे ही अगर अब भी शराब-सिंदी पीते रहे, जैसे पहले झूठ बोलते थे वैसे अब भी बोलते है तो सिर्फ धर्म का नाम बदलने से क्या हुआ? समझना चाहिये कि जो मनुष्य झूठ बोलनेवाला है, दूसरे से द्वेष करनेवाला है, वह न हिंदू है, न मुसलमान है, न क्रिस्ती है। वह तो धर्महीन मनुष्य है। लेकिन हमारी दशा अब यह है कि हिंदुओ मे से अगर कोई बदमाशी करता है, गुंडा है, तो उस गुंडे का अभिमान हिंदू लोग रखते हैं। कोई अगर मुसलमान गुंडापन करता है तो मुसलमान उस गुंडे का अभिमान रखते है। ऐसे ही कोई क्रिस्ती अगर दुर्जनता करता है तो क्रिस्ती लोग उसको

डांकते है। यह बुरी दशा देख कर अब जवान लोग यह कहने लगे है कि हमे यह धर्म चाहिये ही नहीं। लेकिन वह भी उन लोगों की गल्ती है। धर्मवाले लोग धर्म पर चलते नहीं हैं। यह उस धर्म का दोष नहीं है। यह तो हम लोगो का दोष है कि हम धर्म की दीक्षा तो लेते है लेकिन आचरण करते नहीं।

हरेक जाति में सत्पुरुष हुए हैं

मै तो यही कहूंगा कि हमारे हिंदुस्तान मे ऐसी कोई जाति नही है जिसमे अच्छे गुरू पैदा नहीं हुए, और जिनको शिक्षण देने के लिये दूसरे किसी गुरू की जरूरत है। यह कोई जरूरी नहीं है कि तेलगु लोगो को ज्ञान देने के लिये मलबार के कोई सज्जन आ जायॅ, या महाराष्ट्र के लोगो को ज्ञान सिखाने के लिये कोई पंजाबी गुरू आ जाय। हरेक जमात मे सत्पुरुष हुए है। मै तो इतना ही कहूंगा कि अपने अपने पड़ोस में जो सत्पुरुष हुए उनके कहने के मुताबिक चलो। और हरेक धर्मवाले और हरेक गुरू के शिष्य अगर अपना जीवन सुधारेंगे तो उनके जीवन को देख करके सब लोगो के दिल खुश हो जायेंगे।

धर्म से ज्यादा सज्जनता की फिकर रखो

इस तरह उस उस धर्मवाले अपने अपने धर्म के शिक्षण का आचरण करके एक दूसरे को मदद दे सकते हैं और सब मिल करके दुनिया का आनंद बढ़ा सकते है। हम लोगों को ऐसा भेदभाव नहीं रखना चाहिये कि फलाना क्रिस्ती है या फलाना मुस्लिम है या फलाना हिंदू है। परमेश्वर के सामने हम खड़े होंगे तो वह हम

से यह नहीं पूछेगा कि तुम क्रिस्ती थे या हिंदू थे या मुसलमान थे, बल्कि यह पूछेगा कि क्या तुम सदाचार करने वाले थे या दुराचार करनेवाले थे। कोई ब्राह्मण भी अगर दुराचार करता है तो परमेश्वर को उसकी कोई कीमत नहीं है। और कोई चांडाल भी अगर भक्ति करता है तो परमेश्वर को वह मान्य है।

सब धर्मों का रहस्य

तो इस तरह एक दूसरों पर प्यार करो, सच्ची राह पर चलो यही कहने के लिये सब गुरू आये और यही शिक्षण हमको उनसे लेना है। आज आप लोगों के सामने यही बात मै कहूंगा और यह आशा करूंगा कि यहां पर मैं आया तो इतना भी लाभ आप उठा लें। मै क्रिस्ती धर्म के रहस्य को अत्यंत प्रेम के साथ स्वीकार करता हूं। सब धर्मों मे जो अच्छी बात है उसको मै कबूल करता हूं। हिंदुओं में मै अपने को हिंदू मानता हूं। क्रिस्तियों में मै अपने को क्रिस्ती मानूंगा, और मुसलमानों मे मै अपने को मुसलमान मानूंगा। यही मानो कि पाषाण और पत्थर में जैसे कोई फरक नहीं है, पाषाण याने पत्थर और पत्थर याने पाषाण। वैसे ही हिंदू और मुसलमान और क्रिस्ती याने सज्जन सत्पुरुष इतना ही अर्थ है। तो यह सब धर्मों का रहस्य आप अपने दिल में रखिये और अपने जीवन को उन्नत बनाने की कोशिश कीजिये। आखिर में आप लोगों को मै प्रणाम करता हूं।

वडियारम (जि० मेदक)
ता० ३१-३-५१

पच्चीसवां दिन—

: २९ :

गांव कुटुम्ब की तरह रहे

गांव और शहर की खूबियों का समन्वय हो

आप का गांव कुछ बड़ा है। छोटे गाव में कुछ खूबिया होती है तो बड़े गांव में भी कुछ खूबियां होती है। इन दोनों खूबियों का अगर गांव मे समन्वय हुआ तो गांव को बहुत लाभ हो सकता है। लेकिन जैसे छोटे गांव मे कुछ बुराइयां होती हैं वैसे बड़े गांव मे भी होती हैं। दोनों बुराइयो को अगर गांव मे इकट्ठा करेंगे तो गांव खतम हो जायगा। और अकसर मैने देखा है कि जो गांव आप के जैसे बीचवाले होते है वहां छोटे और बडे गांवों की बुराइयां इकट्ठी होती है। इस तरह अगर हुआ तो वह गांव अधिक से अधिक दुखी होगा।

गांव की समिति होनी चाहिये

आज प्रार्थना के पहले आप के गांव के लोगो के साथ चर्चा चल रही थी। मैंने पूछा कि भाई इस गांव में क्या हो रहा है? उसमे क्या सुधार कर सकते हैं? यह सब सोचने के लिये गांव मे कोई समिति या मंडली है पूछने पर तो कहा गया कि ऐसी कोई मंडली नहीं है। फिर मैं सोचने लगा कि हर कुटुंब में कुटुंब के भले के लिये कुछ न कुछ विचार होता है वैसे गांव के भले के लिये विचार

करनेवाला समाज अगर गाव मे न होगा तो गांव कैसे आगे बढ़ेगा ? हमारे लोगों मे घर से बाहर की सोचने की आदत ही नहीं है । लेकिन गांव में जो होता है उसका परिणाम घर पर होता है, और घर में जो कुछ होता है उसका परिणाम गांव पर होता है। इस तरह गांव और घर अलग नहीं है यह ध्यान मे आयेगा । इसलिये हरेक गांव मे गांव के बारे मे सोचने की आदत होनी चाहिये । अगर ऐसा कोई समाज, जिसे मै 'सर्वोदय समाज' कहता हूं, आप के गांव मे बन जाय तो गांव की सेवा का आरंभ होगा । तब तक गांव मे सेवा का आरंभ ही नहीं होता ।

गांव में दूसरे धंधे नहीं हैं

आप के गांव मे कोई चार हजार जनसंख्या है। तीन हजार एकड़ जमीन है। याने हर मनुष्य के पीछे पौन एकड़ जमीन हुई । इस गांव मे पानी की कुछ सहूलियत जरूर है । लेकिन इतनी कम जमीन जहां है वहां लोगो को पूरा काम नहीं है यह बात जाहिर है । और अगर गाव को पूरा काम नहीं मिलता है तो फिर गांव को पूरा खाने को भी कैसे मिल सकता है ? मैने देखा कि यहां के नजदीक के कुछ गांवो मे कहीं रेशम का काम चलता है । तो वैसा कोई काम यहां चलता है क्या ? ऐसा मैने पूछा तो जवाब मिला कि ऐसा कोई काम नहीं है । मैने यह भी पूछा कि गांव मे जो मुसलमान लोगो के घर है उनके घर वाले क्या काम करते हैं । क्योंकि मैं जानता हूं कि मुसलमानों के यहां गोशा होता है और उनके घर की स्त्रियां बाहर कोई खास काम नहीं कर सकतीं ?

लेकिन घर मे उनको कोई काम नहीं है ऐसा मुझे कहा गया। इस तरह जहां गाव मे पूरा काम-धाम नहीं है वहां लोगों मे अगर आपस में झगड़े न हुये तो उमे परमेश्वर की कृपा ही समझनी चाहिये।

सिंदी के बदले नीरा या गुड़ बनाओ

मै इस तरफ सिंदी के कई पेड़ देखता हूं। उनमे से जो सिंदी निकलती है वह पी पी कर लोग अपनी जिंदगी को बरबाद करते है। मैं तो यहां तक सुनता हूं कि इस गांव की चार हजार की जन संख्या में से करीब तीन हजार लोग सिंदी पीते होंगे। अगर इतनी बड़ी संख्या रोज सिंदी पी कर अपनी जिंदगी बरबाद करती है तो गांव के लिये यह बहुत खतरनाक बात है। गांव के लोगो का यह बड़ा भारी काम है कि लोगो को समझायें और सिंदी पीने से उनको मुक्त करे। ये जो सारे सिंदी के पेड़ है उनके रस का अच्छा गुड़ बन सकता है। और उसका ताजा रस अगर लोगों को पिलाने की व्यवस्था की जाय तो सिंदी के बदले अच्छी नीरा लोगो को मिल सकती है। लेकिन यह सब तब बनेगा जब गांव में गांव के बारे में सोचनेवाली मंडली होगी।

गांव की पंचायत कैसी हो

यह मंडली हर हफ्ता इकट्ठा होगी और गांव के हरेक काम के बारे में सोचेगी। ये लोग केवल सेवा के लिये इकट्ठे होंगे। किसी पार्टी के वे नहीं होंगे या किसी राजकीय पक्ष से उनका

संबंध नहीं रहेगा । मैंने पूछा—गांव मे कोई भजन मंडली भी है ? तो लोगो ने कहा कि भजन मंडली है और हर शुक्रवार को भजन करते हैं । मैंने कहा यह अच्छा है । गांव के दूसरे लोग भी इस भजन मंडली के साथ इकट्ठा हो जायँ । आधा घंटा सब मिलकर भगवान का भजन करें और बाकी के समय मे गांव के बारे मे सोचें। परमेश्वर के भजन के साथ गांव की सेवा का अगर कुछ आयोजन करते हैं तो वह परमेश्वर का सच्चा भजन होगा । परमेश्वर हरेक के हृदय में मौजूद है । तो अगर हम अपने बंधुओं की सेवा नहीं करते हैं और परमेश्वर का नाम लेने का दावा करते है तो वह नाम लेना सच्चे अर्थ में भजन नहीं है। आप के यहां भजन चलता है यह भी मेहरबानी है । क्योंकि उसके निमित्त से गाँव के लोग इकट्ठा होते है । तो जहां भजन होता है वहां सेवा का भी आयोजन हो सकता है । मैंने कभी यह भी देखा है कि जहां ग्राम पंचायत होती है वहां गाँव के काम की चर्चा तो करते है लेकिन साथ साथ झगडे भी चलते है । लेकिन परमेश्वर के भजन के साथ अगर गाँव की सेवा की चर्चा करेंगे तो वहां किसी तरह के झगड़े नहीं होंगे और परमेश्वर की दी हुई सद्बुद्धि से हमारा काम भी अच्छा चलेगा ।

गाँव एक कुटुंब बने

गाँव में कितनी तरह की सेवा हो सकती है उसका वर्णन तो मैं यहां नहीं करूंगा । जो लोग मेरे साथ चर्चा करने के लिये इकट्ठा हुए थे उनके सामने कुछ बातें मैंने बता दी हैं । आप लोगों से मैं इतना ही कहूंगा कि आप के गाँव के बारे में अगर आप

नहीं सोचेंगे तो बाहर का दूसरा कोई सोच कर आप का भला करेगा यह आशा करना बेकार है। तो आप को अपने कुटुंब के बाहर दृष्टि फैला कर गाँव के बारे मे सोचने का अभ्यास करना चाहिये। गाँव की खूबी ही समझनी चाहिये कि गाँव के लोग एक दूसरे को पहचानते है और कुछ प्रेम कर सकते है। अगर कुटुंब के बाहर जाकर सेवा करने का अभ्यास हुआ तो सारा गांव मिलकर एक कुटुम्ब ही बन जायगा। फिर जैसे घर की मां पूछती है कि घर के सब लोगो को खाना मिला है या नहीं, और जब उसे यकीन हो जाता है कि कोई भूखा नहीं है तभी वह खाती है। वैसे गाँव मे किसी को भूखा तो नहीं रहना पड़ा है यह गाँव की पंचायत देखेगी और सब को खाना मिला है यह देख कर ही खुद खायेगी। इस तरह गॉव की जिम्मेवारी उठानेवाली मंडली गॉव में बन सकती है और अगर वैसी बनी तो गाँव मे गाँव का राज्य बन जायगा।

मेरा स्वराज्य मुझे ही हासिल करना होगा

स्वराज्य का सच्चा अर्थ यही है कि हरेक गाँव अपने अपने पांवो पर खड़ा हो जाय और बलवान बन जाय। जिस राज्य मे और देश में बलवान् ग्राम होंगे वह राज्य और वह देश बलवान होगा। लेकिन जहां के गाँव कमजोर होंगे वह राष्ट्र और राज्य भी कमजोर होगा। हम लोगो के हाथ में स्वराज्य आया इसका मतलब यही समझो कि हरेक गाँव का फिर से संघटन करने का मौका हमें मिला है। अभी तो इतना ही समझो कि सारे देश को स्वराज्य मिल-गया है लेकिन उसके अन्दर के ग्रामों को अभी स्वराज्य हासिल करना बाकी है।

स्वराज्य भी एक ऐसी अजीब चीज है कि मेरा स्वराज्य आप नहीं दे सकते। मेरा स्वराज्य मुझे ही हासिल करना होता है। मौके पर यह बन सकता है कि दूसरा मनुष्य मेरे लिये खाना लाकर मुझे खिलादे। लेकिन यह कभी नहीं हो सकता कि दूसरा मनुष्य मुझे स्वराज्य दे। जैसे हरेक मनुष्य स्वर्ग और नरक अपने ही पुण्य और पाप से पाता है, वैसे ही गाँव का पुण्य और गाँव का पाप गाँव को खुद को भुगतना होगा और उसी से गाँव की उन्नति या अवनति होगी।

गांव की ही वनस्पतियों से गांव की बीमारी का इलाज

आज चर्चा हो रही थी तब लोग सारे जिले की बात करने लगे। मैंने कहा जिले की बात मत करो इस गांव की बात करो। वे लोग कहते थे कि इस जिले मे एक दवाखाना खोलने का विचार हो रहा है और उसके लिये पैसा भी इकट्ठा किया जा रहा है। मैंने कहा ऐसा हो रहा है तो अच्छी बात है, लेकिन उतने मे इस गांव की बीमारी दूर होनेवाली नहीं है। क्योंकि जिले के किसी बड़े शहर मे वह दवाखाना खुल जायगा और जो लोग वहा तक पहुंच सकेंगे उनकी सेवा वह दवाखाना करेगा। लेकिन अगर हमे गाँव के बारे में सोचना है तो यही करना पड़ेगा कि गाँव मे ही कुछ वनस्पतियां और दवाइयां बोनी होगी। और ताजी वनस्पतिया लेकर गाँव के बीमारों को देना होगा। अगर कोई यह कहे कि हम हरेक गाँव मे दवाखाना खोलेंगे और वहां बाहर से डॉक्टर लायेंगे जो गाँव की सेवा करेगा, तो मैं कहूंगा कि भाई यह नई बीमारी गाँव मे मत

लाइये। मैं तो यही कहूंगा कि गॉव की बीमारी का इलाज गाँव की वनस्पति से ही होना चाहिये। परमेश्वर की यह कृपा है कि उसने मनुष्य को जहा पैदा किया वहीं उसको सारी सहूलियतें दी हैं। मनुष्य को भूख है तो उसको खाना मिलने की योजना भगवान ने की है। जहां मनुष्य को उसने भूख दी वहां भूख निवारण की अकल भी उसने मनुष्य को दी। वैसे ही जहां बीमारियां हैं वहां दूर उन्हे करने का इलाज भी जरूर होना चाहिये। अगर यह आशा करेगे कि गॉव की बीमारी का इलाज हैद्राबाद या मेदक के डॉक्टर करेगे तो उन डॉक्टरो का बोझ इस गॉव पर पडेगा। इसके सिवाय और कुछ होनेवाला नहीं है।

भाइयो, मैने एक चीज आप के सामने विस्तार से रखी है। उस पर आप सोचे और ऐसा सर्वोदय समाज अपने गाँव मे बनाइये।

नूपरान (जि० मेदक)
१-४-५१

छब्बीसवां दिन—

३०

हम अपना कर्त्तव्य करें

परमेश्वर कसौटी करता है

दो चार दिन पहले आप के इस मुल्क में आसमान से ओले पड़े। कई जगह फसल को हानि हुई है, कई जगह मकान के कवेलू टूट गये हैं। मै सोचता था कि भगवान की कृपा से ही बारिश होती है और उसकी कृपा से ही फसल होती है। यह तो जाहिर है कि परमेश्वर दयालु है और सब पर उसकी कृपा है। लेकिन इस तरह बीच बीच में वह ओले गिराता है तो उसकी क्या मर्जी होगी इसका मेरे मन में विचार आता रहा। मै मानता हूं कि उसमें भी उसकी दया काम कर रही है।

वह देखना चाहता है कि हम लोग ऐसे मौके पर एक दूसरे को किस तरह मदद करते है। याने उसमें वह हमारी परीक्षा ले रहा है। वह देखना चाहता है कि जो दया वह हम पर बरसाता है उसका कुछ अंश हममें है या नहीं। अगर ऐसे मौके पर हम एक दूसरे को मदद न करे तो परमेश्वर की कृपा के लायक हम साबित नहीं होते है। होना यह चाहिये कि हम लोगों को जहां आपत्ति है वहां फौरन दौड़ जाना चाहिये और जो भी लोगों को मदद पहुंचा सकते हैं पहुंचानी चाहिये। लेकिन हम लोग वह तो नहीं करते हैं। सरकार की तरफ देखते हैं और सोचते है कि सरकार क्या

मदद करेगी ? यह तो अपने धर्म को भूल जाना है। सरकार तो अपना काम जरूर करेगी, उसको करना भी चाहिये। लेकिन सरकार की शक्ति की एक मर्यादा होती है, लोकशक्ति अमर्याद है। अगर हमारे घर में हमारा लड़का बीमार पड़ा तो हम यह राह नहीं देखते कि सरकार उसके लिये क्या करेगी। बल्कि हम फौरन हमसे जो बन सकता है करने की कोशिश में लग जाते हैं। वैसे ही कौटुम्बिक भावना हमारी समाज में होनी चाहिये। जैसे नदी में प्रवाह रहता है और पानी सतत बहता रहता है, वैसे हमारा प्रेम जिनको हमारी मदद की जरूरत है उनकी तरफ बहना चाहिये। समझना चाहिये कि ईश्वर हमारी परीक्षा लेना चाहता है और उस परीक्षा में हम अगर पास नहीं होते हैं तो एक बड़ा मौका खोते है। इस तरह नहीं सोचना चाहिये कि मै नहीं मदद करूंगा तो उससे क्या हानि होगी, दूसरे तो करेगे। सोचना यह चाहिये कि दूसरे तो मदद करेंगे लेकिन ऐसे मौके पर मै अगर मदद न करूं तो मैंने अपना मौका खोया। हमारे जीवन में दूसरो को मदद करने के लिये जो भी मौके मिलेंगे वे बड़े भाग्य के अवसर है ऐसा समझना चाहिये। तो हरेक को यही सोचना चाहिये कि इस मौके पर मैने क्या मदद की। यह नहीं सोचना चाहिये कि दूसरों ने क्या की या सरकार ने क्या की। दूसरे को जो करना होगा वह करेंगे या नहीं करेंगे, वह उनका नसीब है। लेकिन मुझे तो मेरा काम करना ही है। ऐसी जागृति हमारे मन में होनी चाहिये।

स्वराज्य में हरेक की जिम्मेवारी

स्वराज्य का लक्षण ही यह है कि स्वराज्य मे हरेक मनुष्य यही सोचता है कि मैंने इस देश के लिये क्या किया, मै इस देश के लिये क्या करता हूं ? क्या मै अपने देश के लिये अपने पडौसियो के लिये, गरीबो के लिये, आज कुछ करता हूं ? इस तरह जिस देश के सारे लोग सोचते है उस देश मे स्वराज्य है। जिस देश के लोग अपने कर्तव्य का विचार नहीं करते बल्कि दूसरे क्या करेगे, सरकार क्या करेगी, यही सोचते है वे लोग परतंत्र है, पराधीन है, गुलाम है। स्वराज्य याने हरेक की जिम्मेवारी हरेक महसूस करे। हमारे शरीर मे आंख अपना काम करती है, कान अपना काम करते है। आंख यह नही सोचती है कि कान क्या करते है, वह तो अपना कतर्व्य करती है। इस तरह हरेक अवयव अपने अपने कर्तव्य में जागरूक है इसलिये अपने देह मे अपना राज्य चल रहा है। मान लीजिये कि किसी के कान बहरे है और उसकी आंख अच्छी है, लेकिन आंख यह सोचने लगे कि कान अपना काम नहीं करते हैं तो मै भी अपना काम क्यो करूं, तो शरीर की क्या हालत होगी ? तो जैसे हरेक इंद्रिय दूसरे इंद्रियो की तरफ नहीं देखती बल्कि अपनी जिम्मेवारी समझ करके उस को पूरा करती है तो यह शरीर अच्छा चलता है। लेकिन इस देश मे लोगों की जबान से अकसर मै यह सुनता हू कि फलाना काम नहीं करता है, दूसरा काम नहीं करता है. वह खुद क्या काम करता है इसके

बारे मे वह बोलता ही नहीं। मुझे यह देखकर लगता है कि स्वराज्य अभी बहुत दूर है।

सच्चा स्वराज्य अभी हासिल करना है

एक तरह का स्वराज्य तो मिल गया लेकिन वह स्वराज्य नहीं है। वह तो इतना ही हुआ कि दूसरे देश के पंजे से हमारा देश छूट गया। हमारे घर मे शेर घुस गया था उसको बाहर निकाल दिया इतने से हमारा काम नहीं पूरा होता है। यह कोई नहीं कहेगा कि भाई शेर तो चला गया अब रसोई करने की क्या जरूरत है। बल्कि यही कहेंगे कि अब शेर बाहर चला गया है तो शुरू करो अपना घर का काम। तो हरेक गांव, हरेक घर और हरेक मनुष्य को यह सोचना चाहिये कि स्वराज्य आया है उसका मतलब मेरे पर जिम्मेवारी आई है। गांव मे सैंकडो काम ऐसे होते है जो गाव वाले अगर एक दूसरो को मदद दे तो खुशी से हो सकते है। अगर हरेक गाव यही कहेगा कि हम को बाहर से मदद मिलनी चाहिये तो हरेक गांव को कहा से मदद आयेगी। समझना चाहिये कि हम लोग गरीब है तो हमारी सरकार श्रीमान् कैसे हो सकती है, वह भी गरीब ही होगी। देखिये मनुष्यो के हिसाब से अपने देश की सरकार की संपत्ति कितनी है, और अमेरिका की सरकार की सपत्ति कितनी है। तो हमारे सरकार को बलवान हमें बनाना है। यह दृष्टि हमारी प्रजा में जब आयेगी तब वह खुद अपना काम करने लगेगी और स्वराज्य का अनुभव हम लोगों को होगा।

कलात्मक शिक्षण के लिये सरकार मदद देगी

हां यह हो सकता है कि आप के गांव मे आप कोई उद्योग खडा करना चाहें, और कोई जवान लोग उसके लिये तैयार हो जाँय, और उन को कहीं से तालीम दे कर लाना है तो उस काम के लिये सरकार से आप मदद मांग सकते हैं। याने सरकार की तरफ से तालीम की एक छोटी सी मदद हम को मिल सकती है, और वह मागनी चाहिये। लेकिन तालीम याने उद्योग की तालीम। पढ़ना लिखना तो गांववालो को अपने गांव मे खुद कर लेना है। जो धंदे या उद्योग गांव मे मौजूद नहीं हैं उसके लिये सरकार कुछ स्कॉलरशिप दे सकती है, और व्यवस्था कर सकती है। हर गांव में जो खेती होगी उस में परिश्रम करना गांववालो का ही काम रहेगा। लेकिन खेती मे अगर कोई जंतु बढ़ गये है और उससे खेती नष्ट होती है तो उस के लिये क्या इलाज करना, यह सरकार को पूछ सकते है और सरकार से ऐसी सलाह मिल भी सकती है। यही समझो कि जैसे अपने कुटुंब का सारा कारोबार हम खुद करते हैं लेकिन अपने पड़ौसियो से कहीं थोड़ी मदद चाहते हैं तो मिल जाती है। उसी तरह एक गांव को दूसरे गांव की कुछ मदद मिल सकती है। लेकिन मुख्य जो काम करना होगा वह गांववालों को अपने पांव पर खड़े हो कर ही करना होगा। यही समझो कि मुझे अपने ही पांव पर खडा होना होता है, अपने हाथ से काम करना होता है अपने आंख से देखना होता है, अपने कानों से सुनना होता है। वैसे दूसरों को भी इन्हीं इंद्रियों से काम लेना होता है।

फिर भी हम एक दूसरे को कुछ मदद देते हैं। याने हम पंगु बनकर एक दूसरों की मदद नहीं करते हैं बल्कि हम अपने अपने शरीर का पूरा उपयोग करके समर्थ बनते हैं और समर्थ बन कर दूसरों की मदद लेते हैं, दूसरों को मदद देते हैं। मैं यह नहीं कहता हूं कि आप की आंख से मुझे देखना है, आप के कान से मुझे सुनना है। मैं तो अपनी आंख से देखने की जिम्मेवारी मानता हूं और आप की मदद लेता हूं। इसी तरह एक दूसरे का एक दूसरे पर थोडा-थोड़ा उपकार हो सकता है।

इस तरह स्वावलंबन और परस्पर सहकार ये दो चीजें स्वराज्य में हरेक को सीखनी चाहिये। इन दोनों की अपनी मर्यादा क्या है ? यह हरेक को पहचानना चाहिये। एक मनुष्य को भी यह चीज लागू है, गांव को भी लागू है।

कोचारम् (जि मेदक)
२-४-५१

सत्ताइसवाँ दिन—

: ३१ :

"इन्शाल्लाह" भगवान चाहे तो

भक्त की कसौटी :

८ मार्च से मै वर्धा से हैद्राबाद के लिये पैदलयात्रा में निकल पड़ा हूं। कुछ रोज तो हमारा काम ठीक चला। लेकिन चार दिन पहले मुझे बुखार आ गया, जो लगातार चार दिन रहा। हमारे साथी सोचने लगे कि कुछ रोज विश्रांति लेनी चाहिये। मैने कहा कि नहीं हम रोज के नियम के मुताबिक चलते ही रहेंगे। क्योंकि मुझे विश्वास था कि भगवान बीच मे थोडी कसौटी लेना चाहता है इसके सिवाय और कुछ नहीं है। परमेश्वर हमेशा भक्त की बीच बीच मे सत्त्वपरीक्षा लिया करता है। लेकिन जैसे वह परीक्षा करता है वैसे वह शक्ति भी देता है। आखिर श्रद्धा रख कर हम चलते रहे। और आज मैं देखता हूं कि बुखार चला गया। अब लगता है कि जैसा हमने पहले तय किया था वैसे दो तीन रोज के अंदर शिवरामपल्ली के सर्वोदय संमेलन में पहुंच जायेंगे। लेकिन यह भी मनुष्य की कल्पना मात्र है। भगवान ने जो चाहा होगा वही होगा। मै वर्धा से निकला तब मन मे भगवान का नाम ले कर ही निकला। और आज भी उसी के बल पर मेरा

सब काम चलता है। मैं देखता हू कि मनुष्य में अपना निज का कोई बल नहीं है। अगर वह भगवान पर श्रद्धा रख कर चलता है तो भगवान कुछ बल देता ही है।

"इन्शाल्लाह"

मैंने कुरान मे एक जगह एक किस्सा पढा था। वह इस समय मझ याद आ रहा है। बडा दिलचस्प किस्सा है। एक रोज कोई बात महमद पैगबर से पूछी गई तो उसने कहा कि "हा मै उसे करूगा" लेकिन उन्होने जैसा वचन दिया था वैसा वे कर नहीं पाय। तब उनसे पूछा गया कि "आपने वादा किया था वैसा आप क्यों नहीं कर पाये।" तो मुहमद पैगबर ने जवाब दिया कि अगर भगवान चाहेगा तो" इतना कहना मै, भूल गया और "मै करूगा" ऐसा अपन नाम से मैंने कहा इसलिये वह काम नहीं हो पाय। इसीलिये मुसलमानो मे "इन्शाल्लाह" याने अगर भगवान चाहे तो, ऐसा बोलने का रिवाज पडा है। लेकिन सिर्फ बोलने की यह बात नहीं है, मन में वैसी भावना होनी चाहिये। अपने जीवन की कोई भी कृति हम भगवान की इच्छा के बगैर नहीं कर सकते। वह चाहता है तभी वह बनती है।

हरिनाम ही एकमात्र बल

अपने निज के काम मे अगर हम इतने असमर्थ हैं तो जहाँ हम देश का काम करने जाते है वहां भगवान की इच्छा के बिना कैसे होगा? इसलिये जब कभी मैं देश के काम के बारे में सोचता

हूं तो मुझे परमेश्वर के स्मरण का महत्त्व उत्तरोत्तर अधिक ध्यान में आता है। स्वराज्य प्राप्ति के बाद हमारे देश के सामने बहुत बड़ी समस्यायें खडी हो गईं। उनमें से कुछ समस्याओ का हल तो मिल गया लेकिन बहुत सारी वैसी की वैसी मौजूद है। और मेरा तो विश्वास हो गया है कि बिना परमेश्वर की मदद मांगे और लिये इन कठिन कामो को हम अपनी शक्ति से हल नहीं कर सकेंगे। मुझे एक भाई ने पूछा–"आपको जो कहना है वह आप कोई स्वतंत्र व्याख्यान में क्यो नहीं कहते? प्रार्थना के साथ उसको क्यो जोड़ देते हैं।" मैंने कहा, "प्रार्थना ही एक मुख्य शक्ति मेरे पास है। इसलिये सब के साथ मै उस प्रार्थना को करना चाहता हूं। और जब मै प्रार्थना के बाद थोड़ा बोलता हूं तो उसमे प्रार्थना की शक्ति का ही जो परिणाम होता है सो होता है। बाकी मेरे निज के शब्दों मे कोई खास शक्ति है ऐसा मैने अभी तक अनुभव नहीं किया है। यह एक बात जो इन दिनों बहुत दफा मेरे मन मे आई वह आपके सामने रख दी।

अध्ययन की आवश्यकता

एक दूसरी बात कहना चाहता हूं। कल कार्यकताओ के साथ बात हो रही थी तब मैने पूछा कि पोतना का भागवत आप लोगों में से कितने लोगों ने पढ़ा है। वहां जो भाई इकट्ठा हुये थे उनमें से सिर्फ एक ने कहा कि मैंने पढ़ा है। बाकी सबने नहीं पढ़ा था। जो लोग वहां थे वे सब पढ़े-लिखे थे और कुछ न कुछ

काँग्रेस का काम करनेवाले थे। तो मुझे आश्चर्य लगा कि तेलगु मे जो किताब सब के दिलों पर असर करती है याने जो जनता की किताब है इसको इन लोगों ने कैसे नहीं पढा! फिर मैंने उनसे प्रार्थना की कि हर रोज आपको उस किताब का कुछ न कुछ अभ्यास जरूर करना चाहिये। हमारे शरीर को जैसे रोज साफ करने की जरूरत होती है वैसे हमारे मन को भी रोज शुद्ध करने की आवश्यकता होती है। इसलिये संतों के वचनो का कुछ परिचय रोज रखना और उसका चिंतन मनन करना बहुत लाभदायी होता है। इस तरह अपने मनकी शुद्धि का काम कार्यकर्ता नहीं करते है तो उनकी कर्तृत्वशक्ति दिन ब दिन बढने के बजाय क्षीण होती जायगी। इसके अलावा जिस किताब ने जनता मे काम किया है और जनता के दिलों पर जिसका असर है उस किताब से हमारे कार्यकर्ताओं का अगर परिचय न हो तो वे ग्रामो मे क्या सेवा कर सकेंगे। ग्रामों की सेवा अगर हम करना चाहते है तो ग्रामवासियो की पवित्र भावनाओं के साथ हमारे दिल का संबध जुड जाना चाहिये। मुझे लगा कि यह चीज मै आप लोगों के सामने भी रखू।

पतिव्रता धर्म का अर्थ

आखिर यहां जो बहनें इकट्ठी हुई हैं उनको एक दो बातें कहना चाहता हूं। हैद्राबाद राज्य में जब से मैंने प्रवेश किया है तब से मैं देख रहा हूं कि यहां शराबखोरी बहुत है। इसमें से हम

कैसे छूट सकते है इसका जब मै विचार करता हूं तो उसमें स्त्रियों का मुझे बहुत काम दीखता है। माताओं के हाथ में भारी शक्ति है। सत्याग्रह की शक्ति स्त्रियों में जितनी होती है उतनी शायद पुरुषों में भी नहीं हो सकती। इसलिये आप बहनो से मुझे कहना है कि आप अगर निश्चय करे तो पुरुषों को व्यसनों से छुड़ा सकती है। लेकिन हम लोगो मे ऐसा एक खयाल हो गया है कि पति चाहे दुराचार भी करता हो तो स्त्री को कुछ बोलना नहीं चाहिये और उसको चुपचाप सहन करना चाहिये। इस तरह सहन करने में ही पातिव्रत धर्म है यह स्त्रियां समझती है। यह बात सही है कि पति दुराचारी भी हो तो भी उसकी सेवा करना पत्नी का काम है और पति की सेवा करके ही वह पति को जीत सकती है। लेकिन सेवा करने का यह मतलब नहीं है कि उसको उसके व्यसन में से छुड़ाने की कोशिश नहीं करनी चाहिये। पति को दुराचरण से परावृत्त करने की जिम्मेवारी पत्नी पर है ऐसा पत्नी समझे तभी वह धर्म समझती है।

सूत कताई क्यों नहीं करते ?

दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि आप बहनें कातती क्यों नहीं ? गांधीजी आखिर तक कातने का धर्म लोगों को समझाते रहे। अब हम देखते हैं कि उनके जाने के बाद तीन साल बीत चुके लेकिन मिल का कपड़ा सब लोगों के लिये काफी मात्रा में पैदा ही नहीं होता है। मिल वाले पहले जितना कपड़ा पैदा करते

थे उतना भी अन्न नहीं कर पाते है, इसलिये लोगों में कपड़े की तंगी है। ऐसी दशा मे हम लोग अगर मिल के कपड़े के भरोसे रहेंगे तो हमारे लिये वह अच्छी बात नहीं है। इसलिये मैं आप लोगों से निश्चयपूर्वक कहना चाहता हू कि आप लोग घर में बैठे बैठे अगर सूत कातेंगी तो उससे देश की और गाँव की बहुत सेवा होगी।

मेडचल (जि० हैद्राबाद)

३-४-५१

अट्ठाइसवाँ दिन—

: ३२ :

प्राकृतिक चिकित्सा

मामूली बीमारी में दवा की जरूरत नहीं

हम लोग वर्धा से हैद्राबाद पैदल यात्रा में जा रहे थे, और आपके गाँव का मुकाम हमने नहीं सोचा था। लेकिन यहां पर एक भाई प्राकृतिक चिकित्सा का काम कर रहे है। उनका आग्रह रहा कि उनके स्थान में हम एक दिन बितावें। उनके काम का अभी आरंभ हुआ है ऐसा तो नहीं कह सकते। लेकिन जो थोड़ा समय बचता है उस में प्राकृतिक चिकित्सा का काम वे कर लेते है। मैंने उनकी बात मान ली। क्योंकि सर्वोदय की जो जीवन-योजना है उस में कुदरती इलाज के लिये एक विशेष स्थान है। और इस मुसाफिरी मे भी हम लोगों को उसका अनुभव आया है। चार दिनों से मुझे बुखार आता था, और अकसर ऐसे मामूली बुखार में बिना दवाई के केवल आहार के फरक से जो हो सकता है वह करने का हमेशा मेरा प्रयत्न रहता है। हमारे गुरू ने हमें सिखाया है कि परमेश्वर का नाम लेना ही सब से बड़ी दवा है, जिसको अनेक महापुरुषों ने आजमाया है। तो हम भी उस पर श्रद्धा रखते हैं। हमने मुसाफिरी जारी रखी। चलना जैसे रोज होता था

वैसा होता रहा। कुछ आहार में फरक कर लिया। बाकी सारा कार्यक्रम जैसा का तैसा जारी रहा। चार दिन बुखार सतत आया। मैं तीन दिन की कल्पना करता था, लेकिन एक दिन वह और आगे बढ़ा। चार दिन के बाद वह गया। इस तरह भगवान कसौटी करता है और अनुभव देता है, कि साधारण बीमारी में कोई दवा वगैरह की जरूरत रहती नहीं। जीवन में थोड़ा परिवर्तन कर लिया आहार में फरक किया, कुछ विश्रांति पचनेंद्रिय आदि को दे दी तो काम निभ जाता है।

गुलामी का अश

मामूली बीमारियों में इस तरह काम हो जाता है। जो विशेष बीमारी होती है उस पर कोई खास इलाज अभी किसी को सूझा नहीं है। तो उसके लिये केवल परमेश्वर के नाम का ही आधार रहता है। इस तरह से दवाइयों के लिये बहुत कम अवकाश है। लेकिन आज कल हम देखते है कि जिधर जाओ उधर डॉक्टर भी बढ़े हैं और रोग भी बढ़े हैं। और दोनों एक दूसरे के शत्रु नहीं दीखते हैं बल्कि मित्र ही दीखते है। क्योंकि दोनों बढ़ते चले जा रहे है। एक बढ़ता और दूसरा घटता तो हम कह सकते थे कि वे एक दूसेर के शत्रु हैं। लेकिन जहां डॉक्टर मजे में बढ़ते जाते है और रोग भी मजे में बढ़ते जाते हैं वहां यही अनुमान होता है कि दोनों मित्र हैं और दोनों हाथ में हाथ मिलाये चलते हैं। यह हिंदुस्तान के लिये बड़ा खतरा है कि हिंदुस्तान की जनता को परदेशी औषधियों का आधार लेना पड़े। भगवान ने अन्न हमारी

भूमि मे पैदा किया तो हमारे रोगों का इलाज भी यहीं से होना चाहिये। लेकिन हर शहर में आप देखेंगे कि कोई छोटा सा भी रोग हुआ तो फौरन दवाई देते है और वह दवा परदेशी होती है। मानो यहां ऐसी कोई वनस्पति भगवान ने नहीं रखी, या यहां की कुदरत में ऐसी कोई शक्ति नहीं रखी, कि जिससे वह छोटा रोग भी दूर हो। लेकिन एक गुलामी जहा आती है वह अपने साथ दूसरी कई गुलामियो को लाती है। तो राजकीय गुलामी, अंग्रेजो की सत्ता, हम लोगो पर चली, वह तो चली गई। लेकिन उस के साथ-साथ दूसरी कई गुलामियां वह लाई थी वह अभी गई नहीं।

हिंदुस्तान की विशेषता

वास्तव मे हमारे देश मे वैद्यशास्त्र का काफी अच्छा विकास हुआ था। हमारे एक मित्रहमेशा कहते हैं कि हिंदुस्तान की भूमि में विद्यायें तो बहुत प्रकट हुई, लेकिन दो विद्याये अद्वितीय हैं। एक वेदांतविद्या और दूसरी वैद्यविद्या। मैं इस चीज को वैसा कबूल नहीं करता हूं। यह मै कबूल करता हूं कि यहां की वेदांत विद्या की बराबरी करनेवाली विद्या दुनिया भर में कहीं नहीं हुई। लेकिन यहां की वैद्यविद्या अद्वितीय है ऐसा तो मै नहीं कह सकता। दूसरे देशों में भी काफी अच्छी वैद्यविद्या चली है। यूनान में चली है, अरबस्तान में चली है। आजकल पाश्चात्य देशों ने दवाइयों में और शरीर के संशोधन में बहुत तरक्की की है यह मानना पड़ेगा। तो हमारे देश में जो वैद्यशास्त्र निकला वह कोई अद्वितिय था या परिपूर्ण था ऐसा तो मैं दावा नहीं कर सकता।

लेकिन फिर भी हमारे देश के लिये जो दवाइयाँ चाहिये वे यहीं की वनस्पतियों से मिलनी चाहिये। और यहां का वैद्यशास्त्र यहीं की वनस्पतियो के बारे में सोचता है इतनी विशेष बात हमारे लिये है। अर्थात् वैद्यशास्त्र के लिये यह कोई आश्चर्यकारक बात तो थी नहीं। क्योंकि जो हमारा वैद्यशास्त्र यहा पैदा हुआ वह यहां की वनस्पतियों के बारे मे न सोचे तो और कौनसी वनस्पतियों के बारे मे सोचेगा? इसलिये यहा की वनस्पतियों का संशोधन उन्होंने किया। और वही हमारे काम का है। लेकिन वह कच्चा है, पूरा नहीं है। हमारी बहुत सारी पुरानी वनस्पतिया ऐसी हैं जिन्हें हम पहचानते नहीं हैं। जिनके नाम भी हम नहीं जानते। तो वह सारा संशोधन हमें करना है।

रोग-निवारण का मसाला हर गाव में मौजूद है

इस संशोधन में हमें जितना समय लगेगा उतना हम दे। लेकिन साथ साथ हमें यह भी नहीं भूलना चाहिये कि परमेश्वर की लीला और उसकी योजना ऐसी है कि वह हर किसी को पूरी तरह से स्वावलंबी बना देता है। ज्ञान के साधन हरेक को दिये है, अन्न-पाचन की शक्ति हरेक को दी है, शरीर परिपूर्ण हरेक को दिया है, हवा पानी हरेक के लिये मौजूद है। तो ज्वर का इलाज किस तरह करें यह तरीका भी हरेक को दिया हुआ ही होना चाहिये और वनस्पतियो का बहुत आधार भी लेने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिये। मिट्टी का उपचार हो सकता है, पानी का उपचार हो सकता है, उत्तम हवा का उपचार हो सकता है, प्रकाश का उपचार हो सकता है। इस तरह वेदों में सृष्टिदेवता की उपासना

अनेक प्रकार से बताई गई है। और कहा है कि रोगों के इलाज में पानी का कितना उपयोग है, सूर्यकिरणों का कितना उपयोग है। यह सब वेदों में भरा पड़ा है। और हम अगर जरा भी सोचें तो ध्यान मे आ जायगा कि हमारा सारा शरीर इस ब्रह्मांड का बना है। शरीर मे जो भी चीज भरी है वह सारी ब्रह्मांड मे भी मौजूद है। बाहर पानी है तो शरीर मे भी रक्त आदि भरा है। बाहर सूर्यनारायण है तो शरीर में आँख है, और प्रकाश है, बाहर वायु है तो शरीर मे सांस है। इस तरह जो चीज बाहर है वह शरीर मे भी मौजूद है। यहां तक कि बाहर जो सोने की और लोहे की खानें है वह भी हमारे शरीर मे मौजूद है। याने हमारे रक्त आदि मे जो धातु पड़े है उनमे लोहा भी है, तांबा भी है और सुवर्ण भी है। यह सारी चीजे जो ब्रह्मांड में है वे पिंड में भी पड़ी हैं। शरीर ही जब ब्रह्मांड का बना हुआ है तो पृथ्वी, आप, तेज, वायु, आकाश इन चीजो का खूबी के साथ निर्भयतापूर्वक प्रेम से अगर उपयोग करे तो बहुत सारे रोगो का हल हो सकता है।

गांव में दवाखाना मत लाइये

इस तरह की प्राकृतिक चिकित्सा की विद्या गांव गांव मे पढ़ाई जानी चाहिये। अगर गाँवो के बारे मे हम यह सोचें कि हर गांव में दवाखाना बने तो एक तो बनाना अशक्य है और दूसरे अगर बना भी लिया और बाहर की सारी वनस्पतियां वहां आने लगीं, तो गांव लूटने का एक नया रास्ता खुल जायगा। दूसरे रास्ते पहले ही बहुत बन चुके हैं, उन में यह और एक इजाफा अगर

हुआ तो गांव के रोग कम नहीं होंगे बल्कि बढ़ेंगे ही। क्योंकि लोगों का आहार ही क्षीण हो जायगा। तो यह गांव का इलाज नहीं हो सकता कि बाहर की वनस्पतियां यहां आयें और बाहर का डॉक्टर यहां काम करे। हो यही सकता है कि गांव मे जो वनस्पतियां पैदा होती हैं उनका उपयोग सिखाये। और बिना वनस्पति के भी कहीं एकाध फाका कर लिया, या कहीं कुछ पानी का उपचार किया, कहीं एनीमा ले लिया। इस तरह अपना रोग किस तरह दूर हो सकता है यह तरीका लोगों को सिखाया जाय। अगर यह सिखाया जायगा तो आप देखेंगे कि कम से कम खर्च मे लोगो की अच्छी से अच्छी सेहत बन जायगी। क्योंकि कुदरत में ऐसी शक्ति है कि वह शरीर को सुधारने के साथ साथ कोई दूसरा बिगाड़ उसमें पैदा नहीं करती। औषधियों से यह होता है कि एक रोग दूर हुआ ऐसा आभास जहां होता है वहां फौरन दूसरा रोग हो जाता है। इस तरह रोगो का सिलसिला लगा रहता है। और जहां एक दफा घर मे बोतल का प्रवेश हुआ वहां वह बोतल उस घर से निकलती ही नहीं। वह, उस मनुष्य को खतम करती है। लेकिन स्वयं बची रहती है। यह हालत दवाइयो के कारण होती है।

शहरों में रोग क्यों बढे ?

तो देहातो का इन दवाइयो पर निर्भर रहना खतरनाक है। और शहरों के लिये भी वही चीज है। आखिर शहरो मे रोग क्यों बढ़े ? इसीलिये बढ़ते हैं कि शहर के लोग ठीक व्यायाम नहीं करते, अपने घरों मे बैठे रहते हैं तो अच्छी हवा उनको नहीं,

मिलती। खूब कपड़े पहनते है तो सूर्य की किरणों से वंचित रहते हैं इस तरह परमेश्वर की दी हुई देनो से लाभ उठाने से वंचित रह जाते हैं। घर भी ऐसे बने कि कुदरत से दूर रहना पड़ता है। काम भी ऐसा कि कुदरत के साथ कोई ताल्लुक नहीं। फिर रात को जागेंगे, सिनेमा देखेंगे, खराब किताबें पढेंगे, इस तरह अपने शरीर को और मन को बिगाड़ लेते है तो रोग बढ़ते है, और उनके उपचार के लिये फिर दवाइया लेते है। डॉक्टर के पास जाते हैं, ऑपरेशन करवाना पड़ता है, कई तरह के इजेक्शन चाहिये, निषिद्ध वस्तु का सेवन चाहिये, जो चीजें साधारणतया कोई खाता नहीं है वे खानी चाहिये, दूर दूर से महगी चीजे खरीदनी चाहिये। यह सारा उसके पीछे आता है। और वह शहरवाला सब तरफ से क्षीण हो जाता है। तो शहरों के लिये भी प्राकृतिक चिकित्सा ही उत्तम आधार है।

कुदरती उपचार सीख लो

अब प्राकृतिक चिकित्सा के बारे में अगर मै यहा विचार करूं तो वह बहुत समय का काम है। विचार बहुत है और अनुभव भी कुछ लिया है। एक बात सिर्फ कहना चाहूंगा। यहां जो भाई काम कर रहे है उनको आप मौका दीजिये। वे अपना धंधा करते हैं और बचे समय में यह काम करते हैं। लेकिन आप अगर उनको पूरा काम देंगे तो वे अपना धन्धा भी छोड देंगे और इसी काम मे लग जायेंगे। उनका उपयोग करो और उस विद्या को खुद सीखो। ताकि उन पर भी आधार रखने का मौका न

आये। और आप में से हरेक मनुष्य कुदरती उपचार में प्रवीण बन जाय। उसका ज्ञान हासिल करने के लिये बहुत ज्यादा समय की जरूरत नहीं है। हम क्या खाते हैं ? किस चीज से क्या परिणाम होता है? इस तरह का आत्मपरीक्षण करना अगर मनुष्य सीख जाय और थोड़ा संयम सीख ले तो यह विद्या हासिल हो सकती है। तो आप इस भाई से वह विद्या हासिल करें यह आप को मैं सूचित करना चाहता हूं।

कुदाली फावड़ा चरखा कुदरती उपचार के औजार

अब एक दूसरी बात है। जहा प्राकृतिक उपचार का स्थान होता है वहा हॉट वॉटर बॅग रखते हैं, एनीमा रखते हैं, और भी कई तरह के ऐसे औजार रखते है। अब ये छोटे छोटे औजार बड़े काम के होते हैं और वे मनुष्य को जो राहत मौके पर देते हैं, वैसी राहत वनस्पतियों से भी कभी कभी नहीं मिलती। जरा एनीमा लेते हैं तो जो पेट दुखता था उसमें बहुत फरक पड़ा, और दूसरे बहुत से उपचार किये गये लेकिन पेट पर कोई असर नहीं हुआ यह घटना तो हमने कई बार देखी है और उसका अनुभव किया है। तो ये छोटे औजार काम के हैं। लेकिन मेरा मानना है कि इनके साथ साथ कुदरती उपचार की संस्था के पास एक खेत भी होना चाहिये। और मरीजों को उनकी सेहत को देख कर कुछ काम भी खेत में देना चाहिये। कुदाली फावडा चरखा आदि जो औजार हैं ये भी कुदरती उपचार के औजार हैं। ऐसा मेरा दावा है।

कुदाली फावड़ा चरखा सार्वभौम औजार

कोई कहेगा कि यह तो एक पागल मनुष्य आया है। जहां भी कोई बात निकलती है तो कुदाली फावड़ा चरखा लाता है। उसको पूछते हैं कि भाई हिंदुस्तान की पैदावार कैसी बढ़ेगी, हिंदुस्तान लक्ष्मीवान कैसे बनेगा तो कहता है कि कुदाली लो, फावड़ा लो, चरखा लो। उसको पूछते हैं कि तालीम किस तरह दी जाय तो कहता है कि तालीम का जरिया कुदाली, फावड़ा और चरखा है। अब आज तो यह बोलने लगा कि कुदरती उपचार के औजार कुदाली फावड़ा और चरखा हैं। तो हर चीज के बारे में यह ऐसा ही कहता है तो यह पागल है ऐसा लोग कह सकते है। लेकिन मैं लोगों से कहूंगा कि मेरा पागलपन इतने में खतम नहीं हुआ है। मै और आगे बढ़ा हुआ हूं। मैं यह भी कहता हूं और कई मर्तबा कह भी दिया है कि हम को ये जो लड़ाइया लड़नी हैं उन के औजार भी कुदाली फावड़ा और चरखा हैं। सामाजिक क्रांति हमे करनी है, राजकीय क्रान्ति भी करनी हमें बाकी है। कोई यह न समझे कि हिंदुस्तान में आज जो राज्यतन्त्र चल रहा है वह आदर्श है। सर्वोदय की पद्धति में जो राज्यतंत्र आयेगा उसमें और आज के तंत्र में बहुत फरक होगा। तो हमें राज्यतंत्र भी बदलना है। उसके लिये जो लड़ाइया लड़नी हैं उन लड़ाइयों के औजार भी मेरे मन में तो कुदाली, फावड़ा, चरखा और चक्की ये सारे हैं। और मेरा अपना विश्वास हो गया है कि मनुष्य बीमार पड़े ऐसी भगवान की हरगिज इच्छा हो ही नहीं सकती। उसने मनुष्य को

हर चीज दी है उसके साथ भूख दी है। इसका अर्थ यह हुआ कि भूख के लिये परिश्रम करना परमेश्वर की आज्ञा है। लेकिन मनुष्य परिश्रम नहीं करना चाहता, और खाना चाहता है। और भूख से ज्यादा भी खाना चाहता है। इधर परिश्रम न करे और उधर भूख से ज्यादा खाय, यह जब चलता है तो परमेश्वर को क्रोध आता है और अपने क्रोध में वह हमें बीमारियां देता है। अगर हम ठीक कुदरती तौर पर जीवन बितायें और शरीर परिश्रम से ही रोटी कमाने का निश्चय करें तो आप देखेंगे कि बहुत सारी बीमारियां खतम हो जायेंगी।

शरीर परिश्रमी भी बीमार क्यों पड़ते हैं ?

आप यह पूछ सकते हैं कि अपने देश में कई लोग शरीर परिश्रम से ही अपना गुजारा करते हैं फिर उन्हें क्यों बीमारियां हैं ? इसका कारण यह है कि उन पर परिश्रम का ज्यादा बोझ पड़ता है और उतने प्रमाण में उन को खानेको नहीं मिलता। दूसरे जो लोग परिश्रम नहीं करते वे उनका खाना खा लेते हैं। इस तरह वे लूटे जाते हैं इस कारण उनको बीमारियां होती है। ये काम नहीं करते हैं इसलिये इनको बीमारियां होती हैं, और इनको खाना नहीं मिलता है इसलिये इनको बीमारियां होती हैं। इस तरह दोनों बीमार ही पड़ते हैं। लेकिन दोनों अगर शरीर परिश्रम में लग जायें और मापक श्रम करें, नियमितता से जीवन बितायें और आहार की मात्रा देख कर अन्न सेवन करें, स्वाद के वश न हों तो ईश्वरीय योजना में मनुष्य को बीमार पड़ने का कोई कारण नहीं है इसमें जरा भी संदेह नहीं है।

४।४।५१ बोलारम (जि. हैद्राबाद)

उनतीसवाँ दिन

: २९ :

शिक्षा प्रणाली कैसी हो

पैदल यात्रा का लाभ

दो साल पहले हैद्राबाद के राज्य म कुछ दिन घूमने का अवसर मिला था। और तब सिकदराबाद भी आना हुआ था। उस वक्त की मुसाफिरी एक दूसरे उद्देश्य से हुई थी। और कुछ जिलो मे घूम चुके थे। इस मर्तबा हम सर्वोदय की यात्रा के लिए निकल पडे। सर्वोदय समेलन शिवरामपल्ली मे था इसलिए रास्ता भी वर्धा से हैद्राबाद राज्य मे होकर ही जाता था। इस से चार पाच जिलो का परिचय हुआ। पैदल यात्रा मे जिस तरह कुदरत का और मनुष्य का समीप और स्वच्छ दर्शन होता है वैसा और दूसरे किसी तरीके से नहीं होता। और इसी अनुभव के लिये हमने पैदल निकलने का सोचा। कुल मिलाकर जो अनुभव मिला वह बहुत ही लाभदायी रहा। और हम तो मानते हैं कि हमारे देश का दर्शन जो उसमे देखने को मिला है वह यद्यपि कल्पना के बाहर नहीं था तथापि हम अगर पैदल नहीं निकले होते तो वह दर्शन नहीं होता। यात्रा में छोटे छोटे गाँवो से भी जाना पडा, बडे बडे गाँव भी बीच मे आये।

छोटे गाँवों की खूबी

छोटे छोटे गाँव जहां आये वहा उन गाँवो की अपनी अपनी खूबिया दीख पड़ीं। यद्यपि गाँव में कुछ चीजें समान होती हैं फिर भी हरेक गाँव एक तरह से जिंदा होता है, मानों उसमें एक स्वतन्त्र आत्मा होती है। हर गाँव की अपनी खुसूसियत होती है। जैसे हम एक ही सूर्योदय हर रोज देखते है फिर भी उसे देखने से कभी किसी का जी ऊबा नहीं। एक दिन सूर्योदय के मौके पर जो दृश्य दिखाई देता है वह दूसरे दिन कभी दिखाई नहीं देता। हर रोज नया नया ही दृश्य दीख पड़ता है। वैसी ही कुछ हालत देहातों की है। हर देहात मे कुछ कुछ विशेषतायें होती है। वे सब हमे देखने को मिलीं। लेकिन जहां बडे बड़े शहर आते हैं वहा अगर एक शहर देख लिया तो दूसरा शहर देखने की जरूरत नहीं रही ऐसा लगता है। परदेशी वस्तुओं से भरी हुई वही दूकानें हर जगह नजर आती हैं, वही मोटरो की दौड़धूप और चित्त की चंचलता हर जगह दीख पडती है, सिनेमा खेल आदि वही हर जगह होते है। हर जगह वही आनंद की खोज और हर जगह वही आनंद का अभाव। किसी भी शहर में आप जाइये उसका यही रूप दीख पडता है और शहर में जाने पर फौरन वही विचार फिर से मन में आते हैं। और मैं अकसर जहा किसी शहर में प्रवेश करता हू वहां मुझे वैसा ही लगता है जैसा ज्ञानदेव ने कहा था। एक जंगल का जानवर था जिसे कोई पकडकर राज महल में ले गया। उसने राज महल

का सारा दृश्य देखा कि जिधर देखो उधर कई चीजे भरी पडी है और कई मनुष्य दौड धूप कर रहे है। तो वह बिचारा जगली जानवर एक कोने में जा बैठा और उस राज्य में उसको सारा सुनसान लगने लगा। वैसे ही जब कभी मैं शहर में पहुचता हू तो मुझे लगता है। फिर भी शहर की जनता से भी सपर्क रखने की इच्छा रहती है, शहरो मे से काफी काम हो सकता है, शक्ति भी शहरों में भरी पडी है उसका हमें उपयोग करना है। इसलिये शहर में आने की इच्छा होती है। लेकिन आने पर वही सवाल मन में उठते है।

अहम सवाल

उन सब सवालों मे सब से महत्व का सवाल जो मेरे मन म आता है वह यही कि शहर की तालीम का क्या करे। आज यहाँ आने पर हमारे मित्र का एक लडका हम से मिलने आया। वह कॉलेज में पढ रहा है। हम जानते है कॉलेजो का हाल। फिर भी उससे पूछ लिया। उसने कहा कि पिता का आग्रह है और पढने की उम्र है तो पढता तो हू, परीक्षा भी पास करता हू, गिनता होशियार लडकों मे है, लेकिन पढने मे कोई दिलचस्पी नहीं है। जरा भी रस नहीं आता। ऐसा लगता है कि व्यर्थ ही पढ रहा हू। बेकार सा शिक्षण मिल रहा है ऐसा आभास होता है। और अब तो बडी छुट्टी मिल गई है। याने २२ मार्च को परीक्षा खतम हो गई तब से छुट्टी शुरू हुई। जून के आखिर तक छुट्टी है। याने लगातार सवा तीन महीने की छुट्टी है। इन छुट्टियो म

क्या करना यह सवाल निकला? जब यह सब मै सुनता हू, और हर जगह यही सुनता हू, तो लगता है कि हम शिक्षण के बारे में अभी भी कुछ सोचते नहीं है। देश में जो उठता है वह यही कहता है कि इस समय देश में काम करने की, अधिक अन्न उपजाने की जरूरत है। सब तरह से हमारी कर्म की मात्रा मे वृद्धि की जरूरत है। किसान धूप के दिनो मे ही काम मे लगा रहता है। वर्षा के पहले जमीन की जो कुछ तैयारी करनी होती है वह इन दिनों ही करनी होती है। तब यहा कॉलेज के शिक्षकों को और विद्यार्थियो को तीन तीन महीने लगातार छुट्टी दी जाती है। इससे मन को लगता है कि क्या ये हाईस्कूल-कॉलेज आदि जो चलते है वे आसमान में चलते हैं या जमीन पर चलते हैं? और अगर जमीन पर चलते है तो किस जमीन पर चल रहे है? हिंदुस्तान से कोई ताल्लुक रखते हैं या नही? यह सवाल हमेशा उठता है। और जो अच्छे लडके होते है उनके मन मे यही चीज खटकती रहती है कि हम जो सीख रहे हैं उसका आखिर हमारे देश के साथ कोई संबंध है या नहीं? आज देशकी जो आवश्यकताएँ है वे हमारे नेता हमको बताते तो रहते हैं और हम सुना भी करते है। लेकिन यहा वही अपना गणित, वही अंग्रेजी जिसका कोई उपयोग देश के जीवन में अभी हम नहीं देख रहे हैं। तो क्या हमारा समय बरबाद नहीं हो रहा है? इस तरह हमारे अच्छे अच्छे लड़कों को जब वे कॉलेज में सीखा करते हैं तब बहुत मानसिक तकलीफ हुआ करती है। और ठीक

भी है। क्योंकि उनकी उम्र ऐसी है जब कि उनके मन में अनेक आकांक्षायें उठती हैं। अनेक कल्पनाये मनमे वे करते है, भविष्य के अनेक चित्र उनके मन के सामने उठ खड़े होते है। मै फलाने के जैसा बनूंगा, जीवन मे फलाना काम करूंगा, इतिहास की कई मिसालें उनके सामने होती हैं। उन मिसालो मे से एकाध मिसाल मेरी भी होगी ऐसी वे उम्मीद करते है। इस तरह मन में वे कई तरह के मोदक चखा करते है। उनका वह मानसिक विहार, उनकी वह तत्त्वदृष्टि, चाहे उसमे से कुछ भी फलित न होना हो, मै बहुत पवित्र मानता हूं।

मानव की विशेषता

इस तरह की मनोमय सृष्टि, ऐसी दिव्य कल्पना, आप चाहे इसे व्यर्थ कल्पना भी कह सकते है, जिसके जीवन में यह नहीं उठी उसमे और जानवर मे कोई फरक नहीं है। मनुष्य का सिर भगवान ने आसमान में पैदा किया उसके पांव ही पृथ्वी पर होते हैं। कोई मनुष्य अगर दो हाथों और दो पॉवों पर चलना शुरू कर दे तो हमको वह जानवर की मूर्ति दिखेगी। हम कहेंगे कि मानवता इसमें से मिट गई! मानव की विशेषता यह है कि पांव उसके चाहे सृष्टि पर रहें उसका सिर आसमान मे होना चाहिये। उसकी कल्पनाशक्ति जमीन के साथ नहीं होनी चाहिये। बल्कि वह निरंतर कुछ न कुछ विशाल कल्पनायें करता रहता है, दिल की उड़ान, ऊंचे विचार, और उस ध्येय के लिये जितनी भी कोशिश हो सके, मै करूंगा। ऐसा मनुष्य विचार करता है। इस तरह अगर हरेक मनुष्य नहीं।

करता है तो वह उसका कमनसीब है। जो विद्यार्थी कॉलेज आदि मे पढा करते है उनके मन में ऐसे विचार उठा करते हैं। उनमें से दस पांच विद्यार्थी ऐसे होते भी है कि जिनकी कल्पना सत्यसृष्टि में प्रकट होती है, आविर्भूत होती है।

विद्यार्थियों की सहजस्फूर्ति

जीवन का हमेशा ऐसा ही स्वरूप होता है। कोई भी चाज सबसे पहले मन में होती है। मनोमय संकल्प होता है। सकल्प से फिर आगे वाणी को प्रेरणा मिलती है। जो विचार मन में आता है वह मनुष्य बोलने लगता है, दूसरे से कहने लगता है। लोग पूछेंगे कि अरे भाई, तू मन में विचार करता है और वाणी से भी बोलता है लेकिन तू काम क्या करता है? तो वह जवाब देगा कि भाई, इसके बाद ही काम होनेवाला है। पहले मन मे संकल्प, उसके बाद वाक्स्फूर्ति, उसके बाद हाथ-पाव को प्रेरणा। यह सारी प्रेरणा की विधि है। इसी तरह से दुनिया में कार्य होता है। तो विद्यार्थियो के जीवन में भी कई संकल्प उठते हैं। वाणी भी उनकी चलती है। वे आपस में चर्चा किया करते है। बड़े बड़े नेताओं पर भी वे टीका करते हैं। वे जानते हैं कि हम कौन हैं और नेता कहां हैं? नेताओं की बुद्धि थोड़े ही हम में है? फिर भी वे निरपेक्ष विचार करते है। और जैसा मन में आता है वैसा बोल भी देते हैं। तो यह उनकी काव्यशक्ति है, यह उनकी सहजस्फूर्ति है, यह उनकी निरंकुश वृत्ति है। वह उनकी

सहज प्रतिभा है, यह उन्हे परमेश्वर की प्रेरणा होती है ऐसा ही मै कहूंगा। यह उनकी तरुणता की स्फूर्ति है। उस स्फूर्ति में वे कुछ दिन बिताते है और उसके बाद कुछ कृति का आरंभ करते हैं। कृति का सारा नकशा इसी तरह होता है। विद्यार्थियों का और दूसरो का भी नकशा यही है। तो ये सारे विद्यार्थी अपने मन में सोचा करते है कि हम जो सीख रहे हैं उसका परिस्थिति से कोई संबध नहीं है।

शिक्षण से अपेक्षा

खैर शिक्षण में तो दो चीजें देखनी होती है। एक तो यह कि जो भी शिक्षण दिया जायगा वह आज जनता के खर्च से दिया जाता है तो उसका *प्रत्यक्ष व्यवहार* में कुछ न कुछ उपयोग होना चाहिये। जो तालीम ले रहे है वे तालीम लेने के बाद ऐसे काबिल बनने चाहिये कि वे दुनिया की सेवा करने मे आगे बढ़ेगे। और जितना उन्होने पाया था उससे दस गुना वापिस दिया ऐसा कह सकेगे, यह हालत होनी चाहिये। जैसे कोई बीज खेत मे एक सेर बोया जाता है तो उसमें से पच्चीस सेर उपजता है। वैसे ही विद्यार्थियों के चित्त मे जो विचार बीज बोया गया है वह दस गुना बीस गुना बढ़ कर पैदा हो ऐसी उम्मीद की जाती है। शिक्षण में जो सिखाया जाता है उसका व्यवहार पर अनेक गुना परिणाम होना चाहिये। जितना खर्च किया होगा उससे बहुत अधिक फलित उसमें मे निकलना चाहिये। यह एक आशा रखी जायगी।

शिक्षण से दूसरी आशा यह रखी जायगी कि जिनको शिक्षण दिया जाता है उनको उनकी उम्र के लिये, उनके निजी विकास के लिये जो भी जरूरी खुराक है वह उससे मिलनी चाहिये। वह तो हम वर्तमान शिक्षण में देखते ही नहीं है। वहा तो सिर्फ स्मरणशक्ति का प्रयोग होता है, कुछ थोडा तर्क का उपयोग होता है। इसके सिवाय बुद्धि की दूसरी कोई शक्तिया है और उनका भी विकास करना होता है, उनके विकास के कई तरीके होते है. उसका भी एक शास्त्र बना हुआ है, उस शास्त्र का शिक्षण के साथ संबंध है। इन सब चीजो का आज की शिक्षा पद्धति मे कोई संबंध नहीं आता। वास्तव मे मन की जितनी शक्तिया हैं वे ऋषियों ने हमको समझायी है। और अनुभव से देखेंगे तो हमको भी मालूम होगा कि जितनी शक्तिया इस दुनिया में हैं वे सारी मन में होती हैं। "अनंतं हि मनः अनंता विश्वेदेवाः" विश्वदेव अनत हैं। उसकी एक एक मनोवृत्ति और मानसिक शक्ति का विश्लेषण करते है तो उसके कई गुणों का हमको आभास आता है। आत्मा सच्चिदानंद है और उसके सान्निध्य से मन में अनंत गुणों की छाया प्रतिबिंबित होती है। अनंत गुण मन में प्रकाशित होते है। हमने कई महापुरुष ऐसे देखे हैं कि उनके गुणों की अगर गिनती करें तो कोई पार नहीं आता। सैकडो गुणों का नाम लेना पडता है और कहना पडता है कि इस महापुरुष में इतने गुण थे।

शिक्षण की आरभ

इस तरह के गुणो के विकास के लिये बहुत अवकाश है। और मन मे ऐसी अनेक शक्तिया मौजूद है। लेकिन उन शक्तियो के विकास का कोई कार्यक्रम हमारे शिक्षण में है ही नहीं। हम लोगो को अनुभवी पुरुषो ने सिखाया कि मुख्य शिक्षण तो यही लेना है कि हम को अपने आप को अपने शरीर से भिन्न, अपने मन और बुद्धि से भी भिन्न पहचानना चाहिये। यह अपनी निज की पहचान सब गुणो का राजा है। यह पहचान जहा हुई जहा अपना अस्तित्व, सब इंद्रियो और बुद्धि, मन आदि से भिन्न अपने को महसूस हुआ वहा हमने ऐसा महान अनुभव हासिल किया कि जिसके द्वारा बाकी सारे गुणो का विकास हम कर सकते हैं। तो उसका तो हमारे शिक्षण मे कोई पता ही नही है। शरीर से अपन को भिन्न पहचानना, मानसिक विकारो मे अपने को भिन्न पहचानना, मन मे अगर कोई कल्पना आई तो उसको एकदम सा प्रकट न करना, उसका वहा विकास होने देना, उसकी वहा परीक्षा करना, कुछ धीरज रखना, उसका विश्लेषण करना, उसमे अगर ऐसा कोई दीखा कि जो काम का नहीं है तो उस अश को निकाल देना, और इस तरह अपनी मनोवृत्ति का विश्लेषण करके जो अच्छा अश उसमें से मिलेगा वही दुनिया के सामने रखना, यह सारा मानसिक विश्लेषण का और चित्त के विकास का एक महान कार्य है। यह कार्य अगर शिक्षण में नहीं होता है तो शिक्षण का

कोई अर्थ ही नहीं है। शिक्षण मे मुख्य वस्तु यह देखनी चाहिये कि जो वहा शिक्षण ले रहा है उसके गुणो का विकास किस तरह हो रहा है और वह अपने निज को अपनी परिस्थिति से और दहादिक साधनों से भिन्न पहचानता है या नहीं, उसका काबू उन सब पर है या नहीं । प्राचीन काल से उपनिषदों में हम देखते हैं कि ऐसा माना जाता था कि गुरु के पास जा कर अगर विद्यार्थी विद्या हासिल कर लेता है लेकिन व्रत मे संपन्न नहीं है तो विद्यास्नातक भले ही कहलाये लेकिन वह पूर्ण स्नातक नहीं हो सकता। उसको विद्यास्नातक होने के साथ साथ व्रतस्नातक भी होना चाहिये। अर्थात् कुछ व्रतों के पालन मे उसको कामयाब होना चाहिये। उसे अपने निज पर काबू पाना चाहिये। जिस घोड़े पर हम सवार है उस घोड़े को किस तरह चलाना, उस घोड़े के काबू मे न जाना बल्कि उसको अपने काबू में रखना, और उस घोड़े से अच्छी तरह काम किस तरह लेना यह सारी जो कला है, आत्मदमन की कला, आत्मनियमन की, आत्म के उपयोग की, वह कला सीखना यही शिक्षण का एक महत्त्व का उद्देश्य होना चाहिये। इसी को व्रतस्नातक कहते हैं।

व्रतस्नातक की वीर वृत्ति

ऐसे कई व्रत हैं जिनको हमे ठीक तरह समझ लेना चाहिये, जिनका पालन करने की शक्ति हमें हासिल कर लेनी चाहिये और उस कसौटी पर अपने को कस लेना चाहिये। इस तरह विद्यार्थी

जब कसा हुआ, तैयार होता है तब वह आगामी सेवा के लिये कार गर साबित होता है, उत्तम नागरिक बनता है। वह जहा दुनिया में प्रवेश करता है वहा वीरवृत्ति से, आत्म विश्वास से प्रवेश करता है। आज विद्यार्थी जब कॉलेज के बाहर पड़ता है तो उसकी आख के सामने अंधेरा होता है। किसी तरह कही प्रवेश पा लेता है। लेकिन वहा उसको जाना है वहीं वह जाना है और अपने मन की इच्छा के मुताबिक ही जाता है ऐसी बात नही होती। जहा वह फेंका है वहा वह जाता है। इस तरह सारा नसीब का खेल होता है। लेकिन जो विद्यार्थी उत्तम प्रकार मे ब्रतसपन्न हो गया और जिसने अपनी आत्मा का दमन कि उस पर विजय प्राप्त कीया और जिसका विकास अच्छा हुआ जिसने व्यवहारोपयोगी विद्या सपादन की एसा जो विद्यार्थी होगा वह जब दुनिया मे प्रवेश करेगा तब सिर झुका करके नहीं बल्कि सब के सामने छाती करके पूर्ण आत्म-विश्वास से चलेगा। और "नमयतीव गति· धरियीन" उसकी गति से यह धरती दब जायगी। ऐसे वीरावेश मे वह दुनिया मे प्रवेश करेगा।

विनय सपन्नता ज्ञान का परिणाम

इसका अर्थ यह नहीं है कि वह उद्धत बनेगा। उसमें नम्रता भी रहेगी। क्योंकि जो मनुष्य ज्ञान हासिल कर चुका वह यह महसूस करता है कि ज्ञान कितना अनत है और उसमें से मुझे कितना छोटा-सा हिस्सा मिला है। इसलिये सच्चा ज्ञानी और सच्ची विद्या पाया हुआ मनुष्य जितना विनयसंपन्न होगा उतना विनयसंपन्न वह

नहीं होगा जिसने विद्या नहीं पाई है। क्योंकि विद्या का दर्शन उसको नहीं हुआ है। जिसने विद्या के सागर का दर्शन किया उसके ध्यान मे आता है कि ज्ञान का न कोई पार है न अंत है और मुझे जो ज्ञान हासिल हुआ है वह एक अंशमात्र है। इसलिये सारी जिंदगी भर मुझे ज्ञान की खोज जारी रखनी चाहिये। मैंने जो विद्या पाई वह तो केवल आरंभमात्र है, सरस्वती के स्थानमें वह थोडासा प्रवेशमात्र है। इसलिये मुझे जिंदगी के आखिर तक अपनी विद्या बढाते ही जाना चाहिये। फिर भी दुनिया की विद्या इतनी अपार बची रहेगी कि मैं केवल एक अंश ही हासिल कर सकूंगा। इस चीज का उसको पूरा भान होगा इसलिये वह हमेशा नम्र रहेगा। इसीलिये हम लोगो ने विद्वान मनुष्य के लिये विनीत शब्द बनाया और "प्रजाना विनयाधानात्" प्रजा को विनयसंपन्न बनाना चाहिये ऐसा कहा गया है। याने शिक्षण के लिये विनय शब्द का प्रयोग हुआ। यो विनयसंपन्न तो वह होगा ही। अगर वैसा वह नहीं है तो वह विद्या प्राप्त ही नहीं है। इसलिये नम्रता का होना अत्यंत आवश्यक है।

धृति की आवश्यकता

लेकिन नम्रता के साथ साथ दृढनिश्चय, आत्मविश्वास, धैर्य, निर्भयता इत्यादि सब उसमे होगा। याने धृति उसमे होगी। बुद्धि के साथ धृति भी होनी चाहिये वह उसमे होगी और जहा वह ससार मे प्रवेश करेगा वहा जैसे कोई विजयी वीर प्रवेश करता है उस वृत्ति से

फिर जहां वह नागरिक बनना है वहा कई तरह के अभ्यास भी वह करता है।

अध्ययन की हमारी परंपरा

लेकिन आज हम देखते है कि अध्ययन का तो हमारे देश मे अभाव-सा हो गया है। यद्यपि यह देश प्राचीन है और यहा अध्ययन पुराने जमाने से निरतर चला आ रहा है, अध्ययन की एक अखड परपरा परसो तक यहा चल रही थी, और जिस जमाने मे बाकी दुनिया के सारे लोग घोर अंधकार में पड़े थे और विद्या से परिचित नही थे, उस जमाने मे यहा विद्या थी। और यहा के लोग बड़ी फजर उठते थे। "अनुब्रुवाण: अध्येति न स्वप्ने" बड़ी फजर मे सोते नहीं रहते थे, और अध्ययन करते थे। इस तरह से अध्ययन की परंपरा अतिप्राचीन काल से यहा चली आई है। फिर भी अब हम देख रहे हैं कि किसी न किसी विषय का अच्छा अध्ययन किया हुआ मनुष्य मुश्किल से यहा मिलता है।

हमारी समस्याओं का हल शिक्षा प्रणाली मे

हमने स्वराज्य हासिल कर लिया है। स्वराज्य मे कई तरह की जिम्मेवारिया हम पर आ पडी है। उन सारी जिम्मेवारियो को तभी अच्छी तरह निभा सकते हैं जब कि हरेक विद्या में, हरेक तरह की शाखा मे प्रवीण लोग हममे हो, और निरतर कुछ न कुछ अध्ययन करते रहे। तभी हमारे देश का काम भी आगे बढ़नेवाला है। लेकिन अध्ययन करनेवाले लोग मैं बहुत कम देखता हूं, उसका सारा

कारण इस शिक्षा पद्धति में है। क्योंकि वहा जब मनुष्य दाखिल होता है तो दस पांच साल सीखने के बाद उसका सारा रस शुष्क हो जाता है। उसकी प्राणशक्ति क्षीण होती है। और मानसिक शक्ति भी बढ़ती नहीं है। इंद्रियों की शक्ति क्षीण होती है। आप देखते है कि स्कूल में जाने के कारण आंख की शक्ति क्षीण हो गई शरीर शक्ति क्षीण हो गई, मानसिक शक्ति भी जीर्ण हो गई, बुद्धि की कई शक्तियों का विकास ही नहीं हुआ और सब से बड़ी बात यह कि प्राणहीनता आ गई है। आत्मा का भान नहीं, देह से हम भिन्न हैं इसका पता नहीं, अपने साधनों पर काबू नहीं तो क्या शिक्षण मिलता है?

हमारा प्राचीन वैभव

मैं जब यह वर्णन करता हू तो मुझे खुशी नहीं हो रही है। मुझे बहुत दुख होता है कि हमारे इस देश में इतनी सारी विद्या बढ़ी हुई थी वहां आज क्या है। रवींद्रनाथ ठाकुर ने कहा है कि "प्रथम सामरव तव तपोवने, प्रथम प्रचारित तव वन गहने, ज्ञान धर्म कत काव्य काहिनी, अयी भुवन मनमोहिनी"। ऐ भुवन के मन को मोहन करनेवाली माता, यहां सूर्योदय पहले हुआ था और यहा सामगायन पहले हुआ था, और यहां की विद्या की किरणें सारी दुनिया में फैली हुई थीं। ऐसा स्मरण जहां हम अपनी मातृभूमि के लिये करते हैं वहां जो कुछ चल रहा है उसका वर्णन करने में मुझे सुख नहीं होता है बल्कि अत्यंत दुःख होता है।

स्वराज्य के बाद शिक्षा पद्धति फौरन बदलनी चाहिये

स्वराज्य के बाद पुरानी शिक्षण पद्धति वैसी ही कैसे जारी है यह बात मेरी समझ मे नहीं आती। स्वराज्य आने के बाद जो चीजें पहले चलतीं थीं उनमें से बहुत सी बाद भी चलती रहेगी यह मैं जानता हूं। लेकिन शिक्षण भी चलता रहेगा यह मेरी कल्पना में भी नहीं था। मै यही मानता था कि जहां स्वराज्य आयेगा वहा शिक्षण फौरन बदल जायगा। शिक्षण अगर स्वराज्य आने के बाद भी नहीं बदलता है तो उस स्वराज्य का कोई मतलब ही नहीं होता है। इसका मतलब यह हुआ कि जिस शिक्षा प्रणाली को हम बरसो तक कोसते रहे और जिसने हमारा नुकसान किया ऐसा सब लोग बोलते है, और जो शिक्षा पद्धति हमे गुलामी में रखने के उद्देश्य से न भी हो लेकिन जिसका परिणाम यही निकला कि हम अच्छे गुलाम बने, इस तरह से तैयार की गई उस शिक्षा पद्धति को हम जारी रख सकते है, उसको सहन कर सकते है, इसका मतलब यही होता है कि हम इस विषय मे सोचते नहीं हैं। हमारे सामने दूसरी कई समस्यायें है। उन समस्याओ ने हमारा सारा दिमाग व्यस्त कर दिया है। और उन समस्याओ के हल में हम मशगूल हैं। हमको कुछ सूझता ही नहीं हैं। लेकिन मै कहता हूं कि जो हमारी कठिन समस्याऐं है वे भी तभी हल होंगी जब हमारी शिक्षा में हम फरक करेंगे।

तो आप नागरिकों से मै कहता हूं कि आप सब को एक आवाज से कहना चाहिये कि यह शिक्षा हमे नहीं चाहिये, इसमें जरूर परिवर्तन होना चाहिये। यही बात मै आप लोगो से कहना चाहता था।

सिकंदराबाद
५-४-५१

तीसवां दिन

: ३४ :

हैद्राबाद हिंदुस्तान की समस्याओं का प्रतिनिधि

आज पैदल यात्रा करते हुये करीब एक महीना हो रहा है। अभी मै आप के गांव आ पहुंचा हूं और कल परमेश्वर की कृपा से शिव--रामपल्ली जाना होगा। आप लोग जानते है कि वहा सर्वोदय समेलन हो रहा है। उसके लिये हम पैदल निकल पड़े। आप लोगों में से भी बहुत सारे वहां पहुंच जायेंगे और जो कुछ वहा पर प्रार्थना आदि में सुनने का अवसर मिलेगा उसमे शरीक होंगे ऐसी मैं उम्मीद करता हूं।

आज सुबह हम पाच बजे सिकदराबाद से निकले और यहा पैदल आये तो बीच में लोगों ने काफी प्रेम हम पर बरसाया। हम नहीं जानते कि उस प्रेम के लायक हम कब बनेंगे। उसके लिये। अभी तो हम इतना ही कर सकते हैं कि आप लोगों का शुक्रिया मानें।

हरिजनों के छात्रालय अलग न हो

लेकिन उस में एक घटना हुई जिसका मुझे कुछ रंज रहा। वह मैं आप लोगों के सामने रख देना चाहता हू। और वहीं से मुझे जो कुछ कहना है उसका आरंभ भी हो जाता है। हुआ यह कि

बीच में हम को रोक लिया गया और हम एक हरिजन छात्रालय में ले जाए गये। वहां पर कोई बीस पच्चीस हरिजन छात्र खड़े थे उनकी मुलाकात हुई। हम ने पूछा कि क्या यहां हरिजनों के अलावा और भी कोई दूसरे लड़के रहते हैं ? तो जवाब मिला कि नहीं सिर्फ हरिजन ही यहा रहते है। वह सुन कर मुझे अच्छा नहीं लगा। मैंने वहा भी बताया और वही बातें यहा रखना चाहता हूं कि इस तरह हरिजनो के अलग छात्रालय चलाना, यह कोई अस्पृश्यता निकालने का तरीका नही हो सकता, बल्कि वह तो अस्पृश्यता टिकाने का तरीका हो सकता है। जब पहले ये छात्रालय शुरू हुये तब इनकी जरूरत भी रही होगी उस हालत मे, उसकी बहस में मैं नहीं पड़ता। लेकिन आज जो स्थिति है उस स्थिति मे मेरा मानना है कि हरिजनों के अलग मे छात्रालय नहीं चलने चाहिये। बल्कि सब छात्रालयों में उनको जगह देनी चाहिये। उनकी तालीम के लिये जो भी सहूलियते दी जा सकती हैं वे जरूर दी जानी चाहिये। लेकिन किसी तरह से उनको अलग जाति के प्राणी समझ करके रखना उचित नहीं है। इन दिनों अगर यह तरीका हम अख्तियार करेंगे तो उससे हमारा मकसद नहीं हासिल होगा बल्कि उलटी दिशा मे हम जायेंगे ऐसा मुझे लगता है। मैंने तो सुना कि यह हालत इस एक ही छात्रालय की नहीं है बल्कि सारे राज्य में ऐसा ही कुछ चला है और इस तरह अलग अलग छात्रालय रखने से हरिजनों की सेवा होती है, ऐसा कुछ ख्याल है। यह मैं जरूर समझ सकता हूं कि जिन्होंने यह शुरू किया होगा उन्होंने हरिजन छात्रों

की सेवा के ही खयाल से ऐसा किया है, और छूत अछूतभाव मिटाने की उनकी मंशा भी है यह मैं मानता हूं। लेकिन बावजूद उनकी मंशा के और उनके सद्भाव के यह तरीका ऐसा नहीं है कि जिसमें हमारा सारा समाज एक रस बन जायगा।

केवल इन्सान बनें

हमको जो काम करना है वह यही करना है कि हिंदुस्तान का सारा समाज एक रस बन जाय। इतने बड़े समाज में भिन्न भिन्न विभाग हो ही सकते हैं, इस में कोई बात नहीं है। कई धंधे रहते हैं। उनके करनेवालों के मानसिक संस्कार अलग अलग होते हैं। यह सारी विविधता समाज में रहेगी। लेकिन विविधता के रहते हुए भी अंदर से एकता महसूस होनी चाहिये जिससे सारा-समाज एक रस प्रतीत हो। आज कल तो यहां तक हालत है कि राज्यों के चुनावों में जहां कोई जाति और धर्म का सवाल होना नहीं चाहिये वहां भी चुनाव में जब लोग खडे किये जाते है तब उनकी जाति और धर्म देखे जाते हैं। और जाति और धर्म का ख्याल करके चुनाव के लिये आदमियों को खडा करना पडता है। यह सारी दुर्दशा है। इसमें से हमें मुक्त होना है यह ध्यान में रहना चाहिये। और यह तभी बन सकता है जब हम हरेक हिंदुस्तानी को सिर्फ हिंदुस्तानी के नाते से देखेंगे। इतना ही नहीं बल्कि वह एक इन्सान है इस खयाल से देखेंगे तभी यहां का समाज एक रस होगा और हिंदुस्तान

के जरिये दुनियां मे जो बड़ा काम होनेवाला है उसकी पात्रता हमें हासिल होगी।

परमेश्वर की मंशा

जहां मैंने हिंदुस्तान के हाथ से होनेवाले बड़े काम का जिक्र किया वहां आप लोग सुनना चाहेंगे कि वह बड़ा काम कौनसा है। मैं कहता हूं कि हिंदुस्तान के लिये परमेश्वर ने एक बहुत ही भारी काम सौंप रखा है। अगर ऐसा उसका विचार नहीं होता तो हम जैसे टूटे फूटे लोगो को अहिंसा के तरीके से आगे बढ़ाना और उनको एक बड़ी भारी हुकूमत के पंजे से छुड़ाना और उनके हाथ मे हिंदुस्तान की सत्ता देना यह सारा नाटक परमेश्वरने किस लिये किया ? यह उसने इसलिये किया है कि उसकी मंशा है कि हिंदुस्तान के जरिये एक विचार जिस की सारी दुनिया को आज भूख है, फैले।

सर्वोदय से स्फूर्ति

आप लोगों को इतना तो मालूम है कि यहां हम लोगों ने गांधीजी का एक शब्द मृत्यु के पीछे ले लिया है। उनका वह शब्द है सर्वोदय। अब वह शब्द हिंदुस्तान भर में चल पड़ा है। हिंदुस्तान के बाहर के लोग भी उस समाज में दाखिल होना चाहते हैं। और यहां तक कहते हैं कि हमें कोई ऐसा चिह्न बताओ कि उसके रखने से हम सर्वोदय के सेवक के तौर पर जाहिर होंगे। हम अहिंसा के प्रेमी हैं इसका इजहार होगा। इस तरह हिंदुस्तान

के बाहर के लोग पूछते हैं। याने सारी दुनिया में एक छोटीसी जमात भी क्यों न हो ऐसी तैयार हो रही है जो कि अपने को एक ही कौम एक ही हुकूमत एक ही जमात मानती है और जो अहिंसा में ही दुनियां का भला और छुटकारा देखती है। यह जमात आज जरूर छोटी है। लेकिन आगे वह बढ़नेवाली है। इसलिये बढ़नेवाली है कि दिन ब दिन विज्ञान की प्रगति होनेवाली है।

विज्ञान चाहते हो या अहिंसा

जब कोई मुझे पूछते हैं कि क्या दुनियां में अहिंसा फैलेगी? अहिंसा के लिये दुनिया में मौका है? तो मैं कहता हूं कि अहिंसा के लिये ही दुनिया मे मौका है। और इसका सबूत ही यह है कि दुनिया पुराने जमाने की हालत मे रहना नहीं चाहती, बल्कि विज्ञान की प्रगति करना चाहती है। जहां विज्ञान की प्रगति होती है वहां सारी दुनिया, सारा समाज, एक बन जाता है। और ऐसी एक शक्ति हाथ में आती है कि जिसका जोड़ हम अहिंसा के साथ अगर न करें तो मनुष्य की हस्ती ही खतरे में आ जाती है। तो अब मनुष्य के सामने हिंसा को पसंद करना या अहिंसा को पसंद करना यह सवाल नहीं है। बल्कि आप विज्ञान को पसंद करते है या नहीं सवाल यह है। अगर आप विज्ञान को पसंद करते है तो आपको हिंसा छोड़नी ही होगी। और अगर आप हिंसा को पसंद करते हैं तो आपको विज्ञान को छोड़ना

होगा। दोनों एक साथ नहीं चलेंगे। अगर ये दोनों बढ़ते है तो दोनों मिल कर मानव जाति का खातमा करेंगे। इसलिये अगर हिंसा को चाहते हैं तो विज्ञान की प्रगति रोको, फिर हिंसा कुछ न कुछ चलेगी। और अगर विज्ञान की प्रगति को रोकना नहीं चाहते हो और बढ़ाना चाहते हो तो हिंसा को छोड़ो। याने हिंसा या अहिंसा यह सवाल नहीं है बल्कि विज्ञान चाहते हो या नहीं यह सवाल है।

विज्ञान अनिवार्य है

मैं तो विज्ञान को चाहता हूं, उसमें विश्वास रखता हूं। विज्ञान ने ही मानव का जीवन प्रेममय, परस्पर सहकार मय हो सकता है, ज्ञानमय बन सकता है, उसके विचार का लेव्हल भी ऊंचा हो सकता है। यह सारा विज्ञान से होता है। इसलिये विज्ञान की प्रगति को मैं रोकना नहीं चाहता बल्कि उसको बढ़ाना चाहता हूं। इसीलिये जानता हूं कि उसकी तरक्की के साथ हिंसा चलनेवाली नहीं है। तो हिंसा को छोड़ना ही होगा। ऐसा संकल्प विज्ञान को बढ़ाने के लिये अवश्य है। अगर ऐसा संकल्प मैं नहीं करता हूं तो विज्ञान का ही शत्रु बन जाता हूं। आज दुनियां सायन्स को छोड़ना नहीं चाहती इससे जो लाभ हैं वह जाहिर हैं।

विज्ञानवालों की राय

इसलिये सारे समाज में अभी एक ऐसा विचार फैला है, हिंदुस्तान में और हिंदुस्तान के बाहर, कि अगर मानवों के मसलों

को हल करने का कोई अहिंसक तरीका सूझे तो जरूर उसको खोजना चाहिये और हासिल कर लेना चाहिये। तो विज्ञान के लोगों को लगता है कि यह तरीका शायद गांधीजी ने जो प्रयोग हिंदुस्तान में किया उसमे से दुनियां को भी मिले। तो दुनियां इस आशा से हिंदुस्तान की तरफ देखती है।

हैद्राबाद हिंदुस्तान की प्रतिमा

और आज जब कि मै हैद्राबाद मे आया हू तो मुझे यह भी कहने की इच्छा होती है कि यह आपका छोटासा हैद्राबाद सारे हिंदुस्तान का एक नमूना है। क्योंकि हिंदुस्तान मे जितनी विविधताये है वे सारी यहां मौजूद हैं। यहीं हिंदू और मुसलमान काफी तादाद मे है, अनेक धर्मवाले भी यहां इकट्ठे हो गये हैं। यहां विविध भाषायें विकसित हो रही है। इसलिये यह छोटा सा राज्य और यह छोटा सा शहर हिंदुस्तान की एक प्रतिमा या हिंदुस्तान का एक छोटा सा रूप है। तो जो सवाल हम यहां हल करेगे उससे सारे हिंदुस्तान का सवाल हल करने की कुंजी मिल जायगी और सारी दुनिया के सवालों को भी हल करने की कुंजी मिलेगी। तो हैद्राबाद वालों की जिम्मेवारी समझाने के लिये मैने प्रास्ताविक तौर पर ये कुछ शब्द कहे हैं। आप लोगों को मै जागृत कर देना चाहता हू। आप यह मत समझिये कि हम एक छोटे शहर के रहने वाले है। बल्कि आप यह ध्यान में रखिये कि आप ऐसे शहर के नागरिक हैं कि जो सारे हिंदुस्तान का प्रतिनिधित्व करता है। यहां अगर आप एक अच्छाई या भलाई का

नमूना बता सकें जिससे कि यहां की समस्यायें हल हुई तो आप समझ लीजिये कि वह सारे हिंदुस्तान की एक बड़ी भारी खिदमत जैसे होगी। यह एक उत्तम मौका आप लोगो को मिला है। यहाँ आप की हुकूमत कायम हुई है।

पुराने अनुभव का लाभ

कुछ लोगों ने कहा कि यहा के कार्यकर्ताओ में अनुभव की कमी है। तो मैंने कहा कि भाई मैं तो उलटा मानता हूं। याने हिंदुस्तान में कॉंग्रेस ने साठ साल तक अनुभव लिया वह तो यहा के लोगों को मुफ्त में मिला है। और उसके साथ साथ जो उन्होने अपना अनुभव हासिल किया होगा वह और। इस तरह से यहां के लोगों को ज्यादा अनुभव है ऐसा समझना चाहिये। जो लड़का एक विद्वान पिता के घर में पैदा होता है उसको पिता की विद्या तो पहले से ही प्राप्त होती है और उसके साथ साथ वह अपनी विद्या भी बढ़ाता है तो वह पिता से भी बढ़कर विद्वान होता है। यही हालत हैद्राबाद की है। हैद्राबाद वाले हिंदुस्तान को राह दिखा सकते हैं।

हैद्राबाद की विशेषताऐं

हैद्राबाद राज्य में मैं अभी पैदल चलता हुआ आया तो रास्ते में ऐसे कई गाँव मिले कि जिनको छोड़ने की इच्छा नहीं होती थी। तो यहां की मानवता किसी भी दूसरी जगह की मानवता से कम नहीं थी और यहां प्रेमभाव भरा हुआ मैंने पाया।

अब वह एक ऐसा वातावरण था, वह एक ऐसी हवा थी कि जहां अगर सेवकगण रह जायं तो एक स्वावलंबी स्वराज्य जैसी वस्तु हम दिखा सकते है। आपका यह मुल्क पिछड़ा हुआ है ऐसा कहते है। अच्छी सड़के यहां नहीं है ऐसा कहते है, बात तो ठीक है। लेकिन यह जो पिछड़ी हुई बात है उसी का अगर हम लाभ उठायें तो आगे बढ़ सकते है। क्योंकि जहां ये सड़के वगैरह आती है वहां दूसरी सहूलियतें तो हो जाती है पर उसके साथ साथ दुनियां की कई बुराइयां भी वहां आ पहुंचती है। तो वह बुराइयां अभी तक कई गॉवो मे नहीं पहुंची हैं। ऐसे गॉवो मे अगर हमारे कार्यकर्ता रह जायं और उस उस गॉव के लिये सोचने लगें तो एक एक गांव में एक एक रामराज्य स्थापित कर सकते है। यह स्थिति कई हिस्से मे मैने देखी।

फिर मैने सोचा यहा अनेक जमाते इकट्ठी होती है और अनेक भाषाये इकट्ठी होती हैं। तो ये लोग जरा अगर कोशिश करेगे तो सारे हिंदुस्तान के अगुआ बन सकते है। और ऐसी कोशिश यहां क्यो नहीं होगी? अगर यह ठीक तरह से अनुभव होगा और ध्यान मे आ जाय कि हम इस तरह अगर करते है तथा सारे हिंदुस्तान को एक उत्तम मार्ग बताते है और यहां बैठे बैठे हिंदुस्तान की सेवा करते है, तो यहां के छोटे छोटे कार्यकर्ता अपने को छोटे नहीं मानेंगे बल्कि महसूस करेंगे कि हम तो परमेश्वर का कार्य करनेवाले उसके भक्तगण हैं। फिर वे अपने सारे भेद भूल

जायेंगे। और जनता की सेवा में लग जायेंगे। तो उससे उनके चित्त का समाधान होगा, हैद्राबाद राज्य को लाभ होगा और उसके साथ साथ सारे देश को लाभ होगा।

सब भाषाओं के लिये एक लिपि बनाइये

देखिये यहां पर कितनी भाषायें हैं। मराठी भाषा है, कन्नड़ है, तेलगु है, उर्दू है, हिंदी है, ये पांच भाषाये यहां चलती है। अगर आप एक दूसरे की भाषा सीखने की जरा कोशिश करें और उसके लिये लिपि एक बना दे तो आप देखेंगे कि हिंदुस्तान का मसला आप हल कर सकते हैं। नागरी लिपि में उर्दू लिखी जाय। हिंदी और मराठी नागरी में लिखी ही जाती है। कन्नड और तेलुगु भी नागरी में लिखी जाय। यह अगर आप आरंभ करें तो हिंदुस्तान का एक बड़ा भारी मसला हल हो जाता है। हिदुस्तान मे जो दूसरी जबाने हैं वे एक दूसरी से बहुत अलग नहीं है। लेकिन उनकी लिपियां अलग हैं। और ये दीवाल की तरह खड़ी होती है और भाषाओं का अध्ययन करने की हिम्मत नहीं होती है। मैं तो हिंदुस्तान की बहुत सारी लिपियां सीख चुका और भाषाएं भी सीख चुका। तो अपने अनुभव से मैं कहता हूं कि एक एक भाषा सीखने में मुझे बहुत तकलीफ हुई है। आप को तकलीफ हुई है। तो अगर आप नागरी लिपि मे ये सारी जबानें लिखते हैं और कुछ किताबें भी तैयार करते हैं और आप की स्टेट अगर इस का जिम्मा उठाती है या कोई परोपकारी मंडली ऐसी पुस्तकें

के प्रकाशन का जिम्मा उठाती है, तो समझ लीजिये कि एक लिपि का एक बड़ा भारी विचार आप हिंदुस्तान को देते है।

इससे यह होगा कि उर्दू अगर नागरी में लिखी जाने लगी तो हिंदी पर उर्दू का बहुत असर होगा और हिंदी ठीक रास्ते पर रहेगी। मेरे कहने का यह मतलब नहीं है कि कन्नड या उर्दू या तेलुगु लिपि न चले, इन लिपियो में भी खूबियां है। इसलिये ये भी चलें। लेकिन इनके साथ साथ अगर ये सारी भाषाअे नागरी में लिखी जानी है तो अच्छी हिंदुस्तानी कैसी हो सकती है इसका नमूना आपने पेश कर ही दिया। सारे हिंदुस्तान को एक कौमी जबान चाहिये यह सब लोग मानते है। लेकिन उस कौमी जबान का रूप क्या होना चाहिये इस विषय मे काफी बहस हुआ करती है। यह सारी बहस खतम हो जायगी और यहां आप ऐसी खूबसूरत हिंदुस्तानी सारे राष्ट्र के लिये देगे कि जिसको बाकी के सारे लोग सहज ही उठा लेगे। यहां उर्दू तो पहले से ही चलती है और उसकी काफी प्रगति भी हुई है। वही उर्दू अगर थोड़ी आसान करके नागरी लिपि में लिखी जाय तो राष्ट्रभाषा के लिये बड़ा भारी कारण आप देंगे और हिंदुस्तान का मसला हल कर सकेंगे।

ऐसा आप करेंगे तो यहां की जमातें एक दूसरे की भाषा प्रेमभाव से जल्दी सीख लेगी। यह तो सहज मैंने आप के सामन विचार रख दिया। इस पर से आप के ध्यान में आ जायगा कि

हिंदुस्तान के मसले आप किस तरह आसानी से हल कर सकते हैं।

खादी के लिये अच्छा क्षेत्र

आप देखेंगे कि इस हैद्राबाद राज्य में खादी के लिये जितनी सहूलियतें हैं, जनता में उसके लिये जो शक्यताऐं है, उतनी हिंदुस्तान के दूसरे हिस्से में नहीं है। तो अगर आप रचनात्मक काम करनेवाले इस काम में लग जायं और हरेक को कातना धुनना सिखा दे तो जो परंपरा यहां मौजूद है उसका पूरा लाभ मिलेगा और आप देखेगे कि यहां खादी पनपेगी, यहां ग्रामोद्योग पनपेगे।

अस्पृश्यता यहां कम है

आप यह भी देखेंगे कि यहां की जनता मे छूत-अछूत का भाव इतना नहीं है जितना हिंदुस्तान की दूसरी जगहो मे है। उसके कई कारण है। मुख्य कारण तो यही है कि यहां की अनेक जमातें और कौमें, किसी भी कारण से कहिये लेकिन एक दूसरे से मिलती जुलती रही हैं। नतीजा उसका यह हुआ कि जो कठोरता व्यवहार में दूसरी जगह दीख पड़ती है जमातो के बीच, वह कट्टरपन और कटोरता यहां इतनी नहीं है। तो यहां छूत अछूत का सवाल भी आप बहुत शीघ्रता से मिटा सकते है। मैंने आप के देहातों में कई जगह पूछा कि हरिजनों के बारे में क्या स्थिति है तो लोग यही कहते हैं कि हां हरिजन हमारे ही हैं। उनके लिये अलग स्कूल चाहिये ऐसा कहीं भी नहीं सुना। यह हालत

हिंदुस्तान के दूसरे भागों मे नहीं है। तो यह सारा लाभ आप को मिल सकता है।

सर्वोदय की ज्योति प्रकटाने का अच्छा मौका

मेरा कहना यह है कि आप लोग अपना दिल बड़ा बनाइये। आप समझिये कि आप को एक बड़ा भारी मौका मिला है। जब तक यह हैद्राबाद स्टेट आज के जैसा कायम है तब तक आप को यह एक मौका मिला है। हा मै यह नहीं सुझाना चाहता कि यहां के भाषा वार विभाग उन उन भाषावाले प्रांत में न मिलें। यह सब मैं कहना नहीं चाहता। वह तो जैसा आप चाहेंगे वैसा कर सकते हैं। लेकिन जब तक यह स्टेट एक है तब तक एक बड़ी भारी चीज करने का आप को मौका मिला है इसका लाभ उठाइये। और यहां की सारी कौमे मिल कर सारी एक जमात है सब भाई भाई है यह आप सिद्ध करके बताइये यह आप लोगों मे मेरी अर्ज है। तो कहा जायगा कि शिवरामपल्ली में जो सर्वोदय संमेलन हुआ वह सार्थक हुआ और सर्वोदय की ज्योति सारी दुनियां के सामने हैद्राबाद ने प्रकट की।

(द० हैद्राबाद)

६-४-५१

इकतीसवाँ दिन—

: ३५ :

ग्राम संजीवनी

[आज शाम को छः बजे सर्वोदय संमेलन की ओर से जो प्रदर्शनी रखी गई उसका उद्घाटन पू. विनोबाजी के द्वारा हुआ। उद्घाटन का भाषण और प्रार्थना प्रवचन एक साथ ही हुए।]

मेरी तेलगु का उपयोग

मेरे अत्यंत प्रिय भाइयो और बहनो,

पैदल यात्रा का यह मेरा आखिर का दिन है। हैद्राबाद मे यहां तक का एक छोटासा पांच मील का प्रवास आज हुआ। रास्ते में परमेश्वर की कृपा से सब तरह से कुशल रहा और बहुत ही लुभावने अनुभव आये। देहात के लोगों में उत्साह देखा। शहरों में भी उत्साह कम नहीं था। लेकिन देहात मे एक विशेष ही भावना देखी जिससे हमारा वहां पहुंचना कितना जरूरी था और है इसका प्रत्यक्ष अनुभव आया। रोज हम वैसे ज्यादा तो नहीं चलते थे, लेकिन कोशिश यह होती थी कि छोटे छोटे गांव में मुकाम करें। कई छोटे गांव देखने में आये। जहां बन सका वहां गांव के घरों में भी घूम आया। और यद्यपि मैं तेलगु तो जानता

हूं तथापि तेलुगु मे बात तो नहीं कर सकता। फिर भी जितना कुछ ज्ञान था उसका प्रेमभाव बढाने में बहुत उपयोग हुआ। मैंने इन भाषाओं का अभ्यास प्रेमभाव के विकास की दृष्टि से शुरू किया था। प्रार्थना में मैं स्थितप्रज्ञ के लक्षण तेलगु में बोलता था। मैंने देखा कि वे लक्षण उनके हृदय तक सीधे पहुच जाते थे। और उनको महसूस होता था कि, अपना ही एक भाई बोल रहा है। बहुत प्रेम से लोगों ने हमारा स्वागत किया।

गांवों में कताई का काम

गांवों की जो हालत हम ने देखी वह जैसी हम कल्पना करते थे वैसी ही थी; इतना ही नहीं बल्कि उससे भी बदतर थी। इतनी कल्पना हम घर बैठे नहीं कर सकते थे। सिवाय खेती के, जो एक ही धंधा उनके हाथ में रहा है, और कोई धंधा कई देहातों में नहीं देखा। कुछ देहात ऐसे जरूर थे कि जहां दूसरे दो-चार धंधे चलते थे। लेकिन कुछ ऐसे भी देहात देखे जहां वे भी छोटे छोटे धंधे मौजूद नहीं हैं। कुछ स्त्रियां कातती थीं, कुछ पुरुष भी कातनेवाले देखे। और अपने सूत का कपड़ा पहननेवाले भी कुछ देखे। इस पर से यह जाहिर है कि यह एक धंधा ऐसा था, और है, जो हर हालत में देहात मे चल सकता है। लेकिन अभी इस मुल्क में आमद रफ्त के साधन बहुत नहीं हैं और सड़कें बन रही हैं। लेकिन जैसे जैसे ये साधन बढ़ेंगे, बाहर का माल गांवों में जोरों से आयेगा। आज भी काफी तादाद में आता है, और यह थोड़ा

सा बचा हुआ काम है वह भी नष्ट हो सकता है। यह सारा दृश्य हमने देखा।

हरेक के नाम पर एक देहात चाहिये

कई देहात ऐसे मिले कि अगर हमें यहां शिवरामपल्ली में आने की आवश्यकता न होती तो वहीं चंद रोज रह जाने की इच्छा थी। क्योंकि एक जगह देखना, वहां की कमियां महसूस करना, उनका हल हम कर सकते हैं ऐसा विश्वास करना और फिर भी उस स्थान को छोड करके आगे बढना, यह अच्छा नहीं लगता था। फिर भी वह करना पडा। जहां जहां हो सका वहां लोगों में स्थानिक ही काम करनेवाले निकलें ऐसी कोशिश भी की। अनुभव का सार यही है कि हम जो अकसर शहरों में काम करते हैं और शहरों से संबंध रखते हैं वे अपना शहर का संबंध कायम रख कर भी अगर निवासस्थान अपना देहात करें और हममें से हरेक के नाम पर अगर एक देहात रहा तो बहुत भारी काम होगा।

गांवों की पुकार

बहुत बार सोचता हूं तो लगता है कि यह क्यों नहीं हो सकता कि जो भी काम हम करते हैं, फिर चाहे कोई कॉंग्रेस कमेटी का ऑफिस ही चलाता हो, तो वह किसी देहात में क्यों न खोले? जहां पोस्ट ऑफिस आदि की कुछ सुविधा हो ऐसे देहात में वह बैठ सकता है। और अगर हममें से कोई शहर के नजदीक ही रहना चाहते हैं तो वे शहर के नजदीक का गांव लेकर बैठ सकते

हैं। वहां निवास करने से ही कुछ न कुछ संबंध आयेगा। और देहात मे जाना चाहिये यह जो पुकार उठाई थी उसको कुछ अंश में हम पूरी कर सकते हैं। देहात के लोग बहुत आशा रखते हैं कि गांधीजी के पीछे उनके सेवकगण कुछ न कुछ काम करेंगे, उनकी सेवा में लग जायेंगे। दूसरे बहुत सारे लोग कुछ सेवा करते भी हैं, फिर भी वह नाम मात्र की होती है, स्फूर्तिदायी नहीं होती, और निष्काम तो होती ही नहीं है। इस वक्त आवश्यकता है निष्काम सेवा की। याने ऐसी सेवा की, कि जिसके पीछे कोई दूसरा उद्देश्य न हो सिवाय इसके कि जिनकी हम सेवा करते है उनकी सेवा करके उनको हिंमत देना, मदद पहुंचाना। आज कल जो सेवा की जाती है वह अपने मनोवांछित कार्य के खयाल से ही की जाती है, और वह भी बहुत कम। देहात के पीछे देहात देखे गये जहां बहुत लोग पहुंचे भी नहीं हैं। वहां अगर कोई सभा हुई तो इलेक्शन की हुई, और कोई सभा नहीं हुई। जहां ज्ञान का प्रचार केवल शून्य है, जहा किसी तरह की रोशनी नहीं पहुंची है, जहां स्कूल भी नहीं है, जहां बच्चों के विकास का कोई विचार नहीं है ऐसे अनेक गांव देखे। हमको वे सारे गांव के लोग बुला रहे है और कह रहे हैं कि भाइयो, स्वराज्य मिल गया है। जिनके नाम से और जिनके काम के लिये आपने स्वराज्य हासिल किया उनकी सेवा के लिये फुरसत पाइये और आइयें। ऐसी पुकार हो रही है।

खादी पर श्रद्धा बढ़ी

खास करके इस हैद्राबाद स्टेट मे जो देखा उसने खादी के प्रति मेरी श्रद्धा और भी दृढ़ बनाई। और बहुत लोगों का यह जो ख्याल होता था कि यद्यपि खादी की आवश्यकता आज भी कम तो नहीं है फिर भी कोई दूसरे पहलुओं पर जोर देना आज शायद अधिक जरूरी हो गया है और खादी का काम संभव है आगे न भी चले, यह ख्याल मैंने गलत पाया। वहां लोगों को पूछा, जो साथ आये थे उनसे भी पूछा, कि क्या इन देहातों को सिवाय खद्दर के कोई ऐसा जरिया है जिससे उनको कोई राहत पहुंचा सकते हैं, इमदाद दे सकते हैं, ढाढस बंधा सकते हैं ? मैंने तो कोई जरिया नहीं पाया। जाहिर बात है कि जो चीज हर मनुष्य इस्तेमाल करता है और चौबीस घंटे इस्तेमाल करता है, और चाहे फाका भी कर ले लेकिन बिना कपड़े के नहीं चला सकता क्योंकि वह सभ्यता की निशानी समझी गयी है ऐसी जो चीज और जिसका कच्चा माल गांवों में पड़ा है वह धंधा गांव का रिझर्व धंधा होना चाहिये। वह वहां से छीना गया है और दूसरे भी कई धंधे जिनके लिये कच्चा माल गांवों में पड़ा है, उनके हाथ से छीन लिये गये हैं और छीने जा रहे हैं। उस हालत में सिवा ग्रामोद्योगों के और उसमें भी सिवा खादी के और कौन सा उद्योग हम उनको दे सकते हैं, कौन सा ऐसा जरिया है जिससे उनको राहत पहुंचा सकते हैं। इस पर बहुत सोचा। लेकिन गांवों को मदद करने का इससे विशेष

उत्तम साधन नहीं देखा। हां, सफाई का काम है। मनुष्य का मैला व्यर्थ जा रहा है उसका उपयोग करने की योजना बना सकते हैं, और भी कुछ काम कर सकते हैं। लेकिन उन सब कामों को करते हुए भी उनको खादी के काम से जितनी राहत हम पहुंचा सकते हैं उतनी और किसी काम से नहीं पहुंचा सकते। यह बात बिलकुल स्वयंसिद्ध सी मुझे लगी और मैं मानता हूं कि हम में से जो भी गांवों में पहुंचेगा उसको वैसी ही लगेगी।

खादी के बगैर चारा नहीं

लेकिन केवल इस दर्शन से काम होने वाला नहीं है। अपने मन में यह संकल्प कर लीजिये कि यह जो खादी का मंत्र है वह हम हिंदुस्तान के हरेक किसान के पास पहुंचायेंगे और इस विषय में हार नहीं खायेंगे। ऐसी शंका नहीं करेंगे कि दूसरे बहुत सारे काम पड़े हैं तो इसका ही आग्रह क्यों। अगर ऐसी शंका होती है तो इन गांवों का दर्शन करें और दुबारा सोच करके अपना निर्णय करें। मैं मानता हूं कि इसके सिवाय कोई साधन मिलनेवाला नहीं है। मैंने सोशलिस्टों से भी बात की है जब कभी वे मुझे मिले, दूसरे जवानों से भी बात की। और पूछ लिया कि जमीन की तकसीम, जो कि जरूर करनी चाहिये, कर लें तिस पर भी क्या आप समझते हैं कि इन किसानों की हालत उतने से सुधर जायगी और उतने से उनको सालभर का काम मिल जायगा और उसमें से उनकी जीवन की जरूरियातें पूरी हो सकेंगी! क्या

आप यह समझते हैं कि खद्दर आदि के बगैर कोई यांत्रिक योजना दस पांच साल मे ऐसी हो सकेगी जिससे लाखों करोड़ों को काम दिया जा सकेगा ? तो उसका उत्तर उनको नहीं में देना पड़ता है। उनको मानना पड़ता है कि और कोई मदद हम नहीं देखते हैं, लेकिन वे कहते हैं कि इसका अर्थ यह होता है कि सरकार को हम अपने हाथ में लें और अपना समाजवाद का और दूसरा प्रोग्राम चलायें। तो हिंदुस्तान की अभी की हालत को देखते हुए जो प्रत्यक्ष काम हम कर सकते हैं उसे करने से वे इन्कार करते हैं और दस पंद्रह साल के बाद कुछ बात होगी उसकी आशा में अपना जीवन निष्क्रिय बनानें जैसी बात हो जाती है।

दूसरी योजना भी बनायें

इसलिये आप सब लोगों से मेरी प्रार्थना है कि गांधीजी ने जो खद्दर का मंत्र हमें दिया है वह अभी की परिस्थिति में कमजोर नहीं हुआ है बल्कि बलवान हुआ है। पहले जब कि मिलें १७ गज कपड़ा पैदा करती थीं वह तब आज १२ गज पैदा करेंगी। और जाहिर कर रही हैं कि इस साल आधा गज और पैदावार कम होगी क्योंकि काफी हड़तालें हो चुकी हैं। तो मिलों पर आधार रखने के लिये कोई संबंध नहीं है। और गांधीजी के जाने के बाद कोई ऐसी दूसरी परिस्थिति पैदा नहीं हुई है जिससे खादी को अलग करके भी हम अपनी समस्या हल कर सकें। अगर किसी के मन में कोई योजना है, और बिना खद्दर के हमारा काम

निभ जायगा ऐसा किसी को लगा है तो मैं उसके साथ चर्चा करना चाहूंगा और कोई दलीलें उसके पास है, कोई सबूत हैं तो मैं जानना चाहूंगा। लेकिन ऐसा अगर सबूत मिलता नहीं है तो हम सब लोग खादी के काम में अपनी निष्ठा ताजी करें, दृढ़ करें और खादी का शास्त्र जितना परिपूर्ण बना सकते हैं उतना बनाने मे अपना सहयोग दें। इतना कह कर मै जाहीर करता हूं कि यह प्रदर्शन अब खुल गया है।

शिवरामपल्ली (है०)
७।४।५१

पैदल-यात्रा का इतिवृत्त

विनोबाजीने ८ तारीख को सुबह प्रार्थना करके ठीक ४।।। बजे परंधाम आश्रम से बिदा ली और हैद्राबाद के सर्वोदय समेलन मे शामिल होने के लिये पैदल-यात्रा शुरू की।

परंधाम आश्रम से विनोबाजी, महादेवीताई, मदालसाबाई, और दामोदरदास मूंदड़ा तथा गोपुरी से भाऊ पानसे, दत्तोबा और पांडुरंग गाडीवाला; इस तरह कुल सात लोगो की टुकड़ी रवाना हुई। बैलगाडी में टुकड़ी का सारा सामान रख लिया। यह गाड़ी हैद्राबाद तक साथ रही। आगे चल कर व्यवस्था आदि करने के लिये दो सायकलें भी साथ थीं।

वर्धा के श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर में विनोबाजी ठीक ६ बजे पहुंचे। नारायण भगवान का दर्शन करना और वर्धा निवासियो तथा वर्धा की संस्थावालो से बिदा लेना यह छोटा-सा कार्यक्रम रखा गया था। विनोबाजी मूर्ति के सामने खड़े हो गये और ऊंचे स्वर से श्री शंकराचार्य का " अच्युत केशवं रामनारायणं " यह विष्णुस्तोत्र गाने लगे। अंत में गद्‌गद्‌ हो कर भगवान को नमन किया और आशीर्वाद के लिये मनोमय प्रार्थना की। यह दृश्य देखकर कइयों को वह दिन याद आया जब श्री जमनालालजी ने यह मंदिर हरिजन आदि सब के दर्शन के लिये खोल दिया था। विनोबाजी उस दिन

भगवान विष्णु के चरणोंपर दृष्टि लगाये भावावस्था में लीन हो गये और उनकी आंखों से प्रेमाश्रु की अजस्र धार बहने लगी। निर्गुण-सगुण एक हो गये। आधा घंटा ठहर कर विनोबाजी ने अपनी यात्रा शुरू की।

तारीख ८ से २३ तक की उनकी यात्रा का वृत्त नीचे दिया गया है।

यात्रा का दिन	तारीख	मुकाम का गाँव	जिला	कितने मील चले
(१)	८ मार्च	वायगाँव	वर्धा	१३
(२)	९	रालेगाँव	यवतमाल	१७
(३)	१०	मखी-कृष्णपुर	,,	१४
(४)	११	रुझा	,,	१०
(५)	१२	पांढरकवडा	,,	१२
(६)	१३	पाटण बोरी	,,	११
(७)	१४	आदिलाबाद	निजामस्टेट, आदिलाबाद	१६
*(८)	१५	कौसल्यापुर	आदिलाबाद	१३
*(९)	१६	मांडवी	,,	११
*(१०)	१७	तलमडगु	,,	१५
(११)	१८	गुडीहतनूर	,,	११
(१२)	१९	इच्छोडा	,,	८
(१३)	२०	निरडगोंडी	,,	११

(१४)	२१	गोपाल पेठ	आदिलाबाद	१३
(१५)	२२	निर्मल	,,	५
(१६)	२३	सुवर्णपुर	,,	८

'चिन्हांकित गाँव हैद्राबाद के रास्ते पर नहीं थे। लेकिन मांडवी के कस्तूरबा ग्राम सेविका केंद्रवालों के आग्रह के कारण करीब ४२ मील का प्रवास अधिक हो गया।

विशेष बातें

वायगाँव के पहले मुकाम पर ही विनोबाजी ने गाँववालों से बात छेडी कि मजदूरों को हर रोज की मजदूरी में पैसे के अलावा कुछ अनाज निश्चित प्रमाण में देना चाहिये। साल्दारों को ऐसा दिया जाता है। कुछ चर्चा के बाद गाँववालों ने विनोबाजी की बात मान ली। विनोबाजी ने दस छटाक ज्वार का प्रमाण स्त्री-पुरुष सब मजदूरों को एकसा ही रखने का सुझाव रखा। ऊपर से जो पैसे देंगे उसमें कमी बेशी कर सकते हैं लेकिन ज्वार हमेशा के लिये दस छटाक देनी चाहिये। गाँववालों ने ज्वार देने का प्रस्ताव किया और शाम की प्रार्थना के बाद लोगों को वह सुनाया भी गया।

रालेगाँव पहुंचने के पहले पोटी गाँव में हम लोगों ने वर्धा नदी पार की, और साथ ही वर्धा जिला। नदी में पानी बहुत ही कम था। रालेगाँव से हम यवतमाल जिले में दाखिल हो गये।

रालेगाँव में विनोबाजी ने यही बात दोहराई। वहां तीन

लोगों ने दस्तखत कर के वचन दिया कि वे मजदूरी में दस छटाक ज्वार देंगे।

सखी-कृष्णपुर जगल मे बसे हुये गाँव हैं। सखी और कृष्णपुर अड़ोस-पडोस में हैं। विनोबाजी का मुकाम सखी गाँव मे रखा गया था। इस जगह पर पहुँचते समय जंगल में रास्ता भूलने के कारण कुछ घूम कर हम लोग पहुंचे। चार साढ़े चार मील तक बीच मे कोई आदमी भी नहीं मिलता था। पथरीला और ऊंचा नीचा रास्ता था। लेकिन जब गाँव में पहुचे तो श्रमपरिहार हो गया। बीस-पचीस घास के झोंपड़े थे। लेकिन आम्र-वृक्षों की घनी छाया के नीचे तंबू में हमारा पडाव रहा इसलिये चित्त प्रसन्न हो गया। गांव के लोगों ने बडे प्रेम से खिलाया-पिलाया।

शाम की प्रार्थना में बहनें अधिक से अधिक आयें इस दृष्टि से मदालसाबाई हर घर मे गई और बहनों को प्रार्थना सभा में ले आई। आसपास के गावों से भी काफी लोग गाड़ियाँ ले कर पहुच गये थे। इतना छोटा और जगल के बस्ती का गांव होते हुए भी यहां की सभा अच्छी हुई। बहनें कुछ देर से पहुंची। इसलिये उनके लिये विनोबाजी ने ५-१० मिनिट खास दिये।

मेटी खेडा के श्री आनंदराव सरोदे नाम के भाई सभा मे आये थे। परंधाम के कांचनमुक्ति के प्रयोग के बारे में उन्होंने सवाल पूछा। बाद में विनोबाजी से उनका निकट परिचय भी हुआ। विनोबाजी ने इनका नाम सर्वोदय ही रख दिया। ये भाई आगे रुंझा में भी मिले।

'दैनिक प्रार्थना' की दो पैसेवाली किताबे लोग बहुत खरीदते हैं। विनोबाजी का साहित्य भी साथ रखा गया है। हर मुकाम पर प्रार्थना के पहले और बाद में साहित्य की बिक्री होती है।

वर्धा से वायगांव पक्का रास्ता था। वायगांव से आगे रुंझा के पास मोहदा गांव तक कच्चे रास्ते से ही मुसाफिरी हुई। मोहदा से आगे पांढरकवडे तक पक्की सड़क थी। पांढरकवड़े से फिर कच्चा रास्ता लिया। यवतमाल जिला पैनगंगा के किनारे पर समाप्त हो जाता है। पाटणबोरी से तीन मील की दूरी पर पैनगंगा मिली। इस नदी में भी पानी बहुत कम था। नदी पार करने पर निजाम-स्टेट शुरू हो गई। कामई नाम के गांव से फिर पक्की सड़क मिली जो आदिलाबाद और उसके बाद हैद्राबाद तक है।

पांढरकवड़ा गाँव न देहात और न शहर ऐसा अधूरा सा ही है। यहां की प्रार्थना में बच्चों ने असंस्कारिता का ही परिचय दिया। अशांति खूब रही। आपस में मारना-धकेलना भी चलता रहा। विनोबाजी का करीब आधा घंटा बच्चों को समझाने में ही गया। इससे प्रार्थना सभा के लिये जो वातावरण चाहिये था वह नहीं रहा। विनोबाजी ५-१० मिनिट ही बोले। शहरों के बच्चो में मामूली सभ्यता भी दिखाई नहीं देती इसके लिये शालाओं के संचालकों को भी उन्होंने दोष दिया। संस्कारिता की दृष्टि से देहात और शहर का भेद साफ नजर आता था।

पाढरकवडा में गंगाबिसनजी, राधाकृष्णजी, अनसूया, शांताबाई रानीवाला और ईश्वरभाई एका आ मिले थे। यवतमाल के डॉक्टर मोरे भी आये। दिल्ली से हिंदुस्तान टाइम्स के संवाददाता श्री कल्हण भी आ पहुंचे। वे दस दिन साथ रह कर निर्मल से वापिस गये। गंगाबिसनजी, राधाकृष्णजी और अनसूया आदिलाबाद तक साथ रहें। शांताबाई रानीवाला मांडवी तक साथ रहीं और वहां से डॉ० मोरे के साथ वापिस वर्धा आ गई। ईश्वरभाई हैद्राबाद तक साथ रहे।

विनोबाजी तीन बातों पर खास ध्यान देते हैं सुबह पांच बजे कूच करना, रात को नौ बजे सो जाना और दोपहर में ११ बजे भोजन करना। ये तीन बातें नियमित रहें तो बाकी का कार्यक्रम अपने आप नियमित बनता है ऐसा वे कहते रहते हैं। सुबह ५ बजे कूच करने का तो बिलकुल नियमित चलता रहा है। रात को नौ बजे सोने की बात ५-७ रोज के बाद होने लगी। रात को गाड़ी मे सारा सामान भर कर तैयार रखना पड़ता था। सुबह सिर्फ बिस्तरे बांध कर गाड़ी में रखना शेष रहता था। दोपहर का खाना ११ और १२ के बीच अकसर हो जाता था।

अब यात्रा का सारा कार्यक्रम घड़ी के मुआफिक व्यवस्थित बन गया। सुबह, पांच से दस तक मुसाफिरी का समय रखा था जिसमें नाश्ते आदि के लिये एक डेढ़ घंटा रखा था। लेकिन अब मुकाम पर पहुंच कर ही नाश्ता करने का रखा जिससे एक रफ्तार में ही धूप के पहले आठ साढ़े आठ बजे के अन्दर मंजिल

तय हो जाती है। शाम की प्रार्थना सभा का निश्चित समय नहीं है। छः बजे प्रार्थना हो ऐसी विनोबाजी की इच्छा रही। कुछ रोज वैसा चला भी। लेकिन आदिलाबाद के बाद देखा गया कि आस-पास के देहात से काफी भाई-बहनें सभा और दर्शन के लिये आ जाती हैं। उनको अपने गाँव जल्दी वापिस जाने की सुविधा हो इस दृष्टि से विनोबाजी चार बजे या कभी कभी तीन बजे भी सभा कर लेते हैं।

आदिलाबाद जिले में और खास करके निर्मल तहसील में गगारेड्डी नाम के कार्यकर्ता ने देहातों में घूम कर काफी प्रचार किया दिखाई दिया। हर गाँव के प्रवेशद्वार पर बहनें आरतियाँ लेकर हाजिर रहती थीं और देहाती बाजे भी रहते थे। निर्मल तहसील के देहातों में चरखे काफी चलते हैं। निरडगोंडी में पहली बार पचीस-तीस चरखे सिर पर ले कर बहनें सूत कातने के लिये विनोबाजी के डेरे पर पहुँच गई।

गोपालपेठ में तो हद हो गई। सारा गाँव पानी छिड़क कर साफ किया गया था। रांगोली भी आंगन में खींची गई थी। सड़क की दोनों बाजू आम के पत्तों की पताकाएं लगी थीं। आरतियाँ और बाजे तो थे ही। विनोबाजी की ठहरने की जगह बहुत ही कलामय और मार्मिक थी। इमली के पेड़ के नीचे बड़ और मोह के वृक्षों की डालियों का भव्य मंडप तैयार किया था। कहीं कील या रस्सी का नाम नहीं था। पाखाना, नहाने की जगह, रसोई घर

और विश्राम घर सभी पल्लवों के बने थे। ग्यारह बजे पास के चिचोली गाँव से पचास बहनें सिर पर चरखे ले कर गाने बजाने के साथ आ पहुँचीं। गोपालपेठ के पचास-साठ चरखे थे ही। कुल सौ से ऊपर चरखे जमा हो गये। और सारी बहनें कातने लगीं। इतने चरखे थे लेकिन एक चरखे की भी कर्णकटु आवाज नहीं आती थी। टूटन का तो नाम ही नहीं था। चरखे खडे थे और लकडी की धुरा के थे, सिर्फ तकुआ लोहे का था। चमरख मकई के भुट्टों के पत्तो का और तकुवे की घिर्री अरहर के सूखे पेड की। प्रार्थना सभा के बाद सारी बहनो ने अपना कता सूत विनोबाजी को अर्पण किया। करीब साठ गुडिया थीं। वह सूत वहीं चिचोली गाव में बुनने के लिए दे दिया। हैद्राबाद समेलन मे कपडा तैयार होकर आ जायगा।

ता० २३ को गोदावरी के तट पर पहुच गये। गोदावरी के किनारे सुवर्णपुर—जिसे आज सोन कहते हैं—गाव क्षेत्र माना जाता है। सुवर्ण नदी व गोदावरी का यहा सगम है।

इस के बाद 'गोदावर्या दक्षिणे तीरे" हो कर निजामाबाद जिले में प्रवेश किया।

सोन (सुवर्णपुर) में विनोबाजी ने एक घटे की पाठशाला चलाने की बात कही थी। उसके अनुसार दो ब्राह्मण पडितों ने जिम्मा लिया। अब पता चला है कि ८ लडकियां और १३ लडके सुबह एक घटा और शामको एक घटा बडे उत्साह से पढने के लिये

आते हैं। और वे पंडित बारी बारी से उनको पढ़ाते हैं। ईशोपनिषद के मराठी श्लोक "दैनिक प्रार्थना" पुस्तिका में से बच्चे कंठ कर लेते हैं।

सोन के आगे निम्न प्रकार प्रवास हुआ।

यात्रा का दिन	तारीख	मुकाम का गाँव	जिला	कितने मील चले
(१७)	२४	बालकोंडा	निजामाबाद	११
(१८)	२५	आरमूर	"	१०
(१९)	२६	निजामाबाद	"	१७
(२०)	२७	डिचपल्ली	"	१०
२१)	२८	कलवरल	"	११
(२२)	२९	कामारेड्डी	"	११

निजामाबाद और आरमूर में सायंप्रार्थना के बाद स्थानीय कार्यकर्ताओं के साथ चर्चा का अच्छा कार्यक्रम हुआ।

बालकोंडा में मेटपल्ली के चरखा संघ के आठ-दस कार्यकर्ता पैदल आ कर विनोबाजी से मिले। आरमूर तक वे विनोबाजी के साथ रहे। और वहां से २२ मील फिर पैदल चल कर वापिस गये।

हैद्राबाद स्टेट के चंद बड़े शहरों में निजामाबाद एक बड़ा शहर है। यहां तेलुगु में प्रवचनों का अनुवाद नहीं करना पड़ा

और श्रोतागण भी मध्यम श्रेणी के थे। इसलिए विनोबाजी का यह प्रवचन काफी विस्तार से हुआ।

कामारेड्डी से हैद्राबाद केवल ७२ मील है।

इस तरफ के देहातों में खास बात यह देखी गई कि सभा में करीब आधी संख्या स्त्रियों की होती है। और सब भाषण बड़ी शांति से सुनती हैं।

विनोबाजी का साहित्य हिंदी-मराठी में अच्छी मात्रा में बिकता गया। इस बिक्री की खास बात यह है कि केवल किसी विक्रेता या प्रचारक के पास पुस्तकें नहीं जातीं बल्कि हरेक पढ़नेवाले के पास वे पहुँच जाती हैं।

पाठकों से सीधा संपर्क स्थापित होता है इस दृष्टि से यह बिक्री विशेष महत्त्व रखती है। हर गांव में कितनी और कौनसी किताबें दी गईं इसकी तालिका रखी गई है।

कामारेड्डी पहुंचने के एक रोज पहले कल्वरल में रात को काफी बारिश और आंधी आयी। विनोबाजी का बिस्तरा कुछ भीग गया। कामारेड्डी पहुंचने तक खास असर दिखाई नहीं दिया। लेकिन बाद में सर्दी और हलका बुखार हो गया।

कामारेड्डी से अगला मुकाम १७ मील का था। लेकिन विनोबाजी की तबीयत देखते हुए दस मील पर मुकाम करने का

सब लोगों ने उनसे काफी आग्रह किया। विनोबाजी अपने निश्चित कार्यक्रम पर अटल रहे और बोले "जो अपना वचन पालन करता है उसको भगवान बल देता है।" आखिर उस रोज १७ मील की सफर पूरी करके ही रहे।

रामायम पेठ पहुंचने पर साथियोंने अगले कार्यक्रम में कुछ हेर फेर किये। बारह मील के बदले आठ आठ मील के फासले पर मुकाम कर लिये। बदला हुआ कार्यक्रम निम्न प्रकार रहा।

यात्रा का दिन	तारीख	मुकाम का गांव	जिला	कितने मील चले
(२४)	३१	वडियारम	मेदक	९
(२५)	१	तूपरान	,,	८
(२६)	२	कोचारम	,,	८
(२७)	३	मेडचल	हैद्राबाद	८
(२८)	४	बोलारम	,,	७
(२९)	५	सिकंदराबाद	हैद्राबाद	७
(३०)	६	हैद्राबाद	,,	५
(३१)	७	शिवरामपल्ली	,,	५

कामारेड्डी से रामायम पेठ के रास्ते पर बिकनूर नाम के गांव में नाश्ते के लिये ठहरे। उस गांव में नारायण रेड्डी नाम के अच्छे कार्यकर्ता हैं। वे कलवरल से विनोबाजी के साथ रहे। उनके

घर पर विनोबाजी ३० तारीख को ठहरें ऐसी उनकी इच्छा थी। लेकिन नियत कार्यक्रम में फरक करना विनोबाजी को पसद नहीं है।। गांव वालों को चंद शब्द कह कर विनोबाजी रामायम पेठ के लिये चल पडे।

वडियारम मे क्रिस्ती लोगों द्वारा चलाई हुई एक पाठशाला में विनोबाजी का मुकाम था। यहा की जगह अच्छी है। तेलगु में वहां के पादरी ने गद्य प्रार्थना कही। अपने भाषण में सब धर्मों के रहस्य के विषय पर विनोबाजी बोले। आज बुधवार के कारण प्रार्थना साथियों ने चलाई।

तूपरान कुछ बडा गाव है। यहा दोपहर में कार्यकर्ताओं की एक सभा हुई। गाव में भजन मंडली है और हर शुक्रवार को वे भजन करते हैं। यह सुनकर विनोबाजी को खुशी हुई। गाव की समिति रहे तो भजन के साथ उस समिति का काम अच्छा चलेगा यह बात गांव वालों को विनोबाजी ने समझायी।

तूपरान से कोचारम नाम के एक छोटे गांव में मुकाम रहा। हरेक घर आम की पत्तियों से सजाया गया था। घर के सामने पानी छिड़का हुआ था और रागोली भी थी। गांव काफी साफ था। गोपालपेठ की याद हो रही थी। गाव की रचना भी अच्छी है। घरों की कतारें हैं, सडकें हैं और ड्रेनेज भी है। हरिजन मोहल्ले में सभा रखी गयी थी। आज भी विनोबाजी को बुधवार अधिक था। सभा स्थान कुछ दूर था फिर भी वे चलते हुए

वहां आये और खुद ही प्रार्थना चलाई और रोज की तरह भाषण भी दिया।

कोचारम में सुबह हैद्राबाद से जमियत उल उलेमा के अध्यक्ष तथा सेक्रेटरी विनोबाजी से मिलने आये थे। हैद्राबाद राज्य की आज की हालत और खास करके उस्मानाबाद जिले की हालत के बारेमें उन्होंने विनोबाजी को कुछ बातें बताई।

३ तारीख को मेडचल का मुकाम था। यहां पर हैद्राबाद राज्य के पुराने कर्मचारी मंजूर यार जंग विनोबाजी से मिलने आये थे। उनकी तबीयत ठीक नहीं थी। फिर भी वे आये और बहुत ही सरलता से और सच्चे दिल से हिंदू मुसलमान के प्रश्न पर अपने विचार उन्होंने प्रकट किये।

यहां भी दोपहर में कुछ कार्यकर्ता आये थे। उनके साथ एक एक घंटा वार्तालाप हुआ।

हैद्राबाद से शहर काँग्रेस कमिटी के मंत्री, ग्यान कुमारी हेडा और अन्य कार्यकर्ता मेडचल आये थे। पवनार के बाबूरावजी देशमुख अपने कुटुंब के साथ हैद्राबाद से यहां आये। वे शिवरामपल्ली तक विनोबाजी के साथ पैदल चलेंगे।

आज से विनोबाजी की तबीयत में आराम हुआ। बुखार चला गया दीखता है।

४ ता० को बोलारम पहुंचे । यहां पर बिहार के श्री. पारसनाथ नाम के व्यक्ति प्राकृतिक चिकित्सालय चला रहे हैं । उनके आग्रह के कारण ही यहां का मुकाम हुआ ।

यहां की कार्यकर्ताओं की सभा बहुत ही अच्छी रही । ऐसी सभाओं में विनोबाजी अनेक विषयों पर अपने विचार कुछ खुलकर लोगों के सामने रखते हैं, जिससे दिलचस्प वार्तालाप होता है ।

यहां से हैद्राबाद की हद ही लग गई । फासला यद्यपि १०-११ मील का है फिर भी शहर का वातावरण यहीं से शुरू हो जाता है ।

सिकंदराबाद पहुंचने के पहले तिरमलगिरी में कुछ लोगोंने स्वागत किया । यहां से थोड़ी दूर पर खानापूर नाम का उजड़ा हुआ गांव बताने के लिये जमियत के कुछ कार्यकर्ता आये थे । वहां से सब मुसलमान भागकर दूसरी जगह चले गये हैं । मकानों की टूट फूट काफी दिखाई दी ।

सिकंदराबाद से ता. ६ को सुबह विनोबाजी हैद्राबाद के लिये रवाना हुए । सिकंदराबाद से हमने अपनी बैलगाड़ी और बहुत सारा सामान सीधे शिवरामपल्ली भेज दिया । हैद्राबाद के हायकोर्ट के सामने एक बगीचे में विनोबाजी का मुकाम रहा । पड़ोस में मूसा नदी बहती है और बगल में सरकारी अस्पताल की खासी इमारत खड़ी है ।

हैद्राबाद शहर में दो तीन जगह लोगों ने स्वागत किया। हरिजन छात्रालय में चार पांच मिनट विनोबा जी ठहरे। बाकी का स्वागत चलते चलते ही हो रहा था।

हैद्राबाद में दोपहर को ४ से ५ बजे तक कार्यकर्ताओं की सभा रखी थी। सोशलिस्ट आदि कई पक्षों के कार्यकर्ता भी उपस्थित थे। अनेक विषयों पर प्रश्नोत्तरी हुई जो काफी दिलचस्प और बोधप्रद रही।

प्रार्थना सभा के बाद प्रेस प्रतिनिधियों से करीब आधा घंटा बातचीत रखी गई थी। स्वामी रामानंद तीर्थ विनोबाजी से मिलने आये थे।

ता० ७ को सुबह सवा छः बजे विनोबाजी शिवरामपल्ली पहुंच गये। इस तरह ठीक एक महीने में वर्धा से शिवरामपल्ली तक की मंजिल विनोबाजी ने पूरी की। इस पैदल यात्रा में चार पाच रोज विनोबाजी को बुखार आया। बाकी सारी मुसाफिरी बहुत ही आराम से और स्वस्थता से हुई। विनोबाजी साथियों से कहते थे कि 'खासा बादशाही प्रवास चल रहा है।'

इस पैदल यात्रा में जो कुछ सृष्टि दर्शन और लोक-दर्शन हुआ उसके बारे में विनोबाजी के प्रवचनों में बीच बीच में जिक्र आया ही है।

शिवरामपल्ली में ११ तारीख तक विनोबाजी ठहरेंगे। उसके बाद का कार्यक्रम अभी तय नहीं हुआ है। लेकिन वर्धा ७ जून

तक पहुंचना है और पैदल चलते हुए ही जाना है इतनी बात तय है। कुछ रोज आराम करके आगे का प्रवास शुरू किया जाय ऐसा मित्रों का आग्रह है। लेकिन विनोबाजी हैद्राबाद राज्य के उन जिलों में से हो कर जाना चाहते हैं जहां कम्युनिस्टों का जोर अधिक है। वह रास्ता कुछ दूर का है। इसलिये जल्दी निकलने की विनोबाजी की इच्छा है। १२ तारीख तक निकलने की तिथि तथा यात्रा का रास्ता आदि बातो का निर्णय हो जायगा।

—दत्तोबा दास्ताने